

यदि आप अभी तक इस सिरीज के ग्राहक नहीं बने हैं, तो ग्राहक बनने में शीघ्रता कीजिए; या पुस्तक के पृष्ठभाग पर दी हुई सूची में से अपनी पसंद की पुस्तक चुनकर अपने स्थानीय पुस्तक-एजेंट से लीजिए।

टोपी सिर से खिसककर नीचे आ रही । ब्रास के सभी लड़कों की खिल-खिलाहट में उसका अनुचारित नाम उछलने लगा ।

वातावरण शान्त होने पर उसका नाम स्पष्ट होकर सामने आया—
चार्ल्स वॉवेरी ।

वात आर्ड-गई हो गई । ब्रास का काम फिर क्रायदे से चलने लगा । लेकिन वॉवेरी के दिल में जैसे एक खटका बैठ गया था । हर चीज़ को जैसे अपने में समेटकर वह रखना चाहता था । कुछ भी इधर उधर होने से जैसे उसकी सारी पूँजी बिखरकर रह जायगी ।

उसके पिता पौज में डाक्टर थे । कुछ भगड़ों की वजह से उन्हें अपनी नौकरी से अलग हो जाना पड़ा । बदन उनका गठा हुआ था, देखने में सुन्दर । नौकरी से हो अब तक प्रेम करते रहे थे । नौकरी छोड़ने के बाद उन्हें मालूम हुआ, उनका गठा हुआ बदन और सुन्दर चेहरा काफी मूल्य रखता है । इसी के सहारे पत्नी के साथ-साथ दहेज़ में भारी रकम भी उनके हाथ लगी ।

विवाह के बाद तीन-चार साल खूब रास-रंग में बीते । दहेज़ की रकम की बदौलत हर रात दीवाली बनकर आती थी । दहेज़ में सब कुछ देकर समुर साहब पहले ही ग्वाली हो चुके थे । दीवाली की चमचमाती रातें अन्धकार में बदल चली । एक व्यवसाय में हाथ डाला, लेकिन भाग्य ने साथ न दिया । लक्ष्मी के अभाव में दीन-दुनिया को नामते, भुक्कलाहट और ईर्ष्या से भरा हृदय लिये. नगर के बान्स, एक-आधे देहाती और आधे शहरी, सन्ने-मे ममान में रहने लगे ।

पत्नी का उल्लास भी अब तोखा हो चला था । गुरू-गुरू की गरी रंगीनी गायब हो गई थी । स्वभाव में चिढ़-चिढ़ापन आ गया था ।

1. The first part of the document is a list of names and addresses of the members of the committee.

2.

3.

4.

5.

6.

7.

8.

टोपी सिर से खिसककर नीचे आ रही । ब्रास के सभी लड़कों की खिल-खिलाहट में उसका अनुचारित नाम उछलने लगा ।

वातावरण शान्त होने पर उसका नाम स्पष्ट होकर सामने आया—
चार्ल्स वॉवेरी ।

वात आर्ड-गई हो गई । ब्रास का काम फिर क्रायदे से चलने लगा । लेकिन वॉवेरी के दिल में जैसे एक खटका बैठ गया था । हर चीज़ को जैसे अपने में समेटकर वह रखना चाहता था । कुछ भी इधर उधर होने से जैसे उसकी सारी पूँजी बिखरकर रह जायगी ।

उसके पिता पौज में डाक्टर थे । कुछ भगड़ों की वजह से उन्हें अपनी नौकरी से अलग हो जाना पड़ा । बदन उनका गठा हुआ था, देखने में सुन्दर । नौकरी से हो अब तक प्रेम करते रहे थे । नौकरी छोड़ने के बाद उन्हें मालूम हुआ, उनका गठा हुआ बदन और सुन्दर चेहरा काफी मूल्य रखता है । इसी के सहारे पत्नी के साथ-साथ दहेज़ में भारी रकम भी उनके हाथ लगी ।

विवाह के बाद तीन-चार साल खूब रास-रग में बीते । दहेज़ की रकम की बदौलत हर रात दीवाली बनकर आती थी । दहेज़ में सब कुछ देकर समुर साहब पहले ही ग्वाली हो चुके थे । दीवाली की चमचमाती रातें अन्धकार में बदल चली । एक व्यवसाय में हाथ डाला, लेकिन भाग्य ने साथ न दिया । लक्ष्मी के अभाव में दीन-दुनिया को नामते, भुक्कलाहट और ईर्ष्या से भरा हृदय लिये. नगर के बान्तर, एक-आधे देहाती और आधे शहरी, सन्ने-मे ममान में रहने लगे ।

पत्नी का उल्लास भी अब तोखा हो चला था । गुरू-गुरू की गरी रंगीनी गायब हो गई थी । स्वभाव में चिढ़-चिढ़ापन आ गया था ।

था। अपने जीवन के मनेपन को भग्ने के लिए उसने बहुत सी चीजें इकट्ठी की थीं। उसकी इस दुनिया में कमरे की ये चीजें थीं। इनमें उकताकर पिता के पास जाती थी, पिता में छुट्टी मिलने पर फिर यहीं आ जाती थी। डाक्टर ने इन चीजों को देखा। मन्मा उसकी नजर एम्मा के शरीर पर टिक गई। उसे बदन में फुरफुरी लगती हो। कपकपीसी चढ़ती और वह अपने थोड़े काटने लगती। ग्राँवा की तरह थोड़ा भी सामने उभर आये। डाक्टर ने देखा, उनमें रस की कमी नहीं है।

हलकी सी चाट का कितनी चढ़ा आराम होना चाहिए था, उतनी त्दी नहीं हो सका। टूटी टाँग के मन्मा डाक्टर गोज-गज यहाँ आने-जाने लगे। पूरे छयालीस दिन तक पाइसी पैदा और खुलती रही—यह अपना काम करत रह और आखि अपना। डाक्टर अब उसे घर के ही आदमी हो गये थे। टूटी टाँग के अच्छे होने का खबर के साथ-साथ उनकी ख्याति भी फैल चली। पहले वह मरीजा की तलाश में रहते थे, अब मरीज उनकी तलाश में रहने लगे। एम्मा के हाथ के स्पर्श ने फलता की पहली सीढ़ी पर उन्हें ला खड़ा किया था। कदम पहला ही था, कितने दिनों तक पहला ही वह रहा। यहाँ तक आकर एम्मा रुक जाती, डाक्टर में बिदा ले अपनी दुनिया में लौट जाती।

डाक्टर की पत्नी इस पहले कदम को नहीं पसन्द पाई थी। टूटी टाँग की उनके सामने थी। जब-तब वह डाक्टर से पूछती रहती थी—अब टाँग का क्या हाल है? कब तक अच्छी होगी? रोटी खाना वह भूल जाती थी, टूटी टाँग के बारे में पूछना नहीं। उलझन बढ़ चली उस समय टूटी टाँग के साथ, जब उसे एम्मा का हाल मान्य हो गया। मियाँ मेलने ही वह आगे बढ़ी। डाक्टर का गन्ता छेड़कर कहने लगी—

साँचे में ढालना चाहती थी, पिता अपने में। इसी खींचतान में चार्ल्स बॉवेरी बड़ा हो रहा था।

लडके ने बारहवें वर्ष में पाँच रक्खा, तेरहवाँ भी बीत गया, चौदहवें के भी छह महीने गुजर गये। उसके पढ़ने-लिखने का कोई ठीक प्रबन्ध न हो सका। खींचतान कर मा ने एकाध पादरी को उसे पढ़ाने के लिए नियुक्त किया, लेकिन पढ़ाई कुछ चल न सकी। पादरी साहब का सारा समय मृतकों के लिए मुक्ति के पथ को आलोकित करने में ही बीतता था। इससे छुट्टी मिलने पर वे चार्ल्स को अपने साथ लेते। पहले से थके दिमाग को उसकी किताबों के अक्षरों से न उलझाकर इधर-उधर की बातों में ही समय काट देते।

पति की तरह लडके का आचारा होना मा नहीं देख सकती थी। आचारगी से बचाने के लिए चौदह साल तक उसे अपनी गोद से उभरने न दिया। चाहने पर भी अब उसे अपने आँगन का खिलौना बनाये ही नहीं रख सकती थी। उधर पति महोदय अलग लडके को अपने ही रंग में रँगना चाहते थे। आखिर मा की फिर विजय हुई—पिता के पक्ष से छुड़ाकर लडका मास्टर साहब की मास्टरी को सौंप दिया गया।

चक्की के दो पाटों के बीच उसका जीवन बीता था। मा को भी साथ लेकर चला था और पिता को भी। दोनों के बीच रह कर उसका विकास हुआ था। स्कूल में भी उसने अपना यही स्थान बनाये रक्खा—न बहुत नीचे, न बहुत ऊपर। बीच का स्थान ही उसे निगमद मालूम होता था। इधर-उधर के छोरों में अपने को समेटकर चलने की उसे आदत हो गई। उसकी सारी मत्कर्ना, मारी केशियें और मारी पढ़ाई इसी मध्यबिन्दु पर केन्द्रीभूत रह गईं।

जीवन में वह अभ्यस्त हो गया। रस भी इसमें आने लगा। जब चाहता खाता, जब जी में आता माता, न किसी को जवाब देना पड़ता, न किसी को सफाई। मरीजों के बाद वह केवल अपने को ही देखता था। अपने में उसे माह भी हो चला, आईने में अपने चेहरे पर खुद ही मुग्ध होकर रह जाता था। इसका बाद निकलता था बाहर, दूसरों को मुग्ध करने के लिए।

एम्मा की सारी आँखें ओर भर हुए ओठ सदा उसके साथ रहते थे। चिन्तरे पर पड़कर घट्टा एम्मा के बारे में सोचा करता। रीते गिलास का खेल उसकी आँखों के सामने नाचा करता। उससे विवाह करने की बात भी जब तब हृदय में उठती थी। कल्पना में सब कुछ हो भी जाता था। लेकिन पूरा इरादा कर लेने पर भी जब उसके सामने पहुँचता, मुँह से एक शब्द न निकलता। अपने को व्यक्त करनेवाले ठीक शब्दों का वह पकड़ नही पाता था। सूखे गले में शब्द जैसे अटककर रह जाते थे। तभी वह कहता—‘शरबत पियोगे?’

विवाह प्रसंग रीते गिलासों के खेल में उलझकर स्थगित हो जाता। राज बत इरादा करता, इरादा करके रह जाता। पहला कदम अभी तक पहला ही कदम बना हुआ था।

पत्नी के मरने के बाद एम्मा के पिता को जीवन सूना दिखाई देता था। जेन-जेन समय बीतता गया, इस सूनेपन को ही वे अपनाते गये। उम्मान उनका नाम थी लेकिन वह भी सूनी ही थी। सोना उगलना वह भूल गई थी। न खून इतना ही, बल्कि एम्मा के पिता के हाँसे को भी उसने मिट्टी में मिला दिया था। बच्चेर भूमि के वे चौधरी थे। वे थे और बच्चेर दुनिया। एम्मा भी उनके सूनेपन को भर नहीं पाती थी।

1

2

3

4

5

6

7

8

पुत्र, मिली कन्या । जब कभी वह सामने आती, वे छोटे बनकर जाते । पिता की उपेक्षा से टकराकर मा की गोद का सहारा वह लेती थी । मा के मरने पर उसका वह सहारा भी जाता रहा । सूने घर में चहारदीवारी में मँडराकर वह रह जाती थी । दो हाथ की दूरी पर रहकर ही पिता का जीवित स्पर्श उसे मिलता था । और निकट पहुँच पाती थी उस समय, जब कभी वे बीमार पड़ते थे । खुद के बीमार होने पर भी उनके ससर्ग-स्पर्श की सम्भावना निकट आ जाती थी । पहली बार इसका अनुभव उसे हुआ था मा के मरने पर । पछाड़ खाकर वह गिर पड़ी थी । कुछ देर बाद होश आने पर उसने देखा—पिता की गोद में उसका सिर टिका है, व्यथित नेत्रों से वे उसकी ओर देख रहे हैं । उनकी इस मूर्ति को अपनी पुतालियों में समाकर उसने आँखें बन्द कर ली, उसी तरह उनकी गोद में पड़ी रही—यदि उसी समय, उसी अवस्था में, उसकी मृत्यु हो जाती... ।

लेकिन उसे जीना था, घर के सूने आँगन में बैठकर, जीने के सपने देखने थे, कल्पना के सहारे दूर-दूर के देशों की सैर करनी थी, समुद्र की लहरों से खेलना था । पिता के जीवन के शून्य को तो वह नहीं भर सकी, पर अपने शून्य को कल्पित राजकुमारों से अवश्य भर लिया । पिता की टाँग टूटने पर कल्पना कुछ यथार्थ हो चली । उन्हीं राजकुमारों में से एक, जैमे चार्ल्स बाँवेरी का रूप धर, उसके सामने आ गया था । उसे पाकर उसके हृदय में कुछ कुड़कुड़ हुई, उसने ही उसने जीवन समझा । राजकुमारों की वस्ती में प्रवेश करने के लिए चार्ल्स के माय हो ली । चार्ल्स के घर आकर देगा—

वेघात नौकर को धमकाना शुरू करती। नौकर चुपचाप सुना करता। फिर एकाएक उसे इनाम दे डालती। कभी मौन साधती तो ऐसा कि मुँह में एक शब्द भी न निकल सके। बोलना शुरू करती तो इस तरह कि सब दग रह जाते। जो जी में आया, कह दिया। किसी को अच्छा लगे, या बुरा। फिर, एकाएक तर्किए में मुँह छिपा, सुबक-सुबककर रोना शुरू करती।

उसकी क्षीण आशा अन्धकार में अस्पष्ट होकर रह गई थी। उसे विश्वास नहीं होता था कि वह कभी प्रकाश का मुँह देख सकेगी। बस यही पर नहीं हुई। उसकी असहाय्यवस्था और भी स्पष्ट रूप में उसके सामने आ उपस्थित हुई—वह मा बनने जा रही थी।

(५)

उन्मुक्त और प्रकाशयुक्त वातावरण में एम्मा पहुँच गई, लेकिन उस समय, जब कि उसका चेहरा पीला पड़ गया था और शरीर पतला। अपने बोझिल जीवन के साथ-साथ एक और जीव का बोझ उसकी अधकचरी कल्पनाओं को भुकाये दे रहा था। जी मचलता था, चक्कर आते थे, पेट में जलन होती थी। जब-तब उसकी चेतना अन्धकार प्रकाश को पहचान नहीं पाती थी। चार्ल्स ने दवाइयाँ दी, मगर कोई लाभ न हुआ। एम्मा बराबर गिरती जा रही थी। आखिर तय हुआ—वायु परिवर्तन के लिए किसी स्वस्थप्रद स्थान पर चलकर रहा जाय। एम्मा उन्मुक्त वातावरण में, प्रकाश और हवा की गोद में, पहुँच गई।

मा के मरने पर वह पछाड़ खाकर गिर पड़ी थी। पिता की उपेक्षाहीन सहृदयता और स्नेह का स्पर्श उसे मिला। इसकी पुनरावृत्ति

था। अपने जीवन के मनेपन को भग्ने के लिए उसने बहुत सी चीजें इकट्ठी की थीं। उसकी इस दुनिया में कमरे की ये चीजें थीं। इनमें उकताकर पिता के पास जाती थी, पिता में छुड़ी मिलने पर फिर यहीं आ जाती थी। डाक्टर ने इन चीजों को देखा। मन्मा उसकी नजर एम्मा के शरीर पर टिक गई। उसे बदन में फुरफुरी लगती हो। कपकपीसी चढ़ती और वह अपने थोड़े काटने लगती। ग्राँवा की तरह थोड़ा भी सामने उभर आये। डाक्टर ने देखा, उनमें रस की कमी नहीं है।

हलकी सी चाट का चितनी चन्दा आराम होना चाहिए था, उतनी त्दी नहीं हो सता। टूटी टाँग के महार डाक्टर गोज-गोज यहाँ आने-जाने लगे। पूरे छयालीस दिन तक पाइसी रेंगता और खुलती रही—यह अपना काम करत रह और आखि अपना। डाक्टर अब जमे घर के ही आदमी हो गये थे। टूटी टाँग के अच्छे होने का खबर के साथ-साथ उनकी ख्याति भी फैल चली। पहले वह मरीजा की तलाश में रहते थे, अब मरीज उनकी तलाश में रहने लग। एम्मा के हाथ के स्पर्श ने फलता की पहली सीढ़ी पर उन्हें ला खड़ा किया था। कदम पहला ही था, कितने दिनों तक पहला ही वह रहा। यहाँ तक आकर एम्मा रुक जाती, डाक्टर में विदा ले अपनी दुनिया में लौट जाती।

डाक्टर की पत्नी इस पहले कदम को नहीं पसन्द पाई थी। टूटी टाँग की उनके सामने थी। जब-तब वह डाक्टर से पूछती रहती थी—अब टाँग का क्या हाल है? कब तक अच्छी होगी? रोटी खाना वह भूल जाती थी, टूटी टाँग के बारे में पूछना नहीं। उलझन बढ़ चली उस समय टूटी टाँग के साथ, जब उसे एम्मा का हाल मान्य हो गया। मियाँ मेलने ही वह आगे बढ़ी। डाक्टर का गन्ता छेड़कर कहने लगी—

नाम के द्वारा अपनी मा की स्मृति को अमर करना चाहता था। एन उमरा विगोच करती थी। नामों का शौक उसे था, साधारण तरफ़ों के अनाधारण नाम उसने एक दिन रखे थे, लेकिन उसकी लड़की नाम को लेकर जो मकड़ी का जाला बुना जा रहा था, वह उसे ब्रन् नहीं लगना था। नाम वह चाहती थी, मक्के उत्साह में उत्साहित होकर, उसकी यह चाह आगे भी बढ़ी थी, लेकिन वह ऐसा नाम चाहती थी जो इस मकड़ी के जाले को तोड़ दे या जिसके सामने यह जाला टिक सके। इस जालाल में ऊपर उठ न्वतत्र रहने की जिसमें मामर्थ हो। एक एक, एक दिन सोचते-मोचते, उसे याद आया—वर्या। कहीं, कि जगह और किसके मुँह से उसने यह नाम सुना था, ठीक याद नहीं पड़ा। नाम जितने अप्रत्याशित रूप में उसके सामने आया था, उतना ही उसे बड़ा मालूम होता था। जितना ही सोचती थी उतना ही इस नाम पर आश्चर्य होता था। इससे अधिक उपयुक्त नाम और न होगा।

लड़की दाई के पास थी, उसका नाम एम्मा के पास। नाम के मोहक आकर्षण ने लड़की को याद को उभार दिया। इस उभार को अनिच्छापूर्वक एकाध बार उसने टालना चाहा, लेकिन सफल न हो सकी। न किन्ती से कुछ कहा, न सुना, न अपने गिरे हुए शरीर की ओर ही देखा। लड़की को देखने के लिए चल दी। कच्ची-पक्की देहाती बर्नी के दूसरे छोर पर दाई रहती थी।

दोपहर का समय था। धूप भी तेज थी और हवा भी। दोनों का मामना करती एम्मा घर में निकली। कुछ ही दूर आगे बड़ी थी नि सर्गात-प्रेमी युवक मिल गया। बगल में कागज़ों का एक पुन्निन्दा दबाये था। मुन्कराइट से एम्मा का उसने अभिवादन किया। साथ भी

खून भी गिरा और इसने पहले कि एम्मा उसके पति की ओर दूता कदम आगे बढ़ाये, सदा के लिए उमने अपनी आँखें बन्द कर ली।

(३)

डाक्टर बनने के बाद पति बनने की शिक्षा चार्ल्स बॉवरी को मिल रही थी। पति तो वह नहीं बन सका, बन गया प्रेमी। इस दिशा में भी वह अभी तक एक ही कदम आगे बढ़ा था। एम्मा घर से बाहर आती थी, लेकिन दरवाजे पर ही ठिठककर रह जाती थी। पत्नी के मरने के बाद चार्ल्स ने कुछ हलकेपन का अनुभव किया, लेकिन साथ ही उसे ऐसा भी मालूम हुआ, मानो उसके सिर का साया हट गया है। पत्नी उसे बीच में ही छोड़कर चली गई—न वह पति ही रह गया था, न प्रेमी ही। मा की गोद में फिर से छोटा बनकर मुँह छिपाने लायक भी अब वह नहीं था।

पत्नी के मरने के बाद वह एम्मा के घर गया। एम्मा से अधिक उसके पिता की महानुभूति उसे मिली। चार्ल्स के इस दुःख से उन्हें अपनी पत्नी को याद हो आई। चार्ल्स की कमर पर मान्यता का हाथ फेरते हुए वे कहने लगे—‘मेरे लिए यह नई बात नहीं। मैं भी इसे भुगत चुका हूँ। पत्नी के मरने के बाद मुझने घर में बैठा नहीं जाना था। बड़ी बुरी हालत थी। जब किसी नवदम्पति को जाने देवता तो हृदय पगल हो उठता था। जो कुछ सामने आता, तोड़-फोड़ डालने को जी चाहता। मिट्टी के टेलों पर अनायास छुड़ो का प्रहार करता चलता था। गिने-अर्वागिने फूल हाथ में आते ही चूर हो जाते थे। कितने ही दिनों तक ऐसा ही हाल रहा। फिर धीरे-धीरे सब कुछ मिट चला। मैं अपने

था, आता भी था तो बहुत कम। उसके अछूते सौन्दर्य को, अचूत आभा को, अछूता ही रखने में वह विशेष सतर्कता से काम लेता था। एम्मा का स्पर्श वह नहीं करता था, उसके स्पर्श पाई हुई चीजों के हृदय से लगाता था। एम्मा के आने का आभास पाकर वह खिंजा जाता था, चले जाने पर उसके पद-चिह्नों में लोटकर अपने को कृतार्थ करना चाहता था। यहाँ तक कि एम्मा की ध्वनि को वह सुनी-अनसुनी कर डाल दे सकता था, लेकिन चार्ल्स बाँवेरी की नहीं। एम्मा का प्रति होने का सौभाग्य चार्ल्स को प्राप्त हुआ है, इतना ही उसके लिए पर्याप्त था। एम्मा देखती रह जाती थी और वह चार्ल्स के साथ चल देता था।

जाड़े के दिन आ चले थे। वातावरण की गर्मी को शीत ने ढक लिया था। शीत के प्रभाव को दूर करने के लिए एम्मा अँगोठी का सहारा लेती थी। पास रखी अँगोठी में कोयले धधकते रहते, शीत की कल्पना को अपने से दूर रखने में वे सहायता देते। बाये हाथ की हथेली पर ठोड़ी टेके एम्मा खिड़की के पास बैठ जाती। आँखें अपना काम कानों को साँप बन्द हो जाती और एम्मा किसी की पदध्वनि की प्रतीक्षा में बैठी रहती। अस्पष्ट आहट धीरे-धीरे स्पष्ट हो चलती, हृदय भी उसकी गति का साथ देता। आँखें खुलती थी उस समय, जब पदध्वनि स्पष्ट हो उठने के बाद विलीन होने लगती थी—भुटपुटे-में में वह देखती, एक छाया है जो चली जा रही है। झुँझलाकर एका-एक उठती, अपनी दामी को पुकारती—ग्वाना जगदी तैयार करो।

ग्वाना ग्वाने के समय दूकान-मालिक आ जाते थे। साथ में सगीत-नी युवक को लाना न भूलते थे। उसके बिना जैसे वे अचूक रहते

जीवन में वह अभ्यस्त हो गया। रस भी इसमें आने लगा। जब चाहता खाता, जब जी में आता माता, न किसी को जवाब देना पड़ता, न किसी को सफाई। मरीजों के बाद वह केवल अपने को ही देखता था। अपने में उसे माह भी हो चला, आईने में अपने चेहरे पर खुद ही मुग्ध होकर रह जाता था। इसका बाद निकलता था बाहर, दूसरों को मुग्ध करने के लिए।

एम्मा की सारी आँखें ओर भ्रष्ट हुए ओठ सदा उसके साथ रहते थे। बिल्लों पर पड़कर घट्टा एम्मा के बारे में सोचा करता। रीते गिलास का खेल उसकी आँखों के सामने नाचा करता। उससे विवाह करने की बात भी जब तब हृदय में उठती थी। कल्पना में सब कुछ हो भी जाता था। लेकिन पूरा इरादा कर लेने पर भी जब उसके सामने पहुँचता, मुँह से एक शब्द न निकलता। अपने को व्यक्त करनेवाले ठीक शब्दों का वह पकड़ नही पाता था। सूखे गले में शब्द जैसे अटककर रह जाते थे। तभी वह कहता—“शरबत पिओगेँ ?”

विवाह प्रसंग रीते गिलामों के खेल में उलझकर स्थगित हो जाता। राज बल इरादा करता, इरादा करके रह जाता। पहला कदम अभी तक पहला ही कदम बना हुआ था।

पत्नी के मरने के बाद एम्मा के पिता को जीवन सूना दिखाई देता था। जेन-जेन समय बीतता गया, इस सूनेपन को ही वे अपनाते गये। उम्मान उनका नाम थी लेकिन वह भी सूनी ही थी। सोना उगलना वह भूल गई थी। न खून इतना ही, बल्कि एम्मा के पिता के हाँसे को भी उसने मिट्टी में मिला दिया था। बच्चेर भूमि के वे चौधरी थे। वे थे और बच्चेर दुनिया। एम्मा भी उनके सूनेपन को भर नहीं पाती थी।

का हुआ है और किसी का नहीं, यह प्रत्यक्ष करने के लिए एम्मा ने जैसे प्रमाण-पत्र का स्थान ले लिया था।

एम्मा को यह प्रदर्शन अच्छा लगता था। पहली बार उसने अपने अस्तित्व का इतना प्रत्यक्ष अनुभव किया। अपने पति की वही सब कुछ है, उसके सहारे ही पति का अस्तित्व सम्भव हुआ है, यह जानकर उसका सिर ऊँचा उठ जाता था। चार्ल्स के साथ घूमना उसे अच्छा लगता था। जी भारी हो उठता था—घर लौटने पर। अपने चारों ओर वह नजर डालती, मृत पत्नी की याद ताजी हो आती। सुहाग-शय्या को देखकर उसके हृदय में गुदगुदी उठती, लेकिन दूसरे ही क्षण सुहाग-शय्या के सारे फूल मुरझा जाते। मृत पत्नी की कल्पना सामने आ खड़ी होती। वह सोचने लगती—यह सुहाग-शय्या मेरे लिए है। और यदि मेरी मृत्यु हो गई तो ?

एक अस्पष्ट छाया एम्मा को पीछा करती मालूम होती। घर में आते ही उसका जी भारी होने लगता। पुराने चिह्नों को मिटा डालने के लिए उसने घर की काया पलटनी शुरू कर दी। नई सफेदी कराई, खिड़की-दरवाजों के परदे बदले, मेज-कुर्सियों को भी नया बना दिया। बड़ी तत्परता से वह अपने काम में जुट गई। वह काम करती, चार्ल्स सुग्धभाव से देखा करता। घूमने-फिरने की ओर एम्मा की रुचिविशेष को पूरा करने के लिए एक घोड़ा-गाड़ी भी उसने खरीद ली। गाड़ी पुरानी थी, लेकिन एम्मा ने उसे भी नया बनाने में कोई कसर न रक्खी।

एम्मा को पाकर चार्ल्स स्वर्ग में पहुँच गया था। उसकी माली पुतलियों में प्रतिबिम्बित अपनी छाया के साथ खुद भी छाया बन जाना

करके उन्हें देखा । काम की कोई चीज न निकली । बोली—“अभी मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है । होने पर कहूँगी ।”

“अच्छी बात है,” विसाती ने कहा, “आपसे परिचय हो गया, यही बहुत है । उम्मीद है, आप मुझे भूलेंगी नहीं ।”

अपनी चीजों को उसने सँभालना शुरू किया । मुँह से उसके सारे अर्थ भी निकलते जा रहे थे । अपनी चीजों को छोड़ चार्ल्स बॉवरी ने एक मरीज को लेकर वह कह रहा था—“डॉक्टर साहब को यच्छा मरीज मिला है । खाँसी उसे क्या आती है मानो भूकम्प आ जाता है । जब खाँसी नहीं थी, तब खुद भूकम्प बना हुआ था । इतनी शराब पीता था कि हृद नहीं । सभी उससे परेशान थे ।”

परेशानी का हिसाब आगे बढ़ा । वह कह रहा था—“क्या बताना, आजकल का मौसम बड़ा खराब है । हवा ऐसी बिगड़ी है कि.. ”

उसकी बिगड़ी हवा को सुनी-अनसुनी करते हुए एम्मा ने अपनी नौकरानों को पुकारा—चाय लाने को उससे कहा । यथावसर योग्य मेवा पाने के आश्वामन का हिसाब लगाता विसाती चला गया !

चाय पीने के बाद एम्मा और भी स्वस्थ हो गई । वह इतनी मगन थी कि उसे अपने पर आश्चर्य होता था । व्यर्थ ही वह अब तक अपने को कोमलती रही, जब तब इस शरीर को उपेक्षा की दृष्टि से देखती रही ।

आइने के सामने वह पहुँची । काफी देर तक अपने अर्द्ध-प्रयत्न के देख-देगकर मुग्ध होती रही । एकाएक निमी के आने की आहट सुन वह चौंकी । धूमकर देगा—सद्गीति-प्रेमी युवक सामने खड़ा था ।

एम्मा ने उसे देखकर भी नहीं देखा । आइने का व्यवसाय मिटाने के काम में उसने अपने को व्यस्त कर दिया । युवक कुछ देर खड़ा

पुत्र, मिली कन्या । जब कभी वह सामने आती, वे छोटे बनकर जाते । पिता की उपेक्षा से टकराकर मा की गोद का सहारा वह लेती थी । मा के मरने पर उसका वह सहारा भी जाता रहा । सूने घर में चहारदीवारी में मँडराकर वह रह जाती थी । दो हाथ की दूरी पर रहकर ही पिता का जीवित स्पर्श उसे मिलता था । और निकट पहुँच पाती थी उस समय, जब कभी वे बीमार पड़ते थे । खुद के बीमार होने पर भी उनके ससर्ग-स्पर्श की सम्भावना निकट आ जाती थी । पहली बार इसका अनुभव उसे हुआ था मा के मरने पर । पछाड़ खाकर वह गिर पड़ी थी । कुछ देर बाद होश आने पर उसने देखा—पिता की गोद में उसका सिर टिका है, व्यथित नेत्रों से वे उसकी ओर देख रहे हैं । उनकी इस मूर्ति को अपनी पुतालियों में समाकर उसने आँखें बन्द कर ली, उसी तरह उनकी गोद में पड़ी रही—यदि उसी समय, उसी अवस्था में, उसकी मृत्यु हो जाती... ।

लेकिन उसे जीना था, घर के सूने आँगन में बैठकर, जीने के सपने देखने थे, कल्पना के सहारे दूर-दूर के देशों की सैर करनी थी, समुद्र की लहरों से खेलना था । पिता के जीवन के शून्य को तो वह नहीं भर सकी, पर अपने शून्य को कल्पित राजकुमारों से अवश्य भर लिया । पिता की टाँग टूटने पर कल्पना कुछ यथार्थ हो चली । उन्हीं राजकुमारों में से एक, जैमे चार्ल्स बाँवेरी का रूप धर, उसके सामने आ गया था । उसे पाकर उसके हृदय में कुछ कुड़कुड़ हुई, उसने ही उसने जीवन समझा । राजकुमारों की वस्ती में प्रवेश करने के लिए चार्ल्स के माय हो ली । चार्ल्स के घर आकर देगा—

प्रतिक्रिया सामने आती थी। प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व उसे ब्रह्म लगता था, कुछ देर वह अपने को भूल भी जाती थी; लेकिन वह नहा चाहती थी कि इस प्रभाव के कारण सब उससे दूर-ही-दूर रहे उसका अस्तित्व दिन-दिन एक छाया मात्र बनता जा रहा था। वह उसे अखरता था। मन-ही-मन चाहती थी, वह ज़मीन पर लोटे, धूल धूसरित होकर सबके सामने जाये, मालूम हो कि वह इसी निमी को बनी है। चार्ल्स उसे जितना ही अच्छाता समझता था, उतना वह मटमैली बनना चाहती थी—इस हद तक कि मिट्टी का एक ढेर समझकर वह उसे ठुकरा दे।

सगीत-प्रेमी युवक की उसे याद आई। उसकी नौकरी लग गई है वह भी अब चला जायगा। जाये—वह भी जाय। उसे कुछ नहीं चाहिए।

एम्मा ने एक क्षण कुछ स्फूर्ति का अनुभव किया। फिर अपने पल्लंग पर जाकर पड़ रही।

(९)

अप्रैल का महीना, वसन्त का प्रारम्भ। कुहरा विलीन हो गया। बरफ़ ओस का मोती बनकर फूल-पत्तों के गले का हार बन चली। सम्पूर्ण जीवन अभिसार के लिए जैने तैयार हो रहा था। अपने हृदय की सँगाँव एम्मा भी खिचकी पर बैठी थी। मिर्गजे की घड़ियों विनीत होनी दुःख नि के साथ उसका अभिसार चल रहा था।

बचपन का चित्र सामने था—उसके अपने बचपन का भी, गिरफ्तार में बाँध, कुछ दूर पर, दूसरे लकड़का का भी। आँग-मिचौनी का खेल

चार्ल्स की मा अमी जीवित थी। उसके स्नेह में भी कोई कमी न पड़ी थी। लेकिन एम्मा के बीच में आ जाने से चार्ल्स कुछ ओर में आ गया था। इस ओट को दूर करने के लिए वह जव-तब आ रहती थी। बाते वह चार्ल्स से करती थी, सतर्क और सन्देहपूर्ण कर्नाखियो से एम्मा को भी एक किनारे लगाती जाती थी। जम तक वह रहती, चार्ल्स को उभरने का अवसर नहीं मिलता। वह और भी सिकुड़कर रह जाता। एम्मा उसे देखकर मुस्करा उठती—मुस्कराने के बाद भुँभुलाहट उठती, चार्ल्स पर भी, उसकी मा पर भी।

एम्मा जीवन चाहती थी, मिला उसे लड़कपन। लड़कपन मचलन जानता था, रुठना भी जानता था, आँखें फाड़कर भी कभी-कभी देखने लगता था। 'जीवन' बनना उसे नहीं आता था। लड़कपन को खिला पिलाकर वह दवाखाने में भेज देती—मरीजों से उलझने के लिए खुद घर के काम-काज में लग जाती। काम-काज में भी कोई नयापन नहीं रह गया था। खत्म भी वह जल्दी हो जाता था। खोई-सी सुदृष्ट आकाश में एकटक देखा करती, देखती रहती।

जीवन में नयापन लाने के प्रयत्न वह करने लगी। इधर की चौं उधर उलट-पलटकर रखने लगी। चार्ल्स के पुराने नौकर को भी छुट्टी दे दी। चौदह वर्ष की नई लड़की को नौकर रक्खा। कुछ दिन उसे मिथाने-पटाने में बीते। खाना बनाने की शिक्षा भी उसे देनी शुरू की। माग-तरकारियों के शोड़ा नये-नये नाम धरे जाने लगे। चार्ल्स नये नामों को सुन-सुनकर दग रह जाता था। न जाने कौन-सी चीज उसके सामने आनेवाली है। कुछ देर के लिए एम्मा के हृदय में भी कौतुक उभरता फिर शून्य में खोकर रह जाता।

खाकर बर्था गिर पड़ी थी। माथे पर उसके हलकों-भी खरब आगड़े थी। चाल्स ने उसे गोदी में उठाया, पुचकारा माथे टिचर लगा एम्मा को देने हुए बोला—‘कुछ नहीं। अभी ठीक जायगा।’

बर्था के राने में एम्मा चौंक उठी थी। गोदी में लेते ही वह रुं हो गई। एम्मा ने उसे बिस्तरे पर सुला दिया। फिर दूर लड़ो हँस देवने लगी—बर्था की मुक्कियाँ बन्द हो गई थीं। बन्द आँखों के कोरों के पास आँसू की दो बंदे अभी ठहरी थी। एम्मा से देखा न गया। उसने अपनी आँखें बन्द कर ली।

चाल्स उसके पास बिस्मर आया। कन्वे पर हाथ धरकर खड़ा लगा—‘कुछ नहीं। चोट मामूली है। अभी ठीक हो जायगी।’

दूफान मालिक ने मुना तो दौड़ा हुआ आया। एम्मा को डाढ़ बँवाने के साथ-साथ छोटे बच्चों के लालन-पालन के अनेक उदाहरण उसने दे दाने। उसकी बातों का कोई अन्त न होता देख एम्मा उठ खड़ी गई। चाल्स बेठा हुआ सुनता रहा।

सगति प्रेमी युवक की नौकरी लग गई थी। पर अभी तक वह नहीं मरा था। अपनी मा की अनुमति उसे नहीं मिल पाई थी। परदे में लड़का कैसे और किसके साथ रहेगा, वह उसकी समझ में नहीं आता था। अब कुछ समझाने के लिए उसने अपनी मा को कई पत्र लिखे पढ़ने छोट-छोट फिर बने-बने। बनी मुश्किल से मा राज़ी हुई। इस बाद वह मर्रा की नैयारियों में लगा। बटून-मा सामान उम्मे जा कर लिखा। मालूम होता था, वह नौकरी पर नहीं, समार-यात्रा के लिए गया है।

वेघात नौकर को धमकाना शुरू करती। नौकर चुपचाप सुना करता। फिर एकाएक उसे इनाम दे डालती। कभी मौन साधती तो ऐसा कि मुँह में एक शब्द भी न निकल सके। बोलना शुरू करती तो इस तरह कि सब दग रह जाते। जो जी में आया, कह दिया। किसी को अच्छा लगे, या बुरा। फिर, एकाएक तर्किए में मुँह छिपा, सुबक-सुबककर रोना शुरू करती।

उसकी क्षीण आशा अन्धकार में अस्पष्ट होकर रह गई थी। उसे विश्वास नहीं होता था कि वह कभी प्रकाश का मुँह देख सकेगी। बस यही पर नहीं हुई। उसकी असहाय्यवस्था और भी स्पष्ट रूप में उसके सामने आ उपस्थित हुई—वह मा बनने जा रही थी।

(५)

उन्मुक्त और प्रकाशयुक्त वातावरण में एम्मा पहुँच गई, लेकिन उस समय, जब कि उसका चेहरा पीला पड़ गया था और शरीर पतला। अपने बोझिल जीवन के साथ-साथ एक और जीव का बोझ उसकी अधकचरी कल्पनाओं को भुकाये दे रहा था। जी मचलता था, चक्कर आते थे, पेट में जलन होती थी। जब-तब उसकी चेतना अन्धकार प्रकाश को पहचान नहीं पाती थी। चार्ल्स ने दवाइयाँ दी, मगर कोई लाभ न हुआ। एम्मा बराबर गिरती जा रही थी। आखिर तय हुआ—वायु परिवर्तन के लिए किसी स्वस्थप्रद स्थान पर चलकर रहा जाय। एम्मा उन्मुक्त वातावरण में, प्रकाश और हवा की गोद में, पहुँच गई।

मा के मरने पर वह पछाड़ खाकर गिर पड़ी थी। पिता की उपेक्षाहीन सहृदयता और स्नेह का स्पर्श उसे मिला। इसकी पुनरावृत्ति

घर आने पर उसे उचाला ही दिग्वाड़े पड़ता था। एम्मा का इस उजागर रूप उसने पहले कभी नहीं देखा था।

अपने उजागर अभिनय का लिय एम्मा आगे बढ़ती गई—अपना सो आलोचित करने के लिए। आधुनिक उपन्यास-कहानियाँ पढ़ उसने छाड़ दिया था। इतिहास और दर्शन की पुस्तकें उसने पढ़ शुरू की। उन्हें समझने के लिए उसने कोय मँगाया, व्याकरण की एक पुस्तक ले आई, नाट लेने के लिए कोय कागजों का भी एक रस्द आगया। मात मात रात का चान्स कभी जाग उठता। मालूम होता, सोइ पुरान रहा है। आँख खालकर देखता, ध्वनि किसी के बुलाने की नहीं एम्मा के पढ़ने की है। इतिहास के पन्ने उसके हाथों का स्पर्श पाकर सुन्नर हो उठ हैं। चारा आर अन्वकार से घिरे रहने पर भी उनके कमर में प्रकाश है, इतिहास और दर्शन के सहारे एम्मा उसके जीवन का गुन्धियाँ सुनभा रहा है।

चान्स का यह अच्छा नहीं लगता था। इस तरह एम्मा बीमार पड़ जायगी। वह न खान की सुब रखती है, न पीने की। एम्मा के समझाने के प्रयत्न उसने किये—पहले दबे स्वर से, फिर और और दक। प्रेम और भक्तियों के प्रयोग भी सामने आये। एम्मा सुनती थी मुनक टाल जाती थी। कभी-कभी उलझ भी जाती थी। एक दिन चान्स ने कहा—‘तुम्हें हो क्या गया है। न कुछ खाती हो, न पीती हो। अपने दन-दन पतला पड़ता जा रहा है।’

एम्मा ने चान्स की बात को अन्याकार किया। कहने लगी—‘नहीं, मैं खूब खाती हूँ। तुमसे तो ज्यादा ही खाती हूँ।’

इस बात खाने-पीने को लेकर दोनों में बहस हुई, बहस ने हठ के

सराय उसे कहना चाहिए। एक बार हैजे का प्रकोप फैला था। न छोड़कर आये हुए कुछ लोगों को टिकाने के लिए कच्चा-पक्का प्रबन्ध व दिया गया था। होटल कहिए चाहे सराय, पहले-पहल इसकी नींव इ तरह पड़ी थी और तब से अब तक कोई न कोई इसमें बना ही रहत है। कभी कोई शिकारी आ जाता, कभी कोई रोगी। घुमकड़ तयीअत लोग भी उसे अपने चरणों से पवित्र करते रहते थे। इसके साथ ही एक छोटी-सी दूकान भी है। दूकान और सराय, दोनों, साथ-साथ चलते हैं। दूकान के मालिक फकड़ तयीअत के बीबी-बच्चोंवाले आदमी हैं। उनके आचार और विचारों के बीच शिष्ट-सभ्यता रेखा खींचने में सफल नहीं हो सकी है। धर्म और सदाचार का रंग उनमें दूर रहता है। अपने ही रंग के कपड़े वे पहनते हैं, अपने ही रंग में वे मस्त रहते हैं। सराय की विधवा मालकिन से छूँटे-बाज़ी चलती रहती है। सराय और दूकान की तरह ये दोनों भी साथ-ही-साथ चलते हैं। हृदय की धड़कन के साथ दोनों की व्यावसायिक प्रतिद्वन्द्विता भी चलती है, और जीवन भी।

इन दोनों के अलावा एक व्यक्ति और था। दूकान-मालिक के साथ वह रहता था। संगीत से उसे प्रेम था, कभी-कभी गुनगुना भी लेता था, लेकिन उसका जीवन-संगीत दूकान और सराय की सीमाओं में बँधकर रह गया था। उसकी अपनी बात दूकान-मालिक और सराय की विधवा के रंग में दूबकर रह जाती थी। अपने को वह उभागता था—आशाओं के सहारे, ऐसी आशाएँ जो सुदूर भविष्य में स्थित थीं, जिनका आकाश-प्रकार अल्पकाल ही चला था। संगीत के द्वारा वह इन आशाओं के स्वर्ग में अतुल्य करना चाहता था। उपन्यास-कहानियों के चरित्रों में भी, कभी-कभी, उनकी प्रतिबिम्बि सुनाई पड़ जाती थी।

की जगह भी इस समार में नहीं गयी है। वगैरे उम्मीदों और उम्मीदों
 माथ उमने समार में प्रवेश किया था, लेकिन खड़े होने तक की
 उसे नहीं मिली। भले आदमियों की तरह वह नगर में घूमता था
 था, लेकिन बस न सका। सभी उसे गंदकर चलना चाहते थे।
 कुछ छोड़कर आखिर उसे इस सूनी बस्ती का सारा लेना पड़ा।
 देहाती बनकर सोया सादा जीवन वह बिताना चाहता था। लेकिन यहाँ
 भी वही हाल है। खेती करने के लिए जमीन भी मिली तो सूर।
 उसमें मिर टकरात-टकरात उसके हृदय की धड़कन बढ़ गई, डाकड़ों
 घर के आस पास उसे चक्कर लगाने पड़े। चैन फिर भी न मिला। एम्मा
 का देखकर उसका हृदय तिलमिला उठा। विवाह की बलिबेदी प
 तिल-तिल करके उसकी जान जा रही है। रक्षक न होकर पति उठना
 भक्षक हो गया है। एम्मा को इस ज्वाल से निकालना ही होगा।

चलते चलते उसके पाँव में ठोकर लग जाती, वह भन्ना उठता।
 दुनिया भर के ईंट गड़े सब हमारे लिए ही हैं। सफाई के दारोगा सड़क
 की देख-भाल करते हैं घोड़े पर चटकर। पैदल चलें तो पता चले, सड़क
 क्या हो रहा है। पाँवों के नाल लगवाने की तो उन्हें चिन्ता है, ईंट-रोडों
 का तुरत खयाल हो आता है, लेकिन ज़मीन पर चलनेवालों के पाँव
 में जो आयेले पड़ जाते हैं, उनकी ओर कोई नहीं देखता !

भिगारिया के गीने हाथ और निगल आँखें देखकर भी उमता यही
 हाल होता था। किसी स्त्री का पीला चेहरा, धँसी हुई आँखें, अन्ध-
 ज्यन्त अन्धिय दिगार्ड पढ़ने पर समार के कूर हाथों का चित्र उदरे
 गमने गमना हो जाता था। किसी स्वस्थ, सुन्दर और अल्हद सुवर्ता की
 चेहरा उसका हृदय मगोम उठता—इसे जग भी पता नहीं कि कैसे

नाम के द्वारा अपनी मा की स्मृति को अमर करना चाहता था। एन उमरा विगेंव करती थी। नामों का शौक उसे था, साधारण तरफ़ों के अनाधारण नाम उसने एक दिन रखे थे, लेकिन उसकी लड़की नाम को लेकर जो मकड़ी का जाला बुना जा रहा था, वह उसे ब्रन् नहीं लगना था। नाम वह चाहती थी, मक्के उत्साह में उत्साहित होकर, उसकी यह चाह आगे भी बढ़ी थी, लेकिन वह ऐसा नाम चाहती थी जो इस मकड़ी के जाले को तोड़ दे या जिसके सामने यह जाला टिक सके। इस जालाल में ऊपर उठ न्वतत्र रहने की जिसमें मामर्थ्य हो। एक एक, एक दिन सोचते-मोचते, उसे याद आया—वर्या। कहीं, कि जगह और किसके मुँह से उसने यह नाम सुना था, ठीक याद नहीं पड़ा। नाम जितने अप्रत्याशित रूप में उसके सामने आया था, उतना ही उसे बड़ा मालूम होता था। जितना ही सोचती थी उतना ही इस नाम पर आश्चर्य होता था। इससे अधिक उपयुक्त नाम और न होगा।

लड़की दाई के पास थी, उसका नाम एम्मा के पास। नाम के मोहक आकर्षण ने लड़की को याद को उभार दिया। इस उभार को अनिच्छापूर्वक एकाध बार उसने टालना चाहा, लेकिन सफल न हो सकी। न किन्ती से कुछ कहा, न सुना, न अपने गिरे हुए शरीर की ओर ही देखा। लड़की को देखने के लिए चल दी। कच्ची-पक्की देहाती बर्नी के दूसरे छोर पर दाई रहती थी।

दोपहर का समय था। धूप भी तेज थी और हवा भी। दोनों का मामना करती एम्मा घर में निकली। कुछ ही दूर आगे बड़ी थी नि सर्गात-प्रेमी युवक मिल गया। बगल में कागज़ों का एक पुन्निन्दा दबाये था। मुन्कराइट से एम्मा का उसने अभिवादन किया। साथ भी

उसे डर था कि कहीं और लोग बात का वतगड़ न बना दें। उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा में वह था। एक दिन एम्मा को अधिक सुस्त देखा उसने चार्ल्स से पूछा—“ये आज बहुत सुस्त दिखाई पड़ती हैं। मालूम होना है, इनकी तबीयत कुछ ठीक नहीं रहती।”

एम्मा उस समय वहीं खड़ी थी। सुनकर उसकी भौंहों में बल पड़ा, फिर तुरत वहाँ से खिसक गई। चार्ल्स ने कहा—“हाँ, इनकी तबीयत ठीक नहीं रहती।”

“दवाइं तो आप देते ही होंगे ?” उसने पूछा।

“देता तो हूँ, लेकिन दवाइयों से इन्हे परहेज है। कहती हैं, दवाइयों से कुछ नहीं होने-जाने का।”

यह तो वह पहले ही से जानता था। दवाइयों से रोग दूर नहीं होते। रोग कम होने नहीं आते, डाक्टर बराबर बढ़ते जा रहे हैं—यह बताना मुश्किल है कि रोगों की संख्या अधिक है अथवा डाक्टरों की। एक बार जी में आया, अपनी योजना को सामने रख दें, लेकिन यह निश्चय नहीं कर सका कि उसके लिए यह अवसर ठीक होगा या नहीं। बहुत कुछ सोचने-समझने के बाद उसने कहा—“इनमें रुहिए, रोग थोड़ा-बहुत घूम लिया करें।”

शाम को चार्ल्स ग्याना खाने बैठा। इधर-उधर की बाने करने के बाद उसने कहा—“यह मेरे पड़े-पड़े भी जी भारी हो जाना है। अच्छा हो, कुछ देर बाहर घूम आया करो।”

हल्की-सी ऊँठ के साथ एम्मा ने इस योजना को टाल दिया। लेकिन चार्ल्स के कर्त्तव्य की इतिश्री इतनी सज्ज नहीं हो सकी। जल्द-जल्द उल्टा आना था, एम्मा की तबीयत का हाल पूछना न भूलना था।

गया है। दिन में कई बार इसे नहलाती हूँ; लेकिन साबुन नहीं से.....”

साबुन के लिए एम्मा ने बटुवे में हाथ डाला। जितने पैसे पकड़ आये, दे दिये। एम्मा ने पैसे दिये, दाई ने धन्यवाद। तेज़ कदमों एम्मा बाहर निकली, अपने घर की ओर चल पड़ी। संगीत-प्रेमी यु भी एम्मा की पद-ध्वनि पहचानता उसका साथ दे रहा था।^२ उसके जीवन का सत्र था, इसी को पकड़कर वह आगे बढ़ रहा था। कहाँ, किधर, इसे न उसने स्पष्ट किया था, न स्पष्ट करना चाहता था। सब कुछ उसके लिए दूर चला गया था—वह था और उसकी पदध्वनि तरल गति से उसका अनुसरण कर रहा था। उसे पता ही नहीं चला कि कब एम्मा का घर आ गया और अपनी पदध्वनि के साथ कब वह विलीन हो गई। चार्ल्स की आवाज़ ने उसके स्वप्न को भङ्ग कर दिया, आँखें खोलकर उसने देखा और कागज के पुलिन्दे को सावधानी से सँभालते हुए वह अपनी दूकान की ओर लौट गया।

पदध्वनि के संगीत ने पहली बार उसके जीवन में प्रवेश किया था। इससे पहले संगीत का प्रेम तो उसके पास था, संगीत न था। जो कुछ था—बहुत था भी, वह उभर नहीं पाता था। भीतर-ही-भीतर घुमड़कर वह रह जाता था। उसे व्यक्त वह कभी न कर सका। इसी तरह उसका जीवन बीत रहा था। जीवन का यह अस्फुट रूप दूकान-मालिक के लिए एक अनाधारण विशेषण बन गया था। बड़े ढंग से कहीं गईं उनकी टोटी बातों के आगे उसका स्वर सविनय अवज्ञा भी नहीं कर पाता था। वह उनका एक-मात्र श्रोता था—विनीत, सुशिक्षित और सुमन्य।

इन तीनों विशेषणों की ताल पर उसका मूक जीवन-सर्गित चल रहा

था, आता भी था तो बहुत कम। उसके अछूते सौन्दर्य को, अचूत आभा को, अछूता ही रखने में वह विशेष सतर्कता से काम लेता था। एम्मा का स्पर्श वह नहीं करता था, उसके स्पर्श पाई हुई चीजों के हृदय से लगाता था। एम्मा के आने का आभास पाकर वह खिंजा जाता था, चले जाने पर उसके पद-चिह्नों में लोटकर अपने को कृतार्थ करना चाहता था। यहाँ तक कि एम्मा की ध्वनि को वह सुनी-अनसुनी कर डाल दे सकता था, लेकिन चार्ल्स बाँवेरी की नहीं। एम्मा का प्रति होने का सौभाग्य चार्ल्स को प्राप्त हुआ है, इतना ही उसके लिए पर्याप्त था। एम्मा देखती रह जाती थी और वह चार्ल्स के साथ चल देता था।

जाड़े के दिन आ चले थे। वातावरण की गर्मी को शीत ने ढक लिया था। शीत के प्रभाव को दूर करने के लिए एम्मा अँगोठी का सहारा लेती थी। पास रखी अँगोठी में कोयले धधकते रहते, शीत की कल्पना को अपने से दूर रखने में वे सहायता देते। बाये हाथ की हथेली पर ठोड़ी टेके एम्मा खिड़की के पास बैठ जाती। आँखें अपना काम कानों को साँप बन्द हो जाती और एम्मा किसी की पदध्वनि की प्रतीक्षा में बैठी रहती। अस्पष्ट आहट धीरे-धीरे स्पष्ट हो चलती, हृदय भी उसकी गति का साथ देता। आँखें खुलती थी उस समय, जब पदध्वनि स्पष्ट हो उठने के बाद विलीन होने लगती थी—भुटपुटे-में में वह देखती, एक छाया है जो चली जा रही है। झुंझलाकर एका-एक उठती, अपनी दामी को पुकारती—ग्वाना जल्दी तैयार करो।

ग्वाना ग्वाने के समय दूकान-मालिक आ जाते थे। साथ में सगीत-नी युवक को लाना न भूलते थे। उसके बिना जैसे वे अचूक रहते

चिल्लाना—कुछ भी सुनकर वह चौंक पड़ती, चलते पाँव एक जगह बँधकर रह जाते ।

घूमने वह अब भी जाती थी, लेकिन उस समय, जब कि सारे बस्ती नाद में डूबी रहती । बुलनर के घर भी वह जाती थी, लेकिन उसके चारों ओर चक्कर लगाकर लौट आती थी । आशङ्का के अधिक बढ़ जाने पर कई-कई दिन तक घर से बाहर नहीं भी निकलती थी । ऐसा भी हुआ है कि एक जगह जहाँ बैठ गई है, वहाँ घंटों बैठी ही रह गई है । उठने की जब-जब कल्पना की है, वह काँपकर रह गई है ।

ऐसी जगह वह जाना चाहती थी, जहाँ उसे कोई न जानता हो, उसकी आशङ्का पाकर किसी के कान न खड़े हों । अपने घर को बदल देने के लिए भी उसने चार्ल्स से कहा—“इस घर में अब जी नहीं लगता । अकेले रहने पर बड़ा डर लगता है । दूसरा घर लिये बिना काम नहीं चलेगा ।”

सोते-सोते चाय पड़ने पर चार्ल्स ने एम्मा को कई बार सम्भाला था । कितनी देर तक उसके हृदय की धड़कन का अनुभव करते हुए वह मन-ही-मन काँप भी उठा था । घर बदलने की बात उसे भी ठीक लगी । बोला—“हाँ, घर बदल डालना चाहिए । खोज में रहूँगा ।”

अगनी नौकगनी से भी एम्मा धवरा उठती । बर्था को न विनाकर उसकी दृष्टि एम्मा के पीछे लगी रहती है, ऐसा उसे मालूम पड़ता था । नौकगनी का मुँह बन्द और आँखें फेरने के लिए एम्मा उसे कुछ न-कुछ भेंट करने लगी ।

बुलनर एम्मा से भी अधिक स्तर्क था । झुटपुटा हो जाने पर फाँटे की तरह वह आता था । अस्पृश्य मँडगकर चला जाता था ।

इसके बाद वह संगीत-प्रेमी युवक की शिष्टता और सुशिक्षा को उभारकर रखते। वह कटकर रह जाता। एम्मा को भी यह अच्छा नहीं लगता था। किसी तरह सम्भव होता तो अपने अञ्चल में छिपाकर दूकान-मालिक की नजरों से उसे दूर कर देती। लेकिन ऐसा हो नहीं पाता था। दूकान-मालिक के चले जाने पर दोनों सन्तोष की साँसें लेते थे। एम्मा को उसे अपने अञ्चल में छिपाने की जरूरत नहीं रहती थी, युवक को भी वास्तविक शिष्टता-नम्रता का परिचय देने का अवसर मिलता था।

दूकान-मालिक के चले जाने पर दोनों को अपने बीच शून्य के अनुभव होता। दूकान-मालिक से अधिक प्रिय अवलम्ब की उन्हें जरूरत होती थी। ताश का खेल कुछ देर काम चला देता था, फिर वह भी एकरस हो चलता। ताश के पत्ते फेंक एम्मा उठ खड़ी होती। स्थान-परिवर्तन के द्वारा कुछ नवीनता लाने का प्रयत्न करती। मेज पर पड़े अखबार के पन्नों को उलटना शुरू करती। युवक भी पास सिसका आता। अखबार के किसी चित्र को देखना शुरू करते। चित्र जितना ही रंगीन होता, उतना ही उन्हें अपना जीवन कलापूर्ण मालूम होता। कभी-कभी एम्मा उसके हाथ में अखबार दे देती, कहानी-कविताओं को पढ़ने के लिए कहती। घंटे इसी तरह बीत जाते। ऐसे समय में चार्ल्स या तो बाहर चला जाता था अथवा कुछ देर पठन-पाठन के बन्द होने की प्रतीक्षा करना, फिर वींगे-वींगे ऊँघने लगना। अँगोठी की आग भी ठण्ठी पड़ चकती थी, चाय का दौर भी समाप्त हो जाता था—गरम चाय किसी के थोड़ा का इन्तज़ार करने-करते कटुवी हो चलती थी। एकाएक युवक स्तब्ध हो उठता। उसे झगल आता, एम्मा के प्रति

ऐसी चीज वह चाहती थी, जिसके सहारे एक घड़ी के लिए भी वह न भूल सके।

कभी-कभी अपनी मा की याद भी उसे हो आती थी। मा को लुलु बुलनर में घण्टों बातें करती। बुलनर भी अपनी मा का हाल बुलनर था। बीस साल उसकी मा को मरे हो गये। उसके जीवन में निःस्नेह था, सब मा के साथ चला गया। सुनकर एम्मा व्यथित हो उठती। बुलनर को हृदय में लगा लेती। आकाश की ओर दोनों की आँखें उठ कर रह जाती। मा का आशीर्वाद पाने के लिए दोनों विह्वल हो उठतीं।

मा के बाद बुलनर को जीवन में स्नेह नहीं मिला था। नो मिलता, वह था अनादर, उपेक्षा और ठोकरें। एम्मा को पारलू उ नये जीवन का अनुभव किया। मा का स्नेह जैसे फिर से मिल गया। एम्मा के सामने आने पर मा की याद आ जाती थी। धीरे-धीरे मा याद एम्मा में ही विलीन होकर रह गई। जब-जब वह मा की याद करता था, एम्मा का चेहरा सामने आ जाता था। अनेक बार मा का आवाहन करना चाहता है, और एम्मा सामने आ गई है।

मा का यह रूप उसने पहले कभी नहीं देखा था। न आकर्षण कभी थी, न स्नेह की। अटपटा लगता था उस समय, जब एम्मा को पीछे छोड़ आगे बढ़ चलती थी। तब वह एम्मा से दूर हट मा याद करने लगता था। जितनी मात्रा में वह एम्मा की ओर आता होता था, उतनी ही मात्रा में पीछे भी हटता था।

पहले भी तरह एम्मा ने अब वह बातें नहीं करता था। दा गंध दूरी वह बीच में बनाये रहता था। एम्मा इस दूरी को नज़र ना आ, वह अदृश हो जाता था। एम्मा को मानस होता, जाना

गई। एम्मा अपने कमरे के अन्दर पड रही। चार्ल्स किसी मरीज को देखने चला गया था।

कमरे का सूनापन एम्मा को अखर रहा था। दो कल्पना-चित्र उसके सामने थे—एक चार्ल्स का, दूसरा सङ्गीत-प्रेमी युवक का। चार्ल्स ने उसके जीवन में पथप्रदर्शन का जैसे काम किया था। उसी के ससर्प स्पर्श के सहारे उसने पहला कदम उठाया था। जीवन की आशिक भाँकी उसने पाई थी। उसे पूरा करने के लिए ही उसने चार्ल्स का साथ दिया था। लेकिन वह भाँकी पूरी न हो सकी, चार्ल्स तक ही निमट कर वह रह गई। चार्ल्स ही उसकी दुनिया बन गई। इस दुनिया में कोई नई चीज आई भी तो वह थी बर्था, उसकी लड़की!

बीणा के सारे तार झनझना उठे। सगीत जैसे कराहकर बैठ गया। उसके घुटने टूट गये थे। खण्डित बीणा फिर खींचकर लाई सङ्गीत-प्रेमी युवक को! उसकी छाया उभरकर सामने आई। चार्ल्स ने बीणा को खण्डित किया था, सङ्गीत-प्रेमी युवक उसकी टूटी झट्टार पर मुग्ध हो उठा था। इस मुग्धता को हृदय से लगाये, अलस भाव से, वह पड़ी रही।

आधी रात गये चार्ल्स मरीज को देखकर लौटा। एम्मा के साथ न आकर एम्मा के पति के साथ ही वह युवक रह गया था। चार्ल्स के आने की आहट सुन, एम्मा ने आँखें बन्द कर लीं। गहरी नींद में जेने मो रही हो। आहट के और अविक निफट आने पर उसने आँखें खोलीं—जेने गहरी नींद आहट से उचट गई हो। मिर भागी होने की भूमिका के बाद अनमनेपन से उमने पूछा—“मायी तुम्हें मूँन मिला है। गीगी का रोग चाहे दूर न हुआ हो, लेकिन तुम्हारा रस्ता अच्छी तरह ट गया होगा!”

करके उन्हें देखा । काम की कोई चीज न निकली । बोली—“अमी मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है । होने पर कहूँगी ।”

“अच्छी बात है,” विसाती ने कहा, “आपमे परिचय हो गया, यही बहुत है । उम्मीद है, आप मुझे भूलेंगी नहीं ।”

अपनी चीजों को उसने सँभालना शुरू किया । मुँह से उसके सारे अर्थ भी निकलते जा रहे थे । अपनी चीजों को छोड़ चार्ल्स बॉवरी ने एक मरीज को लेकर वह कह रहा था—“डॉक्टर साहब को अच्छा मरीज मिला है । खाँसी उसे क्या आती है मानो भूकम्प आ जाता है । जब खाँसी नहीं थी, तब खुद भूकम्प बना हुआ था । इतनी शराब पीता था कि हृद नहीं । सभी उससे परेशान थे ।”

परेशानी का हिसाब आगे बढ़ा । वह कह रहा था—“क्या बताना, आजकल का मौसम बड़ा खराब है । हवा ऐसी बिगड़ी है कि.. ”

उसकी बिगड़ी हवा को सुनी-अनसुनी करते हुए एम्मा ने अपनी नौकरानों को पुकारा—चाय लाने को उससे कहा । यथावसर योग्य मेवा पाने के आश्वामन का हिसाब लगाता विसाती चला गया !

चाय पीने के बाद एम्मा और भी स्वस्थ हो गई । वह इतनी मगन थी कि उसे अपने पर आश्चर्य होता था । व्यर्थ ही वह अब तक अपने को कोमलती रही, जब तब इस शरीर को उपेक्षा की दृष्टि से देखती रही ।

आइने के सामने वह पहुँची । काफी देर तक अपने अद्भुत-प्रगल्भ को देख-देखकर मुग्ध होती रही । एकाएक निमी के आने की आहट सुन वह चौंकी । धूमकर देगा—सद्गीति-प्रेमी युवक सामने खड़ा था ।

एम्मा ने उसे देखकर भी नहीं देखा । आइने का व्यवसाय मिटाने के काम में उसने अपने को व्यस्त कर दिया । युवक कुछ देर खड़ा

भी उसके लिए उतना ही आकर्षक था। उसके मुँह में निकला—
इतने अच्छे हैं . ”

‘इतने’ की कोई सीमा नहीं थी। एम्मा भी उसमें डूबकर रह गई।
सिर उभारने पर घर के काम-काज का उसने फिर देखना शुरू किया।
पिछले दिनों की उपेक्षा में बहुत कुछ था। जो अन्त-व्यन्त हो गया था।
नौकर को बुलाकर उसने मावधान कर दिया। अपनी लडकी बर्था के
भी उसने दाईं के पास में बुला लिया। उसका जीवन जीती-जागती
गुड़िया बनकर उसकी गोद में जैसे आगया था। अधिकांश समय
उसकी देख-भाल में बीतने लगा। जो कोई भी आता, उसके सामने
गुड़िया सबसे अधिक उभरकर आती थी।

चार्ल्स को भी अब सब चीज़ें ठीक-ठिकाने और वक्त पर मिल
जाती थी। कोट के टूटे बटन पहले से ही टँके मिल जाते थे, जूते-
टोपियों के लिए उसे इधर-उधर भटकना नहीं पड़ता था। अदृश्य
हाथ उसका सारा काम कर देते थे। चार्ल्स को आश्चर्य भी होता था।
मन-ही-मन उन अदृश्य हाथों के काम को देखना भी चाहता था।
लेकिन ऐसा अवसर आ नहीं पाता था। कई बार ऐसा हुआ कि काम के
बढ़ाने ही उसने एम्मा को बुला लिया है। फिर कुछ नहीं अथवा याद
नहीं रहा—बढ़कर उस कामविशेष को उठा देना पड़ा। अब इसकी
भी सम्भावना नहीं रही थी। उसके ही काम में व्यन्त इन अदृश्य
हाथों के साथ फिर में इस खेल को दोहराने का चार्ल्स को साहस
नहीं होता था। जब-जब एम्मा के हाथ दिग्गई भी पढ़ने से तो बर्था
के लिए। उसके सामने एक क्षण को आने से, बर्था को उसकी गोदी
छोड़ फिर विलीन हो जाने से !

प्रतिक्रिया सामने आती थी। प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व उसे ब्रह्म लगता था, कुछ देर वह अपने को भूल भी जाती थी; लेकिन वह नहा चाहती थी कि इस प्रभाव के कारण सब उससे दूर-ही-दूर रहे उसका अस्तित्व दिन-दिन एक छाया मात्र बनता जा रहा था। वह उसे अखरता था। मन-ही-मन चाहती थी, वह ज़मीन पर लोटे, धूल धूसरित होकर सबके सामने जाये, मालूम हो कि वह इसी निमी को बनी है। चार्ल्स उसे जितना ही अच्छूता समझता था, उतना वह मटमैली बनना चाहती थी—इस हद तक कि मिट्टी का एक ढेर समझकर वह उसे ठुकरा दे।

सगीत-प्रेमी युवक की उसे याद आई। उसकी नौकरी लग गई है वह भी अब चला जायगा। जाये—वह भी जाय। उसे कुछ नहीं चाहिए।

एम्मा ने एक क्षण कुछ स्फूर्ति का अनुभव किया। फिर अपने पल्लंग पर जाकर पड़ रही।

(९)

अप्रैल का महीना, वसन्त का प्रारम्भ। कुहरा विलीन हो गया। बरफ़ ओस का मोती बनकर फूल-पत्तों के गले का हार बन चली। सम्पूर्ण जीवन अभिसार के लिए जैने तैयार हो रहा था। अपने हृदय की सँगाँव एम्मा भी खिचकी पर बैठी थी। मिर्गजे की घड़ियों विनीत होनी दुःख नि के साथ उसका अभिसार चल रहा था।

बचपन का चित्र सामने था—उसके अपने बचपन का भी, गिरफ्तार में बाँध, कुछ दूर पर, दूसरे लकड़का का भी। आँग-मिचौनी का खेल

“आप—और तबोअत ठीक नहीं रहती। घर में डाक्टर,”

अपनी बात पूरी कर भी न पाये थे कि किसी साहसी लड़के चुपके-मे आकर उनकी छड़ी को भटक दिया। एम्मा को छोड़ वेरुओर लपके—“ठहर तो सही.....बदमाश कहीं का।”

एम्मा मन-ही-मन मुस्कराई। लडका पहुँच से बाहर हो चुका था। उसे छोड़ एम्मा की ओर आये। कहने लगे—“बड़ा बदमाश है।” के बटई का लडका है। बच्चे पैदा करना तो लोग जानते हैं, जें सँभालना नहीं। दिन भर आचारागदों करता रहता है।”

एम्मा चुप थी। उसे चुप देख वे भी चुप हो गये। बात बदल फिर कहने लगे—“बड़े बुरे दिन हैं। कोई कुछ नहीं समझता।” वे देहाती—इनकी कुछ न पूछो। एक गाय बीमार पड़ी। समझे, कि की नजर लगी है। आये मुझे बुलाने। मैं क्या करता। धीरे-धीरे गाँव के सभी ढोर-डगर बीमार पड़ने लगे। ऐसे बुरे दिन हैं। लेकिन वे देहाती.. .।”

‘देहातियों का ही नहीं, औरों का भी यही हाल है’—एम्मा ने कटना शुरू किया। उनके मुँह की बात पकड़कर वे आगे बढ़े। बोले—“हां, बिल्कुल ठीक है। यहाँ की औरतों को लांजिए। गर्दन उठाकर कभी इधर-उधर नहीं देखतीं। लेकिन उनके पति हैं। लान-धूसों में ही बात करते हैं। जिनके पति हैं, वे पति के नाम की राती हैं। शिवानि में फिर कुमारी बनने की कल्पना है। नो कुमारी है, वे पति की बात में दिन-गान एक कर डालती हैं।”

“लेकिन मैं दूसरी बात कहना चाहती थी”, एम्मा के मुँह में निक्का और उन्होंने फिर पकड़ लिया—“यहाँ तो मैं भी रहता है।”

खाकर बर्था गिर पड़ी थी। माथे पर उसके हलकों-भी खरब आगड़े थी। चाल्स ने उसे गोदी में उठाया, पुचकारा माथे टिचर लगा एम्मा को देने हुए बोला—‘कुछ नहीं। अभी ठीक जायगा।’

बर्था के राने में एम्मा चौंक उठी थी। गोदी में लेते ही वह रुं हो गई। एम्मा ने उसे बिस्तरे पर सुला दिया। फिर दूर लड़ो हँस देवने लगी—बर्था की मुक्कियाँ बन्द हो गई थीं। बन्द आँखों के कोरों के पास आँसू की दो बंदे अभी ठहरी थी। एम्मा से देखा न गया। उसने अपनी आँखें बन्द कर ली।

चाल्स उसके पास बिस्मर आया। कन्वे पर हाथ धरकर खड़ा लगा—‘कुछ नहीं। चोट मामूली है। अभी ठीक हो जायगी।’

दूफान मालिक ने मुना तो दौड़ा हुआ आया। एम्मा को डाढ़ बँवाने के साथ-साथ छोटे बच्चों के लालन-पालन के अनेक उदाहरण उसने दे दाने। उसकी बातों का कोई अन्त न होता देख एम्मा उठ खली गई। चाल्स बेठा हुआ सुनता रहा।

सगति प्रेमी युवक ही नौकरी लग गई थी। पर अभी तक वह नहीं मरा था। अपनी मा की अनुमति उसे नहीं मिल पाई थी। परदे में लड़का कैसे और किसके साथ रहेगा, वह उसकी समझ में नहीं आता था। अब कुछ समझाने के लिए उसने अपनी मा को कई पत्र लिखे पढ़ने छोट-छोट फिर बने-बने। बनी मुश्किल से मा राज़ी हुई। इस बाद वह सफ़र की तैयारियों में लगा। बटून-मा सामान उम्मे जा कर लिखा। मालूम होता था, वह नौकरी पर नहीं, समार-यात्रा के लिए गया है।

इसके बाद उसने अपनी दामी को पुकारा। वह आई। वहाँ उसे देने हुए कहा— ले जाओ इसे।”

दोनों अकेले रह गये। एम्मा का मुँह दूसरी ओर था—दासी की गोदी में चटी वर्था को जाते हुए वह देख रही थी। युवक अँगली पर टोरी को टिकाकर उसे घुमा रहा था। कुछ देर दोनों उ रहे। फिर एम्मा ने कहा— मालूम होता है, आज बारिश होगी। बादल घिर आये हैं।”

युवक को अपने ओवर-कोट की याद आई। बोला—“मालूम तो ऐसा ही होता है। लेकिन मेरे पास ओवर-कोट है। कुछ हर्ज नहीं होगा। मगर कुछ मने ठीक कर लिया है।”

उसमें बिदा लेकर एम्मा अपनी खिडकी पर आ बैठी। घिरे हुए बादल को देखने लगी। छिपते सूर्य की लाली ने सुनहरी कोरों में उन्हें रँग दिया था। एकटक एम्मा मुग्ध भाव से देखती रही। बादल बगावर घिरन जा रहे थे। कुछ देर बाद तीर की तरह पानी की तेल धौल्यार पड़ने लगी। एम्मा भीग चली, पर वहाँ से उठी नहीं। रह-रह-कर वह माच रही थी कभी उस युवक के बारे में, कभी उसके ओवर काट के।

(१०)

वहाँ से बाद आकाश निर्मल हो गया, लेकिन एम्मा का हृदय नहीं। बीजागों में भाँगकर वह और भारी हो गया था। निर्मल आकाश अब जैसे उसे हलका करने में लगा था, सूर्य की निरर्णों उसके साथ खेल करना चाहती थीं। सगीत-प्रेमी युवक का स्मृति-चित्र भी पल्ले में

एम्मा के कमर की तरह चार्ल्स का मस्तिष्क भी शून्य हो गया। बहुत कुछ ज़िन्दा-पड़ताल करने पर एम्मा ही वहाँ दिखलाई पड़ती है। स्वयं चार्ल्स भी यह नहीं चाहता था कि सिवा एम्मा के वहाँ ओग के हों। वह फाड़ भी उसका नाम आता। उसके मुँह से सबसे पहली ओग सबसे अन्तिम बात एम्मा के बारे में ही सुनना चाहता। एम्मा के लिए उसका शुभ कामना पाने के लिए वह उसे चाय पिलाता था, और चाय में उसकी ख़ातर तबाला करता था।

इतने दिन के बाद एक नाटक मण्डली का उस रस्ती में आना हुआ। एम्मा के लिए शुभकामनाय हृदय में लिये रहने ही नहीं। चार्ल्स का प्रेक्षक का आश्चर्य करने के लिए वह जान लगा था। उसी में एक नई हवा। एम्मा का नाटक 'द्विवांग नायिका' रमा। कुछ नकु तो उसका ना प्रदर्शन था।

घर आने पर उसे उचाला ही दिग्वाड़े पड़ता था। एम्मा का इस उजागर रूप उसने पहले कभी नहीं देखा था।

अपने उजागर अस्तित्व का लिय एम्मा आगे बढ़ती गई—अन्धरा को आलोकित करने के लिए। आधुनिक उपन्यास-कहानियाँ पढ़ने उसने श्राव दिया था। इतिहास और दर्शन की पुस्तकें उसने पढ़नी शुरू की। उन्हें समझने के लिए उसने कोय मँगाया, व्याकरण की एक पुस्तक ले आई, नाट लेने के लिए कोय कागजों का भी एक रस्द आगया। मान मान रात का चान्स कभी जाग उठता। मालूम होता, सोइ पुरान रहा है। आँख खालकर देखता, ध्वनि किसी के बुलाने की नहीं एम्मा के पढ़ने की है। इतिहास के पन्ने उसके हाथों का स्पर्श पाकर सुन्नर हो उठ हैं। चारा आर अन्धकार से घिरे रहने पर भी उसके कमर में प्रकाश है, इतिहास और दर्शन के सहारे एम्मा उसके जीवन का गुन्धरी सुनभा रहा है।

चान्स का यह अच्छा नहीं लगता था। इस तरह एम्मा बीमार पड़ जायगी। वह न खान की सुब रखती है, न पीने की। एम्मा के समझाने के प्रयत्न उसने किये—पहले दबे स्वर से, फिर और और दबे। प्रेम और भक्तियों के प्रयोग भी सामने आये। एम्मा सुनती थी मुनकर टाल जाती थी। कभी-कभी उलझ भी जाती थी। एक दिन चान्स ने कहा—‘तुम्हें हो क्या गया है। न कुछ खाती हो, न पीती हो। अपने दन-दन पतला पड़ता जा रहा है!’

एम्मा ने चान्स की बात को अन्याकार किया। कहने लगी—‘नहीं, मैं खूब खाती हूँ। तुमसे तो ज्यादा ही खाती हूँ।’

इस बात खाने-पीने को लेकर दोनों में बहस हुई, बहस ने हठ के

हुआ था। लूमी के बारे में सोचना स्थगितकर इन कामाओं को करने की ओर ही वह जुट गया। दोनों प्रेमी प्रतिद्वन्द्विता में ग्रासे। दोनों का यह श्रेणी-मंघर्ष लूमी के लिए महँगा पड़ा। वह रोन में पिसने लगी।

“मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता,” चार्ल्स ने कहा, “लूमी की चाहते हुए भी ये लोग क्यों नहीं देख पाते कि छुरी और किमी के बीच स्वयं लूमी के गले पर ही चल रही है।”

एम्मा भुँभुला उठी। बोली—“चुप रहो तुम ! जो बात समझ में नहीं आती, उस पर राय देना फिजूल है।”

“नहीं एम्मा,” चार्ल्स ने कहा, “मैं समझना चाहता हूँ।”

इतना कहकर चार्ल्स चुप हो गया। प्रेम की समझने के लिए नाट्य को और भी ध्यान में देखने लगा। एम्मा अपनी बात कहकर चुप हो गई थी, चुप ही रही।

विवाह का दृश्य सामने था। दुल्हिन के चेहरे में लूमी का दर्द साफ साफ गपटी कर दी गई थी। चेहरा उसका पीला पड़ गया था। विवाह के लिए नहीं, बलि देने के लिए उसे उसका शरीर दिया गया हो। एम्मा में यह दृश्य देखा नहीं गया। आँखें बन्दकर कुर्सी पर पड़ गई। उसके अपने विवाह का दृश्य सामने था। विवाह में पड़ने के चित्र भी बन्द आँखों के सामने सजीव हो उठे थे। चार्ल्स के आगमन ने उसके हृदय में जो उथल-पुथल मचा दी थी, क्या समझ में वह प्रेम की या ? हृदय की मायागुण कुड़कुड़ के सपने ही क्या प्रेम आता है ? कुड़की समझने का उसे अवसर नहीं मिला। उसके लिए वह अपने सपने नहीं दी। अपने घर की शून्यता उन्होंने उसे

के बारे में चार्ल्स को बहुसी-सा ऊँच-नीच समझा-बुझाकर वह चला गई।

मा को गये कई दिन हो गये। चार्ल्स अपने मरीजों में व्यस्त था, एम्मा अपनी खिड़की से ससार का दृश्य देखने में। अधिकांश सन वहीं बैठे बीतता था। एक दिन उसने देखा, कोई सामने टहल रहा है। नपे-तुले कदमों से वह इधर-उधर आता-जाता है। अपने कपड़ों का भी उसे विशेष रूप से ध्यान है। रह-रह कर गर्द-सी झाड़ता रहता है। एम्मा उसे देखती रही—पहले दिन देखा, दूसरे दिन भी वह दिखाई पड़ा और तीसरे दिन भी। वह खिड़की पर होती थी, तब भी टहलता था, नहीं होती थी, तब भी दिखाई पड़ता था। नपे-तुले कदमों के इस बड़े क्रम में एक दिन अन्तर पड़ा। पास आकर वह बोला—“डॉक्टर साहब हैं ?”

चार्ल्स उस समय घर में मौजूद था। नये रोगी की उसने परीक्षा की। मान्द्रुम हुआ, हृदय की गति नपे-तुले कदमों का साथ नहीं दे रही है, ग्लूब का दौरा भी कुछ बढ़ा हुआ है। देखने के बाद चार्ल्स ने दवाई नित्य दी। दूसरे दिन उसमें फिर आने की कहा। दवाई का परचा लेकर वह चला गया।

नया रोगी दूसरे दिन फिर आया। चार्ल्स ने उसके हृदय की परीक्षा लेनी शुरू की। कानों में नलकी लगाये चार्ल्स उसके हृदय की धड़कन गिन रहा था और वह सोच रहा था एम्मा के बारे में। हृदय के दृग्ग ने उस रोगी की समझने के लिए जिसे कानों में नलकी लगाने

नहीं हो सकती। मेरे हृदय की गति

लगता रहा है, एम्मा के हृदय की

की जगह भी इस समार में नहीं गयी है। वगैरे उम्मीदों और उम्मीदों
 माथ उमने समार में प्रवेश किया था, लेकिन खड़े होने तक की
 उसे नहीं मिली। भले आदमियों की तरह वह नगर में घूमता था
 था, लेकिन बस न सका। सभी उसे गंदकर चलना चाहते थे।
 कुछ छोड़कर आखिर उसे इस सूनी बस्ती का सारा लेना पड़ा।
 देहाती बनकर सोया सादा जीवन वह बिताना चाहता था। लेकिन यहाँ
 भी वही हाल है। खेती करने के लिए जमीन भी मिली तो सूर।
 उसमें मिर टकरात-टकरात उसके हृदय की धड़कन बढ़ गई, डाकड़ों
 घर के आस पास उसे चक्कर लगाने पड़े। चैन फिर भी न मिला। एम्मा
 का देखकर उसका हृदय तिलमिला उठा। विवाह की बलिबेदी प
 तिल-तिल करके उसकी जान जा रही है। रक्षक न होकर पति उठना
 भक्षक हो गया है। एम्मा को इस ज्वाल से निकालना ही होगा।

चलते चलते उसके पाँव में ठोकर लग जाती, वह भन्ना उठता।
 दुनिया भर के ईंट गड़े सब हमारे लिए ही हैं। सफाई के दारोगा सड़क
 की देख-भाल करते हैं घोड़े पर चटकर। पैदल चलें तो पता चले, सड़क
 क्या हो रहा है। पाँवों के नाल लगवाने की तो उन्हें चिन्ता है, ईंट-रोड़े
 का तुरत खयाल हो आता है, लेकिन ज़मीन पर चलनेवालों के पाँव
 में जो आयेले पड़ जाते हैं, उनकी ओर कोई नहीं देखता !

भिगारिया के गीने हाथ और निगल आँखें देखकर भी उमता यही
 हाल होता था। किसी स्त्री का पीला चेहरा, धँसी हुई आँखें, अन्ध-
 ज्यन्त अन्धिय दिगार्ड पढ़ने पर समार के कूर हाथों का निच उठने
 मानते क्या हो जाता था। किसी स्वस्थ, सुन्दर और अल्हद सुवर्ता की
 चेहरा उसका हृदय मगोम उठता—इसे जग भी पता नहीं कि कैसे

की जगह भी इस ससार में नहीं रही है। बड़ी उम्मीदों और उमङ्गों के साथ उमने ससार में प्रवेश किया था, लेकिन खड़े होने तक की जगह उसे नहीं मिली। भले आदमियों की तरह वह नगर में बसना चाहता था, लेकिन बस न सका। सभी उसे रौंदकर चलना चाहते थे। सब कुछ छोड़कर आगिर उसे इस सूनी बस्ती का सहारा लेना पड़ा। देहाती बनकर सीधा-सादा जीवन वह बिताना चाहता था। लेकिन यहाँ भी वही हाल है। खेती करने के लिए जमीन भी मिली तो बज़र। उसमें मिर टकराते-टकराते उसके हृदय की धड़कन बढ़ गई, डाक्टर के घर के आस-पास उसे चक्कर लगाने पड़े। चैन फिर भी न मिला। एम्मा को देखकर उसका हृदय तिलमिला उठा। विवाह की बलिबेदी पर तिल-तिल करके उसकी जान जा रही है। रक्षक न होकर पति उसका भक्षक हो गया है। एम्मा को इस जङ्गल से निकालना ही होगा।

चलते-चलते उसके पाँव में टोकर लग जाती, वह भन्ना उठता। दुनिया भर के ईंट-गोड़े सब हमारे लिए ही हैं। सफाई के दारोगा सड़क की देख-भाल करते हैं घोड़े पर चढ़कर। पैदल चलें तो पता चले, कहाँ क्या हो रहा है। घोड़े के नाल लगवाने की तो उन्हें चिन्ता है, ईंट-गोड़ों का तुरंत खयाल ही आता है, लेकिन ज़मीन पर चलनेवालों के पाँव में जो आवले पड़ जाते हैं, उनकी ओर कोई नहीं देखता।

मित्रागणों के रीते हाथ और निगाह आँखें देखकर भी उसका यही हाल होता था। किसी स्त्री का पीला चेहरा, बँसी हुई आँखें, अम-व्यन्त अम्लित्व दिखाई पड़ने पर ससार के क्रूर हाथों का चित्र उसके मन में खड़ा हो जाता था। किसी स्वस्थ, सुन्दर और अलङ्कृत युवती को देखकर उसका हृदय समीप उठता—इसे ज़रा भी पता नहीं कि किसी

उसे डर था कि कहीं और लोग बात का वतगड़ न बना दें। उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा में वह था। एक दिन एम्मा को अधिक सुस्त देखा उसने चार्ल्स से पूछा—“ये आज बहुत सुस्त दिखाई पड़ती हैं। मालूम होना है, इनकी तबीयत कुछ ठीक नहीं रहती।”

एम्मा उस समय वहीं खड़ी थी। सुनकर उसकी भौंहों में बल पड़ा, फिर तुरत वहाँ से खिसक गई। चार्ल्स ने कहा—“हाँ, इनकी तबीयत ठीक नहीं रहती।”

“दवाइं तो आप देते ही होंगे ?” उसने पूछा।

“देता तो हूँ, लेकिन दवाइयों से इन्हे परहेज है। कहती हैं, दवाइयों से कुछ नहीं होने-जाने का।”

यह तो वह पहले ही से जानता था। दवाइयों से रोग दूर नहीं होते। रोग कम होने नहीं आते, डाक्टर बराबर बढ़ते जा रहे हैं—यह बताना मुश्किल है कि रोगों की संख्या अधिक है अथवा डाक्टरों की। एक बार जी में आया, अपनी योजना को सामने रख दें, लेकिन यह निश्चय नहीं कर सका कि उसके लिए यह अवसर ठीक होगा या नहीं। बहुत कुछ सोचने-समझने के बाद उसने कहा—“इनमें रुहिए, रोग थोड़ा-बहुत घूम लिया करें।”

शाम को चार्ल्स ग्याना खाने बैठा। इधर-उधर की बाने करने के बाद उसने कहा—“यह मेरे पड़े-पड़े भी जी भारी हो जाना है। अच्छा हो, कुछ देर बाहर घूम आया करो।”

हल्की-सी ऊँठ के साथ एम्मा ने इस योजना को टाल दिया। लेकिन चार्ल्स के कर्त्तव्य की इतिश्री इतनी सज्ज नहीं हो सकी। जल्द-जल्द उल्टा आना था, एम्मा की तबीयत का हाल पूछना न भूलना था।

से पहले वह जान लेना चाहता था, पानी कितना गहरा है। वाक्य को अधूरा छोड़ अधूरी दृष्टि से वह एम्मा के मुँह की ओर देखने लगा।

अधूरे वाक्य को एम्मा ने पूरा कर दिया। वह घूमने चलेगी। चार्स भी आ गया था। यह सुनकर बहुत खुश हुआ। पीठ ठाने हुए उसने बुलनर को विदा दी। जीवन में पहली बार एम्मा को भी उसने गुदगुदाया। झुंझलाकर एम्मा अलग हट गई।

झुंझलाहट उच्च शिखर पर पहुँची दूसरे दिन। तैयार होना न चाहने पर भी एम्मा घूमने के लिए तैयार हो गई थी। तैयार होने पर घड़ी की ओर उसकी आँखें लगी थी—इसलिए नहीं कि घूमने का समय जल्दी आये, बल्कि इसलिए कि घूमने की वह घड़ी किसी तरह टल जाये। धीरे-धीरे वह घड़ी आई भी और टल भी गई। टलने की प्रतीक्षा के टल जाने पर एम्मा का हृदय झुंझला उठा। पहने कपड़ी को उतारकर फेंक दिया। पलङ्ग पर जाकर पड़ रही—आधी नीचे, आधी ऊपर। झुंझलाहट फिर भी पीछा नहीं छोड़ रही थी—अब इसलिए कि रोना चाहने पर भी आँसू क्यों नहीं आ रहे हैं ?

(१२)

टेढ़ महीना गुजर गया। बुलनर दिखाई नहीं पवा। उसने सोचा—जल्दी करना ठीक नहीं। तैयार तो वह हो ही गई है। अब उसे भी कुछ समय देना चाहिए। नहीं तो वह समझेगी, घूमना उसके आने लिए नहीं, मेरे लिए हो रहा है।

यह सोचकर वह टल गया। उसे विश्वास था, अभाव में अनुभूति और भी गहरी हो उठती है। एम्मा उन लोगों में नहीं है, जो

था। कुछ न कर सकने पर बड़ा अटपटा लगा। एकाएक उसकी नज़र गुलदस्ते पर पड़ी। जरूरी काम को जैसे एक सहारा मिल गया। तब बढ़कर गुलदस्ते को उठा लिया। सुग्धभाव से बोला—“उठे मुक्त फूल हैं।”

चार्ल्स की आवाज सुनकर एम्मा चौंक उठी। चार्ल्स के हाथ में गुलदस्ता देखकर उसका सारा शरीर मरोड़ खा उठा। उसे लगा, चार्ल्स के स्पर्श ने गुलदस्ते के फूलों को और भी छिन्न भिन्न कर दिया है। तेजी से उठी। चार्ल्स के हाथ में गुलदस्ता ले लिया। गुलदस्त में पानी भरा। गुलदस्ते को उसमें रख सन्तोष की साँस ली।

चार्ल्स ने उसने पूछा—“कहिए, क्या काम है?”

“कुछ नहीं,” चार्ल्स ने कहा, “यही जानने आया था, क्या तुम्हारा जी कैसा है?”

“ठीक है,” एम्मा ने कहा। जरूरी काम में इस उपसंहार को दूर से लगाये चार्ल्स चला गया।

अनिशान मगार ने ऊपर उठकर जीवन ने एम्मा के लिए एक आदर्श रूप प्रयोग कर लिया। मगार की विगारी हुई वेदनावाली। मनेटर उसके चरणों में एम्मा अपने अस्तित्व को उत्कर्ष पर ला चार्ल्स थी। अल-विश्व हृदय आँसू बनकर बह चला था।

देख गुलदस्त क फूलों का अभाव चार्ल्स को भी नहीं प्रसन्न। वह खग था।

बुलनर का याचनाशील मस्तिष्क हृदय की धड़कन को पीछे छोड़ आग बढ रहा था। जीवन का अनुभव करने के लिए नये-नये ग्रामिणों वह खगता था। फरने ही दिनों तक प्रेमपत्रों का क्रम चला। चिट्ठी लिखने के बहुत स कागज और लिफाफे एक बार एम्मा द्वारा लाईं था। उनका अब तक कोई उपयोग नहीं हो सका था। बुलनर ने उन्हें भी जीवनदान दिया। एम्मा पत्र लिखती थी। बस्ती से बाहर, एक निरत ध्यान पर, पत्र छोड़ आती थी। बुलनर वहाँ आकर पत्र ले लेता था। उत्तर लिखकर फिर उसी जगह छोड़ देता था। एम्मा उसे वाता था।

प्रेमपत्रों के द्वारा ही दोनों एक-दूसरे में मिलते थे। बस्ती से बाहर, एक दूसरे में अदृश्य रहकर, प्रेमपत्रों का यह आदान-प्रदान चलता था। अद्भुत जीवन का अछूता आकर्षण पूर्व निश्चित योजना के अनुसार सामने आ रहा था। एम्मा को यह बहुत अच्छा लगता था। सम्न्ताप की बात हममें एक थी। वह यह कि बुलनर के पत्र नपे-तुले होते हैं। 'गन चुन शब्द, गिनी-चुनी पक्तियाँ। थोड़े में ही उसकी बात समान हो जाती है। अपने पत्रों में जितनी ही वह हमकी शिकायत करती था, इतने ही हमारे शब्द नपे-तुले हो जाते थे। शब्दों के म्यान पर एम्मा की शिकायतों को बाँधने के लिए जैसे उसने मिपाही छोड़ दिये हैं। प्रत्येक शब्द मुँह पर उँगली के जैसे कह रहा था—नू चुन रह!

एम्मा में न रहा गया। चार्ल्स मंजरे-ही-मंजरे कहीं चला गया था। मन में एक टूट उठी, बुलनर में मिलने के लिए एम्मा चल दी।

चिल्लाना—कुछ भी सुनकर वह चौंक पड़ती, चलते पाँव एक जगह बँधकर रह जाते ।

घूमने वह अब भी जाती थी, लेकिन उस समय, जब कि सारे बस्ती नाद में डूबी रहती । बुलनर के घर भी वह जाती थी, लेकिन उसके चारों ओर चक्कर लगाकर लौट आती थी । आशङ्का के अधिक बढ़ जाने पर कई-कई दिन तक घर से बाहर नहीं भी निकलती थी । ऐसा भी हुआ है कि एक जगह जहाँ बैठ गई है, वहाँ घंटों बैठी ही रह गई है । उठने की जब-जब कल्पना की है, वह काँपकर रह गई है ।

ऐसी जगह वह जाना चाहती थी, जहाँ उसे कोई न जानता हो, उसकी आशङ्का पाकर किसी के कान न खड़े हों । अपने घर को बदल देने के लिए भी उसने चार्ल्स से कहा—“इस घर में अब जी नहीं लगता । अकेले रहने पर बड़ा डर लगता है । दूसरा घर लिये बिना काम नहीं चलेगा ।”

सोते-सोते चाय पड़ने पर चार्ल्स ने एम्मा को कई बार सम्भाला था । कितनी देर तक उसके हृदय की धड़कन का अनुभव करते हुए वह मन-ही-मन काँप भी उठा था । घर बदलने की बात उसे भी ठीक लगी । बोला—“हाँ, घर बदल डालना चाहिए । खोज में रहूँगा ।”

अगनी नौकगनी से भी एम्मा धवरा उठती । बर्था को न विनाकर उसकी दृष्टि एम्मा के पीछे लगी रहती है, ऐसा उसे मालूम पड़ता था । नौकगनी का मुँह बन्द और आँखें फेरने के लिए एम्मा उसे कुछ न-कुछ भेंट करने लगी ।

बुलनर एम्मा से भी अति स्नेह था । भुटपुटा हो जाने पर फाँटे की तरह वह आता था । अस्पृश्य मँडगकर चला जाता था ।

स्वर में दोनो बातें करते थे—दीर्घ निःश्वास जैसे एक-दूसरे का अभि-
 कर रहे हो। रात की निस्तब्धता में उनका स्वर भी जैसे निस्तब्ध हो
 अपनी अभिन्नता घोषित करता था।

बरसात के दिनों में दोनो उस कमरे में छिप रहते, जहाँ च-
 रोगियों को देखा करता था। एम्मा ने कुछ मोमवत्तियाँ छिपाकर व-
 छोड़ी थी। उनके धीमे प्रकाश में अनावश्यक ठोकरों से बचाव
 जाता था। अन्धकार का बोझ भी किसी हद तक हलका हो जाता था।

सहज ही इस कमरे में बुलनर ने अपना स्थान बना लिया था।
 रोगी के रूप में एक दिन उसने इस कमरे में प्रवेश किया था। इ-
 कमरे में घड़ी हाथ में लेकर चार्ल्स ने उसके हृदय की धड़कन को एक-
 एक करके गिना था। बीती बातों की यादकर वह मुस्करा उठता।
 चार्ल्स पर भी जब तब एकआध छींटा कस देता था।

एम्मा को यह अच्छा नहीं लगता था। चार्ल्स ने बुलनर का ड-
 नहीं बिगाड़ा था। यह ठीक है कि चार्ल्स के प्रति एम्मा के हृदय में
 असन्तोष था। इस असन्तोष के सहारे ही बुलनर आगे बढ़ा था।
 भी डमी को लेकर करता था। लेकिन एम्मा इस असन्तोष में ऊपर
 उठना चाहती थी, बुलनर को भी इसमें ऊपर उठा हुआ देखना चाहती
 थी। जब कि बुलनर इसके अभाव में एक बात भी नहीं कह पाता था।

जिमी के पाँव की आहट का आभास पाकर एम्मा एकाएक च-
 उठती। उसे लगता, जैसे कोई आरत है। बुलनर से कहती—“मा-
 रत है, कोई आरत है ?”

बुलनर दूर उठता। मुँह आगे बढ़ाकर बत्ती को पूँक में बु-
 देता। अन्धकार के आवरण में कुनकुनाकर एम्मा के अग्रिम में चि-
 न्त

वह ढबा पड़ा रहा। जितना ही वह यह सब सोचता, उतना ही एम्मा के गाने की प्रशंसा करता। देखते-देखते वह समय भी आ गया, जब एम्मा का संगीत-प्रेम गाने की चार कड़ियों और चार्ल्स की प्रशंसा मिला गया। संगीत का कहीं पता नहीं था, प्रशंसा चारों ओर सुनाई पड़ती थी।

प्रशंसा का यह प्रचार भी एक सीमा तक चलकर ठहर गया। अपनी ओर से चार्ल्स अब कुछ नहीं कहता था। एम्मा के संगीत-प्रेम की प्रगति का उल्लेख होने पर वह उत्तर देता — ‘हाँ, इधर गाना रुक कर दिया गया है। उत्साह में एम्मा ने अपने गले की ओर ध्यान नहीं दिया। उसके गले की नसें झनझना उठीं। योग भी तब पड़ता है तो दुगुने लगता है।’

एम्मा से मिलने पर कहता — ‘अपने को पहचानकर भी तुम नहीं पहचानती हो एम्मा! यह तुममें बड़ा ऐंठ है। दो घड़ी जी बरत जाना था, वह भी तुमने बन्द कर दिया।’

दूरान-मालिक का चार्ल्स के जीवन में घनिष्ठ सम्बन्ध था। संगीत के अभ्यास का प्रभाव उस पर भी पड़ा। चार्ल्स की बात को और भी स्पष्टकर वह कहने लगा — ‘यह तो प्रकृति ही देन है। यों तो रोना गाना सभी को आता है। लेकिन संगीत—वह सभी के वश ही नहीं। यह जीवन की निधि है। इसका उपेक्षित करना ठीक नहीं। अतः इसका प्रचार आवश्यक बत रहा है। हमारा काम है, जो लोगों का जीवन तो बीत चला। अब क्या गायेगे और क्या बतलेंगे? लेकिन अपने काम-वृत्तों के निष्ठ तो कुछ करना ही होगा। देना तो हमें पता है। माँ को ही संगीत से रुचि न होनी तो बेटी में इसका अभाव कदा और भी प्रकट है।’

ऐसी चीज वह चाहती थी, जिसके सहारे एक घड़ी के लिए भी वह न भूल सके।

कभी-कभी अपनी मा की याद भी उसे हो आती थी। मा को लुलु बुलनर में घण्टों बातें करती। बुलनर भी अपनी मा का हाल बुलनर था। बीस साल उसकी मा को मरे हो गये। उसके जीवन में निराला स्नेह था, सब मा के साथ चला गया। सुनकर एम्मा व्यथित हो उठती। बुलनर को हृदय में लगा लेती। आकाश की ओर दोनों की आँखें उठ कर रह जाती। मा का आशीर्वाद पाने के लिए दोनों विह्वल हो उठतीं।

मा के बाद बुलनर को जीवन में स्नेह नहीं मिला था। नो न मिलता, वह था अनादर, उपेक्षा और ठोकरें। एम्मा को पारलू उ नये जीवन का अनुभव किया। मा का स्नेह जैसे फिर से मिल गया। एम्मा के सामने आने पर मा की याद आ जाती थी। धीरे-धीरे मा की याद एम्मा में ही विलीन होकर रह गई। जब-जब वह मा की याद करता था, एम्मा का चेहरा सामने आ जाता था। अनेक बार मा का आवाहन करना चाहता है, और एम्मा सामने आ गई है।

मा का यह रूप उसने पहले कभी नहीं देखा था। न आकर्षण कभी थी, न स्नेह की। अटपटा लगता था उस समय, जब एम्मा को पीछे छोड़ आगे बढ़ चलती थी। तब वह एम्मा से दूर हट मा की याद करने लगता था। जितनी मात्रा में वह एम्मा की ओर आता होता था, उतनी ही मात्रा में पीछे भी हटता था।

पहले भी तरह एम्मा ने अब वह बातें नहीं करता था। दा गुरु दूरी वह बीच में बनाये रहता था। एम्मा इस दूरी को नज़र न आता था, वह अदृश हो जाता था। एम्मा को मानस होता, जाना

पर जैसे मकान-ही-मकान रह गये थे। एम्मा का जी भारी हो चला। आँखें बन्दकर जीवन की कल्पना वह करने लगी। ऊँची-ऊँची दीवारें अब उसके सामने नहीं थी, किसी का दीर्घ निःश्वास वे अब बना रही थी। दीवारों की ओट में छिपे भयानक जीवन की अनेक कल्पनाएँ उठीं और चिमनी के धुएँ में अपना आकार खोकर विलीन हो गईं। एम्मा का जी घुटने लगा। खिड़की से बाहर उसने आधा शरीर निकाल लिया था। इसी समय घोड़े पर चाबुक पड़ा। गाड़ी की गति तेज हुई। एम्मा के बाल लहराकर अस्तव्यस्त हो हवा में उड़ने लगे।

गाड़ियों का अट्टा आगया था। एम्मा उतर पड़ी। एम्मा ने आँखें कपड़े को ठीक किया, हाथ के दस्ताने बदल डाले, पाँव में नये भादू पहने। कंधे पर पड़े शाल को सँभालते हुए वह आग गई। प्रकाश के साथ-साथ उसने नगर में प्रवेश किया। सड़कों की माइड ही नहीं थी, दूफानों के ताले खुल रहे थे। रात की झुमारी उतार कर नगर का जीवन सामने आ रहा था। एम्मा का साहस नहीं हुआ कि आँखें खोलकर उसे देखे। कुछ देर नीची दृष्टि रखे चलती रही, फिर एक गली में वह घुम गई। जीवन के इस जागरण को आँखों की आवाज का बर चलना चाहती थी। उसे पता भी नहीं था कि बन्द कमरे और बन्द सड़कों को छोड़कर नियाँन भी इस अँधेरी गली की शरण में चला है। कुछ दूर चलने पर दोना की भेंट हो गई। आनन्दमित्र मित्र ने अनिगदन को आश्चर्यमय बना दिया। दोनों एक-दूसरे की ओर देखते लगे। अनिगदन पूर्ण हो गया।

मित्रों के कमरे की अब आसन्न हो गई थी। मरगोती की लाली का बरगद पड़ा था। नौका के आसन्न का बरगद बना हुआ

करने लगी। उसके कपड़ों पर मिट्टी लग गई थी। एम्मा ने भागकर साफ कर दिया। कोई भी याद भुलाने के लिए उड़ती चिट्ठिया की ओर उसने बर्था का ध्यान रखा—अरे रे, देखो तो, वह ले उठी!

फिर बर्था को नीचे छोड़ कमरे में टहलने लगी। बुलनर उन रात आया था, लेकिन उसने कोई बात नहीं की। उसकी उपेक्षा में 'घनिष्ठ' होकर वह चला गया।

(१४)

चार्ल्स का जीवन एकरस हो चला था। इस एकरसता का कारण एम्मा नहीं थी। बुलनर का भी इसमें कोई स्थान न था। अपनी उम्र में उम्र अपनी डाक्टरों से था—जिस तरह उसकी डाक्टरों चल रही थी, उस दिमाग से कुछ न हो सकेगा।

रह रहकर वह अपने बारे में सोचता था। डाक्टरों से अधिक उसका सोचना चलता था। उसे अपनी माँ का खयाल आया, फिर पिता का। स्कूल-जीवन का वह पहला दिन भी याद आया, जब माँ लपेटे गिरगिराकर बैठे थे, उनकी हँसी में उसकी टोपी उछलने लगी थी। फिर भी प्रायः में उसने अपना स्थान बना लिया था। उसे आशा होने लगी थी, वह अपने पाँव पर खड़ा हो सकेगा। तीन साल बाद उसके पाँव फिर उगरे। दूसरे स्कूल में उसे भेज दिया गया। डाक्टरों की मोटी मोटी हिलारें, मुटों की चीर काट—सबका संभावना हुआ था अपने बच्चे। डाक्टर यह बन गया। डाक्टर के साथ साथ बात भी बन गई। फिर एक प्रेमी! सब कुछ बनने पर भी वह कुछ नहीं बन सका। वह देवकी प्रेमा है, इसकी सीमाओं में टकराकर वह जानेंकारी उगरे डाक्टरों है।

प्रत्यक्ष करती थी, उस समय एम्मा का ध्यान उसकी ओर आती होता था। बाधाहीन होकर बर्था फिर अपनी दुनिया में घुटना के चलने लगती थी।

तटस्थता का यह रूप अनायास ही इस बार दूर हो गया। एम्मा बर्था के खेल में हाथ बँटाने लगी। नये-नये खेलों का बर्था के तीर में प्रवेश हुआ। सबसे ऊपर प्रधान रहा तीर-कमानों का खेल। एडवर्जें तीर-कमान एम्मा ने उसके लिए बनवा दिये थे। छोटे-छोटे हाथों में बर्था उन्हें सँभालती थी। चार्ल्स भी सामने होता था और एम्मा भी। पास जाकर एम्मा निराना साधना बताती थी। दूर खड़े रहकर फिर तीर छोड़ने के लिए कहती थी। बर्था तीर छोड़ती थी। आगे न बढ़कर तीर-कमान की डोरी में उलझकर रह जाता था। देखा चार्ल्स सन्तोष का माँस लेता, निशाने को देखाकर उत्सन्न हुई पलकें दूर हो जाती—फिर ग्विनग्विन्ता कर हँस पड़ता। बर्था भी मुँहा में नाचकर तीर-कमान फेंक देती थी।

(२९)

टूटी टोंगी को मीठा करने में चार्ल्स इतना अभ्यस्त नहीं हुआ था जितना कि कागज की नाव बनाने में। अन्वयार के रानी कागज की दुम्मे गुल मिलाता था। बाद में रंगीन और फलदार कागज लगाता था उसे आग। छोटी और बड़ी, कितनी ही तरह की नावें उसने बनाईं। अपने तीर-कमानों के छोड़कर बर्था कागज की नावें भी बनाती थी। चार्ल्स की मदद चला जाता तो बर्था उसकी प्रशंसा करती थी। वह अपने दो सड़क के नाव बनाना शुरू करता। पहले दो

गोटे ठपे और माँगपट्टी में दिन बिनानेवाली युवतियाँ भी उन पर जैसे दृष्टी पड़ती हैं ।”

दूकान मालिक का जीवन भी अब प्रशस्त हो गया था । नाग में उपायनत डाक्टर ने जैसे उसी को बर लिया था । जो कोई भी आता, उसी के सामान उस सत्य का स्पष्ट कर रखता । उपेक्षित डाक्टरी की स्थिति दयनीय दशा है । गड है, किस प्रकार लोगों का उस पर से निरासा उठता जाता है, व्यापक हृदय में सशब्द वह व्यक्त करना । डाक्टरों का अन्धश्रुता भाव इतिहास उसने तैयार कर लिया था । का' उसने क्रम लिया । कम । कम न उसे पाला-पासा, शैशव को पार कर कित प्रसार यह इस अवस्था का प्राप्त हुई, पूरा चित्र खींचकर वह सामने रख देता था । बाद में फिर । कम तरह से, किस-किस के समर्थ में उगम में अक्षर गायाय । टी, मुख्यतः परिवार के रूप में दिन दिन अवस्थाओं में सार सर सर यह आउ, डाक्टरी के इतिहास में यह सब भी आ जाता था । वह उन्माद और आवण से इस इतिहास को वह दोहराता था । उनगोनर उसका स्वर तब ही चलता, दिशा विशेष के आ जाने पर वह स्तब्धता उठता । अयाग्य और बच्चे शर्मा ने डाक्टरी की जा आता । लहर मा , बिना समझे ब्रूक उसके दामन पर जो हाथ डाला है वह उन्माद बादल । नर्ग दाता था । वह कहता—“रक्त के प्रोदों, जहाँ है डाक्टर जान । डाक्टरी न दृष्ट, वशी का लेल हो गया । पुरानी से ही उन्माद कम डाक्टरी का न देगा, वे भी आजकल डाक्टर ही देना सार है ।”

उन्माद का रक्त रक्त बच्चे से । आगे सार नई अन्माद शरीर की । उन्माद का रक्त रक्त रक्त । एक का नाम उसने नेत्रों के रक्त रक्त ।

चाहती थी, उसके पाँव की आहट से धवराकर धूल अलग हो जाती थी।

सब कुछ भटककर एम्मा फिर सड़ी हो जाती थी। गोया पत्र अपने पाँव पर खड़ा होकर चलने लगता था। देरानेवाले हँसने पर, इशारे करते थे, कहनी-अनकहनी बातें उनके मुँह से निकलती थीं। गोये पन्ने की गति में कोई अन्तर इससे नहीं पड़ता था। जो थोड़ा सा अन्तर होता भी था, होटल के कर्मचारियों की अभिनन्दना और भिगारियों की आशाभरी आँखों से सँभाल लेती थी। गोये पन्ने का मार्ग और भी प्रशस्त हो उठता था।

हाथ के तग हों जाने पर प्रशस्त मार्ग तग हो चला। होटल के कर्मचारियों की अभिनन्दना गिमकने लगी। एम्मा के सामने आने पर पहलेवाले उन्माद का प्रदर्शन अब नहीं होता था। एम्मा देखती थी, उन्माद का स्थान उपेक्षा लेती जा रही है। भिगारियों की आँखों, माँ की आँख लीट जाने पर भी, उपेक्षा में नहीं भर गई थी, कृपणता का भार उनमें था। होटल की उपेक्षा को भिगारियों की कृतज्ञ आँखों में सँभाल लिया। लेकिन एम्मा इस तरह का स्वागत नहीं ले सकी। उन्हें छोड़, पटुची बड़ प्रहरी की गोद में—उसने फूलों में भंगना शुरू किया। छिपे सूर्य की लाली का दोनों बाँहें पसारकर अपने हृदय में भंगने का प्रयत्न करने लगी।

एम्मा के सामने प्रेमी त्रिवेण का चित्र उसकी आँखों के सामने लगे हो गया। कलियुग के सुन्दर उम्मेद आते-जाते में गोये पन्ने का मार्ग में 'दुःख' का एक दौर दिखावे त्रिवेण की आँख बंद कर रही।

अब वह पन्ने का चित्रण ने एम्मा देखा। एम्मा ने एम्मा को

सम्भव-असम्भव, अनेक प्रकार की कल्पनाएँ वह करने लगता। पर म अपने को बन्द कर जाग्रत स्वप्न देखने का प्रयत्न वह करता था। कभी कभी इसमें उसे सफलता भी मिल जाती थी। वह देखता था, एम्मा का कमरा प्रकाश से जगमगा उठा है। अपने हृदय में समाकर एम्मा उन ले गई है। फूलों का शृङ्गार उसने किया है। वह स्वयं भी एम्मा के शृङ्गार का जैसे एक फूल बन गया है।

फिर ऐसा एक आशङ्कित हो उठता। मधुर स्वप्न दुःस्वप्न में बदल जाता। मा ने आकर एम्मा का शृङ्गार नोच डाला है। बिगड़े फूलों को अपने पाँव में मा रौंद रही है। कमरे का प्रकाश अन्धकार बन गया है। एम्मा इस अन्धकार में ग़ोबर रह गई है। उसका कुछ भी पता नहीं चलता।

कभी-कभी वह देखता—एम्मा का कमरा पहाड़ियों में गिरा हुआ तब मार्ग बन गया है। दूर तक ऊँची पहाड़ियाँ चली गई हैं। न मार्ग का अन्त दिखाई पड़ता है, न पहाड़ियों का। अंधेरा ही-अंधेरा दिखाई पड़ता है। हाथ पकड़कर नहीं, घसीटकर एम्मा उसे लिये जा रही है। बिगड़ना न चाहकर भी वह घिसट रहा है। उसका अन्त क्षण दिखाई दे रहा है।

एकान्त वह करता उठता। दुःस्वप्न का भयभीत चित्त उसे सम्मोहित कर अपनी छात्र छात्र चला जाता। आँसू का सारा सारा स्वप्न देखने का फिर प्रयत्न करता। मगर न होने पर वह दुःस्वप्न ही स्वप्न में ही फिर से प्रयत्न करना चाहता था—एम्मा को पाने में उसे राह थी। अन्त में नहीं, वरु दिनों में एम्मा न पाने में राह थी। मार्ग ही ऐसा है जिस पर चलना नहीं प

था, जैसे दो बहनें हों। एक दिन आयेगा, जब उसका विवाह होगा और.....।

उसकी कल्पना एक आकार ग्रहण करने जा रही थी कि मा की आवाज़ आई—“चार्ल्स !”

एम्मा को सोया देख मा ने मुँह फेर लिया। टाँग पसारे आराम से रानी सो रही हैं। कपड़ों तक का होश नहीं। इसे क्या पड़ी है? जिम्मे ज़िम्मे की को लगती है, वही जानती है !

मा की आवाज़ सुन चार्ल्स चौंक पड़ा था। उसका सरपकाया मुँह देख मा का हृदय मसोस उठा। एम्मा के प्रति झुँझलाहट उतनी ही मात्रा में उभर आई। उसका हाथ पकड़ अपने कमरे में जाते हुए मा ने कहा—“चेहरा कितना उदास पड़ गया है। उसकी बात ही है। यह तो कहो कि चार्ल्स है, और कोई होता तो पता चल जाता !”

चार्ल्स का बिस्तर मा ने अपने कमरे में ही लगा दिया। जब वह सो नहीं गया, उसका माया सहलाती रही। रह-रह कर कण्ठ में चार्ल्स की ओर वह देखती और एम्मा को भला-बुरा कहती जाती थी। सुबह होने पर एम्मा को मुनाकर कहने लगी—“चार्ल्स पर बहुत बुरा, छान्नी का बोझ ले आया है। बेचारे का दम घुटा जा रहा और यह बोझ है कि श्लका होने में ही नहीं आता !”

बर्बा ग्विम्फर मा के कमरे में पहुँच गई थी। किसी चीज़ गिरने की आवाज़ आई। मा ने जाकर देखा, बर्बा ने गुलदान डाला है। झुँझलाहट सीमा पार कर चली। बोली—“क्या छोटें, बड़े, सजी घर का नाश करने पर तुले हैं !”

मधुर चित्र चार्ल्स की आँखों के सामने खिच गया। रीते गिलासों के खेल को कैसे वह अब तक भूला रहा। एम्मा के चिड़चिड़ा स्वभाव को मूल स्रष्टा जैसे आज उसकी पकड़ में आ गया। एम्मा के पान जाकर बोला—“शरबत पिश्रो गो एम्मा !”

मुनफर एम्मा एकाएक चीक उठी। बोली—“शरबत—कैना शरबत !”

“ताज़ा फलों का, एम्मा !” चार्ल्स ने कहा, “तुम्हें याद है एम्मा, रीते गिलास को मुँह से गगाकर तुम.....!”

“नहीं-नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए”, एम्मा ने कहा, “जाइयो तुम होंगे !”

अपने अतिरिक्त पीर किसी के धारे में एम्मा अब कुछ नहीं सोचना चाहती थी। ऐसी कोई चीज़ आँखों के सामने न पड़ जाय, इसलिए अपने फर्लंग से नीचे पाँव तक यह नहीं रखती थी। जिम गिड़की पर हथपट्टी बँधी रहती थी, जीवन ने अनेक हृदय जिम्मे रहते बंद करवा ली थी, उस पर भी उसने पकड़ा डाला दिया था। आठनाच की भी पुरानी चीज़ों को डगले घाटने कमरे से हटवा दिया था। कमरे में सिवाय उसके रॉड कोई न रहे, रॉड बंद बाइली थी, रॉड के लिए वह प्रयत्न करती थी। कोई चीज़ ऐसी नहीं रह गई थी, जो रॉड के उल्लास गये—एम्मा की ही नहीं, पीरों की भी। जो उसके कमरे में जाता, उसकी दाँव शरबत कमरे में फुफ्फुसकर एम्मा पर ही पड़ती थी।

चार्ल्स का नहीं तब मारना था, एम्मा और भी धाँसे रह गई थी। मुनफर अब धाँसे रह कर चार्ल्स के अलगाव से बच गई थी।

एम्मा के कमर की तरह चार्ल्स का मस्तिष्क भी शून्य हो गया। बहुत कुछ ज़िन्दा-पड़ताल करने पर एम्मा ही वहाँ दिखलाई पड़ती है। स्वयं चार्ल्स भी यह नहीं चाहता था कि सिवा एम्मा के वहाँ ओग के हों। वह फाड़ भी उसका नाम आता। उसके मुँह से सबसे पहली ओग सबसे अन्तिम बात एम्मा के बारे में ही सुनना चाहता। एम्मा के लिए उसका शुभ कामना पाने के लिए वह उसे चाय पिलाता था, और चाय में उसकी ख़ातर तबाला करता था।

इतने दिन के बाद एक नाटक मण्डली का उस रस्ती में आना हुआ। एम्मा के लिए शुभकामनाय हृदय में लिये रहने ही नहीं। चार्ल्स का प्रेक्षक का आश्चर्य करने के लिए वह जान लगा था। उसी में एक नया एम्मा का नाटक 'द्विवांग नायिका' रमा। कुछ नकु तो उसका ना प्रदर्शन था।

“उन्हें चले जाने पर चार्ल्स उठ खड़ा हुआ। नाटक मरहली की
मार्त उसे नहीं अच्छी मालूम हुई। एम्मा इसे अवश्य पसन्द करेगी।
अबिदम बदाता हुआ एम्मा के कमरे में पहुँचा। योला - ‘मार्त एक
नाटक मरहली आई है एम्मा। देखने चलोगी?’

चात्तु का अपना नाटक ही एम्मा के लिए बहुत था। उसी का देखने-देखते वह उबलता गई थी। दूसरे नाटक की बात सुनकर वह भुल्ला उठी। बोली—“मेरी जान छोड़ो नाचा” मैं कोई नाटक नहीं देखना चाहती !”

‘‘आन्ता’ इतने से ही निराश नहीं हुआ। बाबूजी की तरह मचलते उठकर से उसने कहा—‘‘नहीं एम्मा, तुम्हें खाना ही पड़ेगा। बहुत थकता नाटक है।’’

नाटक को नाटक बनाने के लिए अच्छा नागरिक होना ही चाहिए।
 नाटक बहुत सुखा हुआ। हमने पर श्रीर नाटक के मरदान के कद चकर
 उठने लगा है। नाटक का कोई खेज नहीं है। हमने निज यह
 बहुत निमित्त था। गाना लफ उठने पड़ती तरह नहीं गाना। देख
 दो पाने की पदार्थों ने लच्छा साथ गोर निज। जैसे जैसे बदल पर
 कभी दो अच्छा को पानी पान ले लाना। मरदान के नाम अच्छा तुम्हें
 देख—जहाँ अच्छा पाने के निज उठाने पर श्री सुने है। अच्छा
 भी एक पाना भागिपान दिखतम के पदार्थों पर चकर
 बनाने पाना।

(22)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नदी सागर लहरा गया। यह युवती उसमें डूबने-उतगने लगी। प्रेमी
उसे अपने हाथों पर उठा लेता था, कभी छोड़कर दूर हट जाता
था, सखि क नियोग की व्यथा से बल राकर फिर लौटता था युवती के
चरणों में बैठकर अपने जीवन की उत्सर्ग करने की कसम खाता था।
गुम्वन और दीर्घ निश्वासों से भाग भरडप भर गया।

प्रेमाभिनय देखने के लिए एम्मा आगे की कूक गई। सीधी हाव
बैठी उस समय, जब प्रेमी और प्रेमिका एक-दूसरे से विदा हो रहे थे।
गुम्वन और दीर्घ निश्वासों के चेत पर परदा गिर रहा था।

"इस प्रेम का क्या यही अन्त होना था!" दीर्घ निश्वास लेते हुए
चार्ली ने कहा।

"नहीं-नहीं," एम्मा के माँ ने निकला, "यह उसे छोड़ नहीं सकता।
यह उसका प्रेमी है।"

प्रेमिका का नाम था लूगी। एक लोड दो-दो उसके प्रेमी थे। दोनों
ने ने एक को उसके घरवाले भी जानते थे। ख्यात नहीं थी, लूगी उमरी के
हाथों में जायगी। तहाँ एक लूगी का सम्बन्ध था, यह अभी निश्चय नहीं
कर पाई थी, दोनों में से किसी को सम्बन्ध। जिने उसके घरवाले जानते
थे, उसे जाना गदज था। उसे देखने के कारण भी जायगी के लिए
जाने थे। मगर अपने घरवाले ऐसे जटिलों का निर्माण करने वाले थे—
यहाँ तक कि लूगी उसका उल्टी थी। जिस समय यह दुःख प्रेमी को
देखा-भावना चाहती थी, उस समय का जाता था लूगी।

दुःख प्रेमी का काफ़ी सम्बन्ध था। लूगी को जाने से लाने उसे
परिवारवालों को बाध को दूर करना था। एक परिस्थिति को भी जानना
था, जो लूगी के परिवार को एक निवे प्रेम के लूगी को लूगी का

हुआ था। लूमी के बारे में सोचना स्थगितकर इन कामाओं को करने की ओर ही वह जुट गया। दोनों प्रेमी प्रतिद्वन्द्विता में ग्रासे। दोनों का यह श्रेणी-मंघर्ष लूमी के लिए महँगा पड़ा। वह रोन पिसने लगी।

“मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता,” चार्ल्स ने कहा, “लूमी चाहते हुए भी ये लोग क्यों नहीं देख पाते कि छुरी और किमी के बीच स्वयं लूमी के गले पर ही चल रही है।”

एम्मा भुँभुला उठी। बोली—“चुप रहो तुम ! जो बात समझ में नहीं आती, उस पर राय देना फिजूल है।”

“नहीं एम्मा,” चार्ल्स ने कहा, “मैं समझना चाहता हूँ।”

इतना कहकर चार्ल्स चुप हो गया। प्रेम की समझने के लिए नाट्य को और भी ध्यान में देखने लगा। एम्मा अपनी बात कहकर चुप हो गई थी, चुप ही रही।

विवाह का दृश्य सामने था। दुल्हिन के चेहरे में लूमी का दर्द साफ़ साफ़ गपटी कर दी गई थी। चेहरा उसका पीला पड़ गया था। रिवाज के लिए नहीं, बलि देने के लिए जैसे उसका शरीर किया गया हो। एम्मा में यह दृश्य देखा नहीं गया। आँखें बन्दकर कुर्सी पर पड़ गई। उसके अपने विवाह का दृश्य सामने था। विवाह में पड़ते क चित्र भी बन्द आँखों के सामने सजीव हो उठे थे। चार्ल्स के आगमन ने उसके हृदय में जो उथल-पुथल मचा दी थी, क्या समझ में वह प्रेम की या ? हृदय की मायागुण कुड़कुड़ के सपने ही क्या प्रेम आता है ? कुड़की समझने का उसे अवसर नहीं मिला। उसके लिए वह अपने सपने नहीं दी। अपने घर की शून्यता उन्होंने उसे

समझ लिया था। चार्ल्स को देखते ही वह भी एम्मा को अपने न-
ज्दूर करने के लिए तैयार हो गये। अपने घर की सज्जात से उम्मीद
फले बाँधकर छुट्टी पाई। किसी भी तरह के पत्रों देने से कम समय बाद
शुरू हुआ। जेना था यह प्रेम और जेना यह पत्रों का आदान-प्रदान
कुलकुलाहट की समीप पर दोनों करते हुए। क्या हाँ हाँ या उम्मीदों का
उस समय कुछ भी नहीं समझ सही ?

आँखें बन्द कर लेने से जहाँ अन्तर्मन का सङ्घर्ष था। 'मैं क्या करूँ'
देगा, वह भी प्रिय नहीं था। जिसका सम्बन्ध नहीं था वह जीवन का
हुआ है। आँखें खोलने पर देखा — वह नाटक भी उसी जमीन पर नाच
रहा है। हृदय में संवेदन ने प्रवेश किया — 'वतने नायक है ये सब।'
परदों की उठा-गिरावट, उन पर बैठने के नास्तिक, नास्तिकी स्थितियों के
नष्टों जीवन-संगीत की सुविधा हम सभी नींद को भूलने का प्रयास
कर रहे हैं।

एम्मा भी घर नहीं छोड़ सकती। उसी के नष्टों का देखने नहीं।
नाटक उठाने का प्रयत्न किया नाटक ही नहीं चल रहा था। माया-
कालनाथों ने सिंगे हुए भू-मध्य की मूर्तियों पर एम्मा की आँखें टिक
गईं। जिसका वो स्वयं कहानियों के लिए बहुत-बहुत कर लेता था।
समस्याएँ होने लगीं करके अपने स्थिति पर एक समय भी हाँ नोकर
था। पात्रों की मूर्तियों में सजी हुई थी। एम्मा की हँसी के लम्बे-लम्बे
निःशब्द सन्निधि थे। एक छोटी-सी लम्बा देवी की सजा था। लम्बे कालों को
हस्त में धरा था था। एम्मा प्रेम में धीरे धीरे नहीं लगी थी। हँसी
का निरादर हो रहा था, वह लम्बे देव का चरित्र है वह रहा था — लम्बे
ने लम्बे लम्बे, लम्बे लम्बे लम्बे लम्बे लम्बे लम्बे लम्बे लम्बे लम्बे लम्बे लम्बे

गया। कुछ सँभल जाने पर उसने फिर कहा — 'श्रीग एम्मा सुनकर
मुझे ताज्जुब होगा, बाहर मैंने लिया कि देखा।'।

"कौन लियोन?" एम्मा ने आश्चर्य में पूछा वह समझ
प्रेमी युवक?"

"हाँ, एम्मा यही," चार्ल्स ने कहा वह ज़रूर ही होगा।
मुझे मिलने के लिए अभी आता ही होगा।

एम्मा सुनकर स्तब्ध रह गई।

(२१)

सगीत-प्रेमी युवक ने चांग रङ्गर लिया कि अब समाप्त हो गया था
सगीत की भीमी-सी दमक पहले उसे मल बना पता था। यद्यपि वह भी
पर भूल जाता था और दुनिया को भी। स्वयं मर्त्य भी इस भूल-मल्लेय
में गोंधर करी का करी पहुँच जाता था वह जाता फिर दीर्घ निद्रागत,
उसी को हृदय में लगाये, वह एम्मा से रिश हो गया था— जीवन
सगीत की गोज में।

गौन साग तर वह एम्मा से अलग था। एम्मा को तब उसे वह
गहरा आशी भी। शुरू-शुरू में अनिद्रा, बाद में तब तक। शुरू प्रेम
में शुरू प्रतीति में एम्मा बली गई थी। फिर भी इसकी दूर भाव कि वह
निगल हो जाए। उसे एम्मा की, दिखता भी था, वह फिर उसके
जीवन में भी प्रभाव होगा, सम्पूर्ण इच्छा उस का अलगाव कभी
विचारने लगेगी।

एम्मा को कुछ सँभलकर वह कहा था। एम्मा इन्हीं बातों को
हमारी गंधारी में रहा था। उसके हृदय में बहुत ही तेजी से चल रहा था।

जाया हो। एम्मा कुछ सकपका गई थी। 'आज ऐसा नहीं हुआ। उसने
अग्ने से खेला लिया था। बड़ा ही जानें उस भाग्यवान् बच्चे का।
मैं तो पुत्र हूँ। वह अब तटस्थ दृष्टि से देखने लायक स्थिति में
हो गई थी।'

लियोन ने कहा—“अच्छा, अभी तक वह बच्चा ही है। जान
लाया हो गया। तब तुमने पता मालूम करा था कि वह बच्चा था। उसे
बड़ा थी, पता नहीं तुममें श्रम भट्ट हो गया था। तब हम मरने का भाव
गुम नहीं मिली, जहाँ पहले था।’

“हाँ, एम्मा ने कहा, “तुमने जो बातें मारा समझ रहा है।
यदावत् के लिए, परों की भी उम्मीद नहीं है। तब हम अपने एक-दूसरे एक
नहीं काम तो नहीं रह गया है।’

एम्मा और घर बगल ही लियोन का जीवन नहीं रहा, वह उसने
अपना लिया। जीवन के उतार-चढ़ाव और काम के विभिन्न स्तर पर
एम्मा सामने आई। जीवन निरुपाम के उपहार के साथ एम्मा ने
कहा—“दुखी सामान्य के होते हुए भी दुखी रहने। जीवन का कोई
एक मर जाने शेष रह गया है।”

दुखी बाद दीर्घ-निद्राओं का निरुपाम बन्य। दोनों के साथ-
साथ निरुपाम भी सामने सामने नाच रहा। पहले अपने-अपने को
दुखी-दुखी जानने आता वह अपने को भूलता जा रहा है। दोनों
निर्भीक करते हैं। वे न लगी। दोनों के साथ-साथ वह निरुपाम
रहा, तब हमने जो कुछ सामने निरुपाम जो लगी भी चलने रहे
हो। दोनों का साथ न हो। दोनों के समान के हुए हमने निरुपाम
हो। जो निरुपाम का जो निरुपाम निरुपाम हुआ। निरुपाम के

“अपक किया जा सकता है। तुम्हें क्या बताऊँ एम्मा, मेरा जीवन म
मो...”

जीवन की श्रांतों में जीवन का अभाव देखकर निरोन चुप हो गया।
ताएँ अधिक उदास हो उठे एम्मा के मुँह का ओर बढ़ देखने लगा।
एड सनक में नहीं आता था, फिर तब एम्मा का साथ द। उसकी
उदासी में गलतार उठी समय यह उद जाना चाहता था। अपने
“तुम शरीर को गृह्य बनाकर वह पेश करना चाहता था।

वर्तमान रूप उसकी इस इच्छा का साथ नहीं दे मरा। “प्रतीति की
मूर्तियों को भग्न-पौद्धा यह पेश करने लगा—कपूर की देवी पर
नि कून चम रहा हो। पताही का प्राक्कण चीन एम्मा इन कूर्तों का
मोक्षार तरती थी। अतीत ही वर्तमान रूप मरा था और वर्तमान
अनपेक्षित मविष्य के सहारे नहीं मूल्य में जाकर ग्यो मरा था।

“अविश्व जीवन था हम लोग का !” निरोन ने कहा, “एक दिन
मे तुमसे मिलाने के लिए गया। कहा नहीं, तुम्हें पता क्या है ?”

“तुम्हें पता क्या है,” एम्मा ने कहा, “तुम को नहीं।”

“उम समय तुम अविश्व के आकारों समझे थे भी। शायद यही
लगा चाहती थी। दिना दृष्टि ही में जो अकारों समझे हो विन। इन
मोनों को एम्मा, क्या समझने था। तुम्हें क्या पता था कि मेना
था। लेकिन मरा, जो पता था, दो दो दृष्टि समझ हो लिए। मरने
का तुम्हें इच्छा करने क्या रहा। मोक्षार था, तुम्हें क्या पता था कि
का, कौन क्या है। मोक्षार था जो पता था। एम्मा मोक्षार भी पता
लगा था। नहीं तुम्हें पता था कि मैं क्या था। एम्मा मोक्षार
दृष्टि दृष्टि में दृष्ट नहीं। मैं मोक्षार हो गया था। एम्मा मोक्षार

एक एक दूसरा स्वर सुन रही थी—हस्ती के शरीर की आकृति का।
गर्जनों की देखने के बाद चार्ल्स घर लौट आया था।

(२२)

चार्ल्स के मदमों की आकृति को सुनना एम्मा के लिए उलझी था। वह
उलझी सीमा थी। यही तक अतीत बड़ मरना था। सीमा आ जाने
पर हथेली के आवरण से एम्मा ने लिपों पर स्पर्श का टुकड़ा दिया।
अतीत पीछे हट गया था, वर्तमान सामने था। निरीक्षण का मुँह उन्नी
तरफ मुला रह गया था। शरीरों की इस अप्रत्याशित छाना पर उन्नी
घाँघे आश्चर्यमिश्रित निरीक्षण प्रकट कर रही थी। निर्दिष्ट करने पर
मधुर स्वर ने एम्मा ने कहा—“तुम्हारे लिए यह ठीक है। तुम जान
ती। जीवन तुम्हारे सामने है। दागे बट रहने दो। तुम्हारे साथ
सिन्दूर म प्रगति में बाधा ही हूँगी। पर मैं नहीं चाहती।”

निरीक्षण को विजय नती दिया। एम्मा का मतलब क्या है? यह
माना क्या चाहती है। तुम दे, प्रगति ही उन्नी बूट शीत ही रह
था। एतनी उर में रहता गया। तुम समझ में नहीं आता।

निरीक्षण एम्मा से मुँह का आवाज निकले लगा। “तुम्हारे लिए यह ठीक
था। निरीक्षण का यह रहा था। निरीक्षण का यह रहा है, निरीक्षण
का यह रहा है, निरीक्षण का यह रहा है, निरीक्षण का यह रहा है।

निरीक्षण का यह रहा है, निरीक्षण का यह रहा है, निरीक्षण का यह रहा है,
निरीक्षण का यह रहा है, निरीक्षण का यह रहा है, निरीक्षण का यह रहा है।

निरीक्षण का यह रहा है, निरीक्षण का यह रहा है, निरीक्षण का यह रहा है,
निरीक्षण का यह रहा है, निरीक्षण का यह रहा है, निरीक्षण का यह रहा है।

एम्मा उसके पास आ गई थी—खुलना का आदरग्य आने लगा ।
 मगर शरीर उसने ठक लिया था । किमी की सामर्थ्य नष्ट हो जा उसे
 निवारण कर सके । अपने हृदय के आदरग्य में लेकर लियेन ने उसे
 और भी सुरक्षित कर दिया । सब तरफ से आश्चर्य का वह उठ गया
 था । तेज दृष्टि से पत्थर की ओर वह देखने लगा । जैसे पथर उसका
 निद्रावस्था हो । एम्मा की स्मृतियों को वह अपने भीतर मगाने है—
 फिर कहीं का !

एम्मा एक चौंकिर वह पीछे हट गया । वह पत्थर—जीवन का
 रंग पाने के लिए पत्थरों का सदास सेना होगा । नहीं, जीवन रंग
 ही है ।

वह पीछे हटता ही आया—दिशा-परिवर्तन कर आगे बढ़ा । कुर्सी
 के तालक अपने रुमान में धरने लगा । जो फूल मिटा था, उसे
 तोड़ दिया था । रुमान भर जाने पर एक जगह वह बैठ गया ।
 वे हुए कुर्सी के लगातार एक सुन्दरता उसने कहा जाता । किन्तु
 उसके हाथ में लिये उसे देखा जाता । फिर आगे बढ़ा । जानाया
 को कृपण एम्मा के घर की ओर दूर रहे थे ।

एम्मा उस समय अपने घर के दरवाजे पर खड़ा थी । वहीं अपने
 के लिए ही वह रुकने के लक्ष्य था । दरवाजे पर खड़ा रुकने का
 भूत नहीं, वहाँ अपने के लिए तेजा हाथ का खड़ा था । अपने को
 देखकर उसे हाथ में दृष्टि के लिए । पास अपने घर का खड़ा—
 'मायूस हो' है, 'ही' का खड़ा है ।

समझना कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ। जो चाहेगा वही भक के दत्ता चलेगा। इन हड्डियों में अब भी दम है।”

अपनी हड्डियों को देखाता और उभरता हुआ वह चला गया। एम्मा की पराध्वनि के साथ उसकी शब्द ध्वनि का आभंगन चल रहा था। लियोन अपने में सुभकना उठा। उसका गति ठाक तरह में स्या नहीं लगीन पर पड़ रहे हैं। क्यों वह दुर्गम न उभरता चलता है। और वह बूढ़ा—सहता है, हड्डियों में दम है। दम तो वधर म भी है।

मायने से आती गाड़ी के कोचमन का आवाज सुनकर वह चौंका। हाथ उठाकर गाड़ी को रोकने का इशारा किया। पूछा—
‘रहती जा रहे तो? गाड़ी जाती है?’

“हाँ, दूर,” कोचमन ने कहा।

“तो चलो,” उठते हुए लियोन गाड़ी में बैठ गया। गाड़ी अभी तक रुकी हुई थी। अचानक लियोन ने कहा—“चलो, चली नहीं?”

“हाँ चलता होगा,” दूर!” गाड़ी चलने लगी।

“तोचो चलो!” लियोन ने कहा और गाड़ी के चालीन लियोन ने गाड़ी चालने लगी। गाड़ी की गति ठाक ही रही। गाड़ी चलने में फिर धीमा—“चलो, चलो चलता होगा,” दूर!”

चालीन ने आवाज गाड़ी—“चलो, चलो चलो!”

गाड़ी चलता हुआ लियोन गाड़ी में बैठ गया। गाड़ी के चालीन ने कहा—“चलो, चलो चलता होगा,” दूर!”

गाड़ी के चालीन ने कहा—“चलो, चलो चलता होगा,” दूर!”

चिन्ता ने प्रवेश किया हृदय के मुख हो जाने पर । पथर का पथर न
समीप लाते उसे डर मालूम होता था । न केवल इतना ही, प्रत्येक फल
को भी वह पथर ही समझने लगी थी ।

नाटक देखने के बाद उनकी भावनाओं में फिर परिवर्तन हुआ ।
एक नई दृष्टि उसे मिली । वेदना ने उसके मुख हृदय न प्रवेश किया ।
पीड़ा का मायुर्य मूर्तिमान् हो उठा । उसने अनुभव किया—पथरों के
इस व्यापार में धिगारी हो नहीं, त्रास भी कुछ है जो हृदय का मार्ग
पा नकता है । पथरों को लेकर उसके हृदय में जो नर समा गया था,
वह जाता रहा । भय में काँपकर ही अब वह नहीं रह जाती थी ।
पथरों का हृदय रोजने के प्रयत्नों की शीघ्र उत्सर्ग भुगतार हुआ ।
प्रत्येक आश्रमों कोई पथर नहीं है । जीवन की ठोकरें गाने गाने हृदय
पथर की तरह गठोर हो गया है । पथर की इस कल्पना में सब का
हृदय उमड़ पड़ता । गाँवों के दरवाजे दरवाजे का यह अनुभव करता ।
दुःखों संलग्न का गगन दुःख क्षणों तक सेने की प्रेरणा हृदय में जाग
उठती । पीर-भीरु उसे विस्मय हो जाता, इसी क्षण की पुनः करने के
लिए परमात्मा ने दुःख के इस मार्ग में उसे छोड़ा है ।

दुःख में सुदृढ़ नर दुःखों में बस जागरे । तीरे मित्राणां है
स्थान पर आश्रमों काका उ के सुख में निराले लग । पथरों का जीवन
दुःखों का जीवन । ये सब समझे जायें था । जीवन-मार्ग काका में
उमड़ती रक्षा करने के लिए जानकी कीरी के उठे पथर के ही हैं । पथरों
में ही पथर का ही इस तरह में पथर का पथर हृदय में है । पथरों
का ही । पथरों का ही पथर के पथर का पथर का पथर का ही पथर का ही
पथर का ही ।

कलियाँ भी गुलदस्त में उलझी हैं। कुछ एम्मा भी हैं, गिनतन व न्या
जिनमें श्रोत्रों पर सुस्कराहट की आभा अभी छाने की लगी थी। गलत
कलियों की पत्तियाँ अस्तव्यस्त हो गई हैं, कच्ची कलियाँ पर भा घाय
दिखाई पड़ रहे हैं।

एम्मा के सामने विचित्र दृश्य था। वह व्यथित हो उठी। गिले पृत्तों में अधिक गलियाँ ने उसके हृदय में प्रवेश किया। इन गलियों की रक्षा करनी ही होगी। गिलकर मुग्ध होने कायदा किसी के निर्दय हाथों ने तोड़े जाने के लिए ही इनका अस्तित्व नहीं है। गिले पृत्तों को भी वह कलियों के रूप में ही देखने लगी। छाया बरकर रखने गुन-दन्ते को उठा लिया। अस्त-वस्तु पत्रियों को प्रसन्न उमंगियों में भेज-कर धातु का रूप देने लगी। हाथ हटा लेने पर पत्रिका फिर फिर पृत्तों थी।

[illegible][illegible]

था। कुछ न कर सकने पर बड़ा अटपटा लगा। एकाएक उसकी नज़र गुलदस्ते पर पड़ी। जरूरी काम को जैसे एक सहारा मिल गया। तब बढ़कर गुलदस्ते को उठा लिया। सुग्धभाव से बोला—“उठे मुक्त फूल हैं।”

चार्ल्स की आवाज सुनकर एम्मा चौंक उठी। चार्ल्स के हाथ में गुलदस्ता देखकर उसका सारा शरीर मरोड़ खा उठा। उसे लगा, चार्ल्स के स्पर्श ने गुलदस्ते के फूलों को और भी छिन्न भिन्न कर दिया है। तेजी से उठी। चार्ल्स के हाथ में गुलदस्ता ले लिया। गुलदस्त में पानी भरा। गुलदस्ते को उसमें रख सन्तोष की साँस ली।

चार्ल्स ने उसने पूछा—“कहिए, क्या काम है?”

“कुछ नहीं,” चार्ल्स ने कहा, “यही जानने आया था, क्या तुम्हारा जी कैसा है?”

“ठीक है,” एम्मा ने कहा। जरूरी काम में इस उपसंहार को दूर से लगाये चार्ल्स चला गया।

अनिशान मगार ने ऊपर उठकर जीवन ने एम्मा के लिए एक आदर्श रूप प्रयोग कर लिया। मगार की विगारी हुई वेदनावाली। मनेटर उसके चरणों में एम्मा अपने अस्तित्व को उत्कर्ष पर ला चार्ल्स थी। अल-विश्व हृदय आँसू बनकर बह चला था।

जि जाय, इस डर से जीवन से अपने को दूर रखती थी, जीवन उनका सखापागर बिखर नहीं जाता था। विगरे जीवन को समेटकर एक रूप उगने दे दिया। जीवन की विगरी वेदनाओं ने आदश का नींव उगने वाली थी, आसुओं से सींचकर इस नींव को हट उगने पर बिना था। इसी ओर उनके सारे प्रयत्न अब निर्देशित हुए थे।

मृत्यु की कल्पना अब सुरावली हो उठी थी। मरार की समग्र वर गांधी से मुक्त करनेवाला एकमात्र आरूपक आचरण वह बन गई थी। सम्पूर्ण रूप ने अपने शरीर को शिथिल होकर मृत्यु का आलिङ्गन करने का प्रत्येक बार उगने प्रयत्न किया था। जैसे जैसे वह अपने ऊपर को ढीला छोड़ती थी, एक दिवस ज्योति मर पावति होती जाती थी। उसे मालूम होता था, वह ऊपर उठ रही है—ऊपर उठती गयी है।

वह अब कुछ सीने कुछ भी इस दुनिया में बन्धनों से बंध नहीं हुई। एक गोमा तक ही वह ऊपर उठ पाती थी। उनको इस गदगद के ओर ऊपर उठने के प्रयत्न को उपेक्षा की भावनाओं से दूर करने देना मुश्किल था। वह हार भी नहीं उभर पाती थी। आसक्ति उठती थी, उठती गदगदता उपेक्षा की इच्छा पर ही खड़ी होती थी।

ऐसी स्थिति में वह ही स्वयं के सीने उठाना यह दुर्गम हो। किसी दूसरी को उठाना सम्भव हो सकता था। वह को जाने वह मायूम हो गई, वह ही उठने को नहीं है। इस ही उपेक्षा के कारण वह अपने ही सीने उठाने को नहीं कर पाती। अपने ही सीने उठाने को वह ही उठाने को नहीं कर पाती। अपने ही सीने उठाने को वह ही उठाने को नहीं कर पाती।

पतनों गहरी उपेक्षा होती थी, उतना ही गहरा स्नेह। तीर्णी हर्ष
माय माय मंद स मंद गहना की वर्षा वह कर सकती थी।

ग्रपना गमा तर एक दिन वह नाराज हो उठी। कोई काम नहीं था। माया ने उसे दिया था, वह टालमटोल कर रही थी। तब तक माया अपने हाथ में उतावली हो रही थी। शाम तक के लिए माया ने फिर माया ग्रपने कमरे में चली आई।

“रामा जी यह दाम्नी के पास गई। बोली—“काम भरा
यह रंग - राह, क्या”

‘‘... नर + प्रतीक्षा कये बिना उमने फिर रुहा—’’

१५५५ भा. ग्रन्थ कमर म चली आई ।

नियोजने में एम्मा तो और भी प्रागे बढ़ना चाहती थी। लेकिन दाम्पत्य संबंधों तक घुस-घामकर रह गई। हृदय की निधि समझ पुष्कर तों उठाकर अन्तर्गत अक्षय में दामी ने छिपा लिया। बड़े प्रेम ने पुष्कर का प्रागे प्रेमी मित्र के सामने उसने रक्खा। उत्साह ने इस प्रेम की भेंट का उसने स्वागत किया।

दुःखान्-मालिक को इस पुस्तक पर नजर पड़ गई। अपने नीकर में
 वह पहले से ही फँचते रहते थे। इस पुस्तक को देखकर बहुत विगड़े।
 अपराध के साथ अपराधी को उन्होंने पकड़ लिया था। लगे सोर सोर से
 उसे मत्ता-धुगा करने! दो-चार आदमी भी जमा हो गये, उनकी संख्या
 बढ़ती ही जा रही थी। उनकी भी देखाकर दुःखान्-मालिक ने पुस्तक
 का नाम लेते नहीं बनता था। इधर-उधर जा रागे बरसे थे। ये सब
 रहे थे—“बदमाशी तो इसरी देरी, छिन्ने पर लेपित जाना भी हमें
 नहीं आता। आम के अचार का लेपित क्या दिन हमका ही लेता
 पर, हमका का नमक के छिन्ने पर, नमक के छिन्ने का नीली पर !
 दुःखान् का मर्यादाग करने पर मुक्त है, बदमाश कहा था !”

नीकर भी प्रकटी गुरु इन्द्र ने मेला कराया था । एवमा की भी
इसने सुलभा भेजा था । एवमा ने प्राण्य भेजा—दुर्जन ने एक भाग
मारी है । बुद्ध समझ में नहीं आता । दुर्जन मज्झिम से हट्ट—'किं
विह वासाय मा मुमे' "

॥ विष्णुसिंह मुकुन्ददास का जन्म ११००—सुदूर पूर्व में है।
 उनके माता भी मुकुन्ददास नहीं थे। वे एक साधारण की हैं।
 वे एक ही, वहीं जन्म है। वे एक ही हैं। वे एक ही हैं।
 वे एक ही हैं। वे एक ही हैं। वे एक ही हैं। वे एक ही हैं।

नहीं। जो विवाहित है, बड़े हा गये है, उन्हा क साथ है, उन्हा क साथ
जाहिण।"

दूकान-मालिक ने चार्ल्स ने पुस्तक का ले ली। उन्हा क साथ
कह लोटा। एक हाथ में उसके पुस्तक था, दूसर म उन्हा क साथ
उन्हा के पास से आया था। लिखा था - उन्हा क साथ है, उन्हा क साथ
गया है। मैदान में डाल पीत पीत उन्हा क साथ है, उन्हा क साथ
उत्तमर घर लाये। उन्हा को आता उन्हा क साथ था, उन्हा क साथ
गो रही।"

लिना के दोस्तान् ही बात सुनकर चार्ल्स स्तब्ध रह गया था। स्तब्ध
रहने का एक कारण और भी था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था,
लिना पर इस दुरादृष्ट प्रण की कैसे प्रकट हो सकेगा। लिना का
स्वभाव ही और बड़ी सावधानी से प्रण पर इसे धैर्यवान् साधना था।
उई बार उम्मेने प्रकट करना चाहा, लिना का स्वभाव ही ऐसा था।
गो नहीं, प्रण का दुःखी स्वभाव ही प्रकटिमर प्रकट हो सकेगा भी
लिना का नहीं।"

शब्द प्रकटिमर प्रकट हो गये थे, उन्हा क साथ है। उन्हा क साथ है,
त भा उन्हा क साथ है, उन्हा क साथ है। उन्हा क साथ है, उन्हा क साथ है,
ही उन्हा क साथ है, उन्हा क साथ है। उन्हा क साथ है, उन्हा क साथ है,
उन्हा क साथ है, उन्हा क साथ है। उन्हा क साथ है, उन्हा क साथ है,

प्रण का स्वभाव ही ऐसा था, उन्हा क साथ है, उन्हा क साथ है,
उन्हा क साथ है, उन्हा क साथ है। उन्हा क साथ है, उन्हा क साथ है,
उन्हा क साथ है, उन्हा क साथ है। उन्हा क साथ है, उन्हा क साथ है,
उन्हा क साथ है, उन्हा क साथ है। उन्हा क साथ है, उन्हा क साथ है,

(२५)

मा को देखकर चार्ल्स को आँखों में आँसू आ गये । अपने पिता से वह
छटा दूर-दूर ही रहा, इस बात का उसे बड़ा दुःख था । जीवन में अपने
पिता के स्पर्श को इतने निकट से उसने पहले कभी अनुभव नहीं किया
था । पिता की स्मृति के साथ-साथ उसके आँसुओं की मात्रा बढ़ती
जाती थी । चार्ल्स को रोता देख मा का हृदय भी उमड़ आया । पात
की उपेक्षा के दारुणिक रूप को इतने दिनों तक वह क्यों नहीं पहचान
गयी ? रह-रहकर चली वह सोचती थी । बेहारा होकर न गिर पड़ने
तो अपने श्वाप के उसके पास आते । तिसी को उठाकर लाने की इच्छा
रह नहीं पड़ती । गोदी में मिर लिये तीन दिन तक वह बेठी रही । एक
पक्षी के लिए भी अपना सिर उठाकर गोदी में उन्हाते आग नाँ
किया । न जाने कौन मुरी रहा थी जो वह इतने दिनों तक बाहर भट-
काँ रहे ।

पक्षी की प्रत्येक गत मा के लिए आश्चर्य हो उठती थी । पक्षी के
साथ-साथ पक्षियों की भाषा सम हो चली, पक्षों की आवाजें । बाँों
गौर काम, दोनों साथ-साथ चलने लगे । पक्षी कोच में आकर पक्षी
नहीं बैठे थे । पक्षी का जीवन, उस जीवन का सम्पूर्ण दुःख, एक पक्षी
कारिक कहानी बन गया था । पक्षी की कहानी-कहानी में साथ-साथ
पक्षियों की कहानी आती थी । कहानी में साथ-साथ पक्षी की कहानी के
पक्षी की कहानी में नहीं आती थी । और वे साथ-साथ एक-दूसरे
कहानी में भी आते जाते थे । पक्षी कहानी के पक्षी में पक्षी कहानी
के लिए पक्षी कहानी कहानी । पक्षी की कहानी कहानी कहानी के
साथ पक्षी कहानी कहानी ।

वै आने थे, दृष्टि रोजने लगती थी एम्मा को। एम्मा के सामने आने पर वे कहते—“मुनकर बड़ा दुख हुआ। रुक भी हो, बड़ो ने साये में बड़ा बरकत होती है। मेरी मा जय मरी थी, मे कार्णो बड़ा हो गया था। फिर भी बच्चे की तरह विनायक मिलकर गेने रागा।”

कुछ देर दूरदूर बह भूमिगत बाधना शुरू करता। अन्त में
 पता—“सिवा जी ने ठीक ही किया, जो न्य कुछ तुम्हारे नाम छोड़
 गये। लक्ष्मी का कुछ भरोसा नहीं। बुर्ग सोइसत में पप्पर सारे कर
 धरे पर पानी फेर सकते हैं। बहू के नाम ने रहेगा तो फिर भी बहुत कुछ
 बन जायगा। बहू ही घर की लक्ष्मी होती है।”

जय-राज चालर्स के पास यह जाता था। शुरू-शुरू में चालर्स उसकी प्रशंसा देकर काम उठता था। धीरे-धीरे चालर्स अन्नरस हो गया। उसने देखा—प्रोबोर्ट खीन लगाने की बात कहना जैसे यह भूत गया है। यहाँ करता भी है तो इधर-उधर फी। चालर्स ने फिर ट्रेडिंग गजट—अन्तर्-विज्ञता आगमन बनकर यह जाता था। वह सैन्ट स्ली का दास था। उसे मान्यता हो जाता था। जोड़े करना देना नहीं, जो वाना होने के बाद चालर्स ने काम पहुँचायी हो।

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

‘श्रीज के लिए और क्यों यह सब कहा जा रहा है ? ऐसा कौन जान है
 जो उसने जाननी चाही थी, चार्ल्स की सम्झन में जो नष्ट था रही था ?
 जो देने पर भी एम्मा कुछ पता नहीं लगा पाती थी ।

एम्मा के सामने आते चार्ल्स को दर लगता था। बच्चाब तरन कइ दिन हो गये। एम्मा ने भी यह अभाव प्रगट। दबे पाँव चार्ल्स के कमरे में भाँककर वह देखती—संगजा पर झुका हुआ चार्ल्स कुछ देख रहा है। तितनी देर तक वह खड़ी रही। उसे प्यासका दाने लगी—वह फागलों को देख भी रहा है या नहीं। कमरे की स्वच्छता उसे बड़ी दीर्घात्मा भावूम हुई। उसने रहा नहीं गया। कमरे में उसने प्रवेश किया। बोली—“सच सच बताओ, तुम एते क्यों हो रहे हो ?”

ऐसा ही आनन्द सुनकर चालूँ पीर उठा । फिर अपने पै
 पैरों पर बोला—“रुद्ध नहीं, यों ही एक बात बाद में गई थी ।
 उसी को लेच रहा था ।”

“नदी”—एम्मा ने कहा, “मैं तुम्हारे दिमाग में। यह बताया,
साथ क्या है।”

'कुतः, मनी, एतन्ना ।'—जातोंने कहा, 'मनी मरना ते भावने ।
मोचला भा, पिता लो नी . ।'

‘‘ਭੁੱਖੇ ਖੁਸ਼ ਨਹੀਂ ਜਾਇਦ’’—ਦੁਸ਼ਮਣ ਤੇ ਭੈਣ ਨੂੰ ਹੀਂ ਕਰਾ, ‘‘ਜਦ
ਭੈਣ ਨੂੰ ਭੁੱਖੇ ਨਹੀਂ ਕਰਾਇਆ ਤਦ ਭੈਣ ਦੁਸ਼ਮਣ ਨੂੰ ਹੀਂ ਕਰਾ’’

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

रहती थी। एक दिन था जब वह टूटी टांगों को सीधी करने के लिए
 में रोवा करता था। उसका हृदय व्यथित हो उठता था जब रस्सी
 को गेटेन जाल चलते देखता था। आज वह मोचता था - रस्सी टूट
 है इन लोगों की। एक घड़ी के लिए भी निश्चल जाना नहीं जानता।
 कर दंगो, तब चलती ही रहती है।

उसके कानों की खटखट और भी बढ़ जाती। हृदय की धड़कन भी उसका साथ देती थी। मालूम होता था, हृदय नहीं किसी के पाँचों ओर घूम रहा है। उसका सिर झुकता चढ़ता। कानों में शब्दों का संगीत बज रहा था।

इस भी उसकी समझ में नहीं आ रहा था। अग्रजगन्त स्वर ने
 आने पर सहाय दिया। एम्मा के मुँह पर अपनी दृष्टि की बाँध
 की कुछ उसने अपने से दूर कर दिया। आँखों के नाम से एम्मा का चेहरा
 मान किसी सुदूर समीप का आभास कर ले था। एम्मा एक उम्र
 में प्रेमी सुख की बाढ़ हो आई। किसी शक्ति ने यह ज्ञान था,
 कि जो राज भी जीवने की परत नहीं होगी थी। यह ज्ञान था,
 कि पैदा रहना था। ऐसा नहीं कि कुछ दिनों में एम्मा, अज्ञान
 में डूब गई हो उठे।

[illegible]

नदिनतेवाले सुनकर चीक उठते थे, कौतूहल उनकी आँगो में भर जाता था। दन्द गार्ज़ की कल्याना ने जैसे सभी को तोय लिया था।

बन्द गाड़ी पहुँचती थी नगर ने बाहर, प्रकृति की गोद में। ऐसी स्नेहमयी गोद उन्हें पहले कभी नहीं मिली थी। प्रकृति की गोद को गहरा उन्हें मालूम होता, उनकी अपनी गोद भर गड़े हैं। भरे प्रजाल और उन्मुक्त हृदय को लिये बन्द कमरे में लौट आते। एक नये सगीत ने ज़मरा भर जाता।

नौरा-विहार के लिए एक दिन दोनों भये। चांदनी रात थी। गन्दन को उठाये, हाथों को हृदय पर रखने, एम्मा चाँद की ओर देख रही थी। नौरा में पड़ा हुआ एक लाल रीता तिरपों को मिल गया था। उगी ने यह खेल कर रहा था। तभी उँगली पर लपेटता था, कभी मोन झलता था। एक छोर पर दूर दूर में उसे लहराने की लय था। जहाँ चलाते-चलाते माँझी की नजर फिरे पर पड़ी। देखा वह रौना—“दो दिन हुए बाद, जी, इसी नौरा पर कुछ लोगों को मिले हुआ था। सभी उजान में। दो हंसवा, चिल्लाया। एक लड़की को वहीं ले थे पाद लाते थे। लड़की की दाँव में ली कुछ मुँह में उठाया में एक लड़की बड़ा करवा लगा। पैरों में सुन्दर, लहराने, रंगे सभी दृष्टी हो थी। भयानक कर रहे वही दृष्टा था। सब की जो ऊपर उजान में था। भाँव पर भिन्नता उसे देते थे। दृष्टा वही सुनाई गया था—“दो रात, सभी वही थे, सुन्दर ! सब रोतने से नहीं लगेगा”

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

वह ढबा पड़ा रहा। जितना ही वह यह सब सोचता, उतना ही एम्मा के गाने की प्रशंसा करता। देखते-देखते वह समय भी आ गया, जब एम्मा का संगीत-प्रेम गाने की चार कड़ियों और चार्ल्स की प्रशंसा मिला गया। संगीत का कहीं पता नहीं था, प्रशंसा चारों ओर सुनाई पड़ती थी।

प्रशंसा का यह प्रचार भी एक सीमा तक चलकर ठहर गया। अपनी ओर से चार्ल्स अब कुछ नहीं कहता था। एम्मा के संगीत-प्रेम की प्रगति का उल्लेख होने पर वह उत्तर देता — ‘हाँ, इधर गाना रुक कर दिया गया है। उत्साह में एम्मा ने अपने गले की ओर ध्यान नहीं दिया। उसके गले की नसें झनझना उठीं। योग भी तब पड़ता है तो दुगुने लगता है।’

एम्मा से मिलने पर कहता — ‘अपने को पहचानकर भी तुम नहीं पहचानती हो एम्मा! यह तुममें बड़ा ऐंठ है। दो घड़ी जी बरत जाना था, वह भी तुमने बन्द कर दिया।’

दूरान-मालिक का चार्ल्स के जीवन में घनिष्ठ सम्बन्ध था। संगीत के अभ्यास का प्रभाव उस पर भी पड़ा। चार्ल्स की बात को और भी स्पष्टकर वह कहने लगा — ‘यह तो प्रकृति ही देन है। यों तो रोना गाना सभी को आता है। लेकिन संगीत—वह सभी के वश ही नहीं। यह जीवन की निधि है। इसका उपेक्षित करना ठीक नहीं। अतः इसका प्रचार आवश्यक बत रहा है। हमारा काम है, जो लोगों का जीवन तो बीत चला। अब क्या गायेगे और क्या बतलेंगे? लेकिन अपने काम-वृत्तों के निष्ठ तो कुछ करना ही होगा। देना तो हमें पता है। माँ को ही संगीत से रुचि न होनी तो बेटी में इसका अभाव कदा और भी प्रकट है।’

चार्ल्स ने बिदा होने के बाद वह अपनी दूकान पर चला जाता।
वहाँ को बुलाकर कहता—“मुनती हो, लड़कियों के नाचने-गाने का
प्रबन्ध करने में डाक्टर साहब जा रहे हैं। डाक्टरी तो गड़े भाड़ में नहीं
एक काम अब रह गया है।”

पत्नी आँगें फाड़कर देखती रह जाती। यही एक रूप उमरी आँगों
का रह गया था। बच्चों के रोने-चिलाने की आवाज़ सुनकर फिर वह
बर्ली जाती। दूकान-मालिक डिब्बों के लेखिन पट-पटकर उमरी गर्द
झड़ाना शुरू करता। बीच-बीच बड़बड़ाता भी जाता था—“नाचने
गाने की स्त्रीम चल रही है। डाक्टरी हाँ चलाये तो कुछ बात भी है।
जना अपना भाता भी हो, दूसरों के पेट में भी कुछ पड़ जाये।”

बहुत कुछ सोचने के बाद चार्ल्स को एक दिन ध्यान आया—स्त्रियों
की बातें तो इतने दिन में चल रही हैं, स्त्रीत किम्वे स्त्रीतें चलेगा,
पट बगी न सोचा। नाटक के एक गाने की चार स्त्रियों को लेकर
मैगन भी आदिार रहा तब जायेगा। न कोई पुस्तक है, न शाला, न
तलाक; किम्वे स्त्रीतें एम्मा आगे बढ़े।

वह सोचकर चार्ल्स को बड़ा सहताता हुआ। उसे समझ नहीं
आता था कि उसकी सम्भारों का क्या हो गया है। सुन्याप जगहों पर
के तारे में जानकारी प्राप्त करने का शुरू की। सब कुछ जान लेने पर ही
एम्मा में सुहा करेगा।

कुछ दिन बाद उसने एम्मा से मिली का निमन्त्रणा। घर
में तौर तान पट्टों में शुरू करने लगी। गानों के बस मुन्ते निजा
ले। नाच खेलों की हवी भी करने आये। एम्मा की कुछ मन्त्र में
भी लगी। चार्ल्स का जलाने दली बनी भी मुन्ते। घर में सुन्त-
वा. १०

कर एम्मा ने कहा— 'मुझे कुछ नहीं चाहिए। सगीन मुझे मीसवना है।'

अवश्य ही कहीं कुछ भूल हो गई है। उसकी उपेक्षा में एम्मा जा मुग्ध गया है। रुभी काई भोंका आने पर लहरा उठता है, जिसे मुग्धकर रह जाना है। मोचन-मोचते चाल्स' एकाएक गिर उठा गया। सूच उस मित गया। अपने मन में सब कुछ ठीक करने के लिए उसने एम्मा से कहा— 'लियोन की अब तक कोई खबर नहीं मिली।'

'एम्मा तो नहीं हा सकता,' एम्मा ने कहा, 'अवश्य ही उसने कुछ किया होगा।'

'लोकन एम्मा,' चाल्स' ने कहा— 'एक बार जाकर तुम क्या न आओ।' तुम्हारा घूमना भी हो जायेगा, काम का भी पता चलेगा।'

'अच्छा बात है, कल सुबह चली जाऊँगी,' एम्मा ने कहा। चादर आँट मोने का प्रयत्न करने लगी। चाल्स' के हृदय का रोम घेने उठ गया था। सहज ही नींद ने उसका निमग्न कर लिया।

(२८)

अंत में एम्मा उठ गयी हुई। ठाम्मी अब तक पड़ी मो ली है। उसे एम्मा ने जगाया। चाय तैयार करने के लिए उठने के लिए भी उठे। एम्मा ने कहा— 'गड्डे। चाल्स' सहज ही नींद में न आ पाए। एम्मा ने इस मुन्हादट का दूसरा कारण देखा नहीं मिला। सब कुछ ठीक करने के बाद दूसरी को

ते गाड़ियों के अड्डे पर पहुँचकर सबसे पहले चलनेवाली गाड़ी पर बह
गिरा हो गई।

चार आदमियों के बैठने की गाड़ी में जगह थी। भगते देर न
लगी। चाबुज हाथ में लेते ही गाड़ी के पहिए गड़गड़ाते हुए चलने
लगे। सबके दोनो ओर दूर तक पेड़ों की इतार चली गई थी।
गिरणी पर झुककर एम्मा देखने लगी। इस साफ राँवद भूली नहीं
थी। सभी कुछ उसमें परिचित मालूम होता था। शन सह आनेवाला
है, इसके बाद वह और फिर—पहले ही से वह सब कुछ जान लेगी
थी। कभी-कभी अनजान बनकर आनासाह ही कम ही उलट-पुलट कर
भी देखती थी। आँखें बन्दकर प्रतीक्षा करती, शन सह आनेवाला
है। खोला कर देखते पर मालूम होता, वह तो कुछ और है। इसके बाद
मानूस परना चाहती, कहीं उसमें भूल हुई। कभी मूला पत्ती पाद में
आ जाती थी, कभी आँखमिचीनी जैसा खेल भी उसके माथे आ जाता था।

प्रकाश अभी अन्धरी तरह फैल नहीं पाता था। ठीक पन्द्रहवाँ भी
इसे नहीं कहा जा सकता। दानों का जैसे कमिलार बाल गढ़ा था। भूय-
मुनेरा की खरिद इसने और भी आकर्षक हो उठी। जिसकी निर-
म्यता भी आकर्षक रूप में सामने आने लगे। तन्मूर्त नदन एक विश-
ल और शास्त्र विद्वान की तरह मान्य हो गया। निराला पदस्थ-पदस्थ
गता, इस निराला का कोई एक पदस्थ शरीर होकर ऊपर आ गया
है। तब के निराला पदस्थ ने एक निराला का कानून बना दिया
है। निराला पदस्थ। मुझे के बाद एक ही पद में निराला हो ने। निराला, एक
के बाद एक, निराला भी करने लगे।

निराला का कानून निराला होकर आ गया है। निराला

पर जैसे मकान-ही-मकान रह गये थे। एम्मा का जी भारी हो चला। आँखें बन्दकर जीवन की कल्पना वह करने लगी। ऊँची-ऊँची दीवारें अब उसके सामने नहीं थी, किसी का दीर्घ निःश्वास वे अब बना रही थी। दीवारों की ओट में छिपे भयानक जीवन की अनेक कल्पनाएँ उठीं और चिमनी के धुएँ में अपना आकार खोकर विलीन हो गईं। एम्मा का जी घुटने लगा। खिड़की से बाहर उसने आधा शरीर निकाल लिया था। इसी समय घोड़े पर चाबुक पड़ा। गाड़ी की गति तेज हुई। एम्मा के बाल लहराकर अस्तव्यस्त हो हवा में उड़ने लगे।

गाड़ियों का अट्टा आगया था। एम्मा उतर पड़ी। एम्मा ने आँखें कपड़े को ठीक किया, हाथ के दस्ताने बदल डाले, पाँव में नए भाँवले बूते पहने। कंधे पर पड़े शाल को सँभालते हुए वह आग गई। प्रकाश के साथ-साथ उसने नगर में प्रवेश किया। सड़कों की सजावट खूबसी थी, दुकानों के ताले खुल रहे थे। रात की झुमारी उतार कर नगर का जीवन सामने आ रहा था। एम्मा का साहस नहीं हुआ कि आँखें खोलकर उसे देखे। कुछ देर नीची दृष्टि रखे चलती रही, फिर एक गली में वह घुम गई। जीवन के इस जागरण को आँखों की आँसू का बरत चलना चाहती थी। उसे पता भी नहीं था कि बन्द कमरे और बन्द सड़कों को छोड़कर नियाँन भी इस अँधेरी राती की शरण में चला है। कुछ दूर चलने पर दोना की भेंट हो गई। आनन्दमित्र मित्र ने अनिगदन को आश्चर्यमय बना दिया। दोनों एक-दूसरे की ओर देखते लगे। अनिगदन पूर्ण हो गया।

मित्रों के कमरे की अब आसन्न हो गई थी। मरगती की लाली का बरत चल रहा था। नौका के आसन्न हो कर वह बन्द हुआ

था। परदे भी बदले हुए थे। उनके मस्त्रमली लाल रंग का एम्मा
 गैसती रह गई। लियोन मस्त्रमली परदा न पास नहीं एम्मा का न
 रहा था। न जाने क्या सोचकर वह भुका जा रही थी। मस्त्रमली
 परदा में छिपकर वह सो जाना चाहती थी।

कमरे को एम्मा ने सार्थक कर दिया। कुछभार ने दाँना, एम्मा और लियोन, कमरे को देखने लग। दीवारगोरी पर चुन्नी हूँ दो घोषियाँ रखी थीं। फाफो बड़ो थी। प्रमोश पारन शनैर गंगा की शाना उन पर झगाक रही थी। एम्मा ने उन्हे उठा निगा। वह धूलना करने लगी—नीपियो ने भीतर दिपे जीवन की। उष्मात लक्ष्मी की समर एगनि उने रकट गुनाह पड़ रही थी।

[illegible]

1. 1947-48 2. 1948-49 3. 1949-50 4. 1950-51 5. 1951-52 6. 1952-53 7. 1953-54 8. 1954-55 9. 1955-56 10. 1956-57 11. 1957-58 12. 1958-59 13. 1959-60 14. 1960-61 15. 1961-62 16. 1962-63 17. 1963-64 18. 1964-65 19. 1965-66 20. 1966-67 21. 1967-68 22. 1968-69 23. 1969-70 24. 1970-71 25. 1971-72 26. 1972-73 27. 1973-74 28. 1974-75 29. 1975-76 30. 1976-77 31. 1977-78 32. 1978-79 33. 1979-80 34. 1980-81 35. 1981-82 36. 1982-83 37. 1983-84 38. 1984-85 39. 1985-86 40. 1986-87 41. 1987-88 42. 1988-89 43. 1989-90 44. 1990-91 45. 1991-92 46. 1992-93 47. 1993-94 48. 1994-95 49. 1995-96 50. 1996-97 51. 1997-98 52. 1998-99 53. 1999-00 54. 2000-01 55. 2001-02 56. 2002-03 57. 2003-04 58. 2004-05 59. 2005-06 60. 2006-07 61. 2007-08 62. 2008-09 63. 2009-10 64. 2010-11 65. 2011-12 66. 2012-13 67. 2013-14 68. 2014-15 69. 2015-16 70. 2016-17 71. 2017-18 72. 2018-19 73. 2019-20 74. 2020-21 75. 2021-22 76. 2022-23 77. 2023-24 78. 2024-25 79. 2025-26 80. 2026-27 81. 2027-28 82. 2028-29 83. 2029-30 84. 2030-31 85. 2031-32 86. 2032-33 87. 2033-34 88. 2034-35 89. 2035-36 90. 2036-37 91. 2037-38 92. 2038-39 93. 2039-40 94. 2040-41 95. 2041-42 96. 2042-43 97. 2043-44 98. 2044-45 99. 2045-46 100. 2046-47 101. 2047-48 102. 2048-49 103. 2049-50 104. 2050-51 105. 2051-52 106. 2052-53 107. 2053-54 108. 2054-55 109. 2055-56 110. 2056-57 111. 2057-58 112. 2058-59 113. 2059-60 114. 2060-61 115. 2061-62 116. 2062-63 117. 2063-64 118. 2064-65 119. 2065-66 120. 2066-67 121. 2067-68 122. 2068-69 123. 2069-70 124. 2070-71 125. 2071-72 126. 2072-73 127. 2073-74 128. 2074-75 129. 2075-76 130. 2076-77 131. 2077-78 132. 2078-79 133. 2079-80 134. 2080-81 135. 2081-82 136. 2082-83 137. 2083-84 138. 2084-85 139. 2085-86 140. 2086-87 141. 2087-88 142. 2088-89 143. 2089-90 144. 2090-91 145. 2091-92 146. 2092-93 147. 2093-94 148. 2094-95 149. 2095-96 150. 2096-97 151. 2097-98 152. 2098-99 153. 2099-00 154. 2100-01 155. 2101-02 156. 2102-03 157. 2103-04 158. 2104-05 159. 2105-06 160. 2106-07 161. 2107-08 162. 2108-09 163. 2109-10 164. 2110-11 165. 2111-12 166. 2112-13 167. 2113-14 168. 2114-15 169. 2115-16 170. 2116-17 171. 2117-18 172. 2118-19 173. 2119-20 174. 2120-21 175. 2121-22 176. 2122-23 177. 2123-24 178. 2124-25 179. 2125-26 180. 2126-27 181. 2127-28 182. 2128-29 183. 2129-30 184. 2130-31 185. 2131-32 186. 2132-33 187. 2133-34 188. 2134-35 189. 2135-36 190. 2136-37 191. 2137-38 192. 2138-39 193. 2139-40 194. 2140-41 195. 2141-42 196. 2142-43 197. 2143-44 198. 2144-45 199. 2145-46 200. 2146-47 201. 2147-48 202. 2148-49 203. 2149-50 204. 2150-51 205. 2151-52 206. 2152-53 207. 2153-54 208. 2154-55 209. 2155-56 210. 2156-57 211. 2157-58 212. 2158-59 213. 2159-60 214. 2160-61 215. 2161-62 216. 2162-63 217. 2163-64 218. 2164-65 219. 2165-66 220. 2166-67 221. 2167-68 222. 2168-69 223. 2169-70 224. 2170-71 225. 2171-72 226. 2172-73 227. 2173-74 228. 2174-75 229. 2175-76 230. 2176-77 231. 2177-78 232. 2178-79 233. 2179-80 234. 2180-81 235. 2181-82 236. 2182-83 237. 2183-84 238. 2184-85 239. 2185-86 240. 2186-87 241. 2187-88 242. 2188-89 243. 2189-90 244. 2190-91 245. 2191-92 246. 2192-93 247. 2193-94 248. 2194-95 249. 2195-96 250. 2196-97 251. 2197-98 252. 2198-99 253. 2199-00 254. 2200-01 255. 2201-02 256. 2202-03 257. 2203-04 258. 2204-05 259. 2205-06 260. 2206-07 261. 2207-08 262. 2208-09 263. 2209-10 264. 2210-11 265. 2211-12 266. 2212-13 267. 2213-14 268. 2214-15 269. 2215-16 270. 2216-17 271. 2217-18 272. 2218-19 273. 2219-20 274. 2220-21 275. 2221-22 276. 2222-23 277. 2223-24 278. 2224-25 279. 2225-26 280. 2226-27 281. 2227-28 282. 2228-29 283. 2229-30 284. 2230-31 285. 2231-32 286. 2232-33 287. 2233-34 288. 2234-35 289. 2235-36 290. 2236-37 291. 2237-38 292. 2238-39 293. 2239-40 294. 2240-41 295. 2241-42 296. 2242-43 297. 2243-44 298. 2244-45 299. 2245-46 300. 2246-47 301. 2247-48 302. 2248-49 303. 2249-50 304. 2250-51 305. 2251-52 306. 2252-53 307. 2253-54 308. 2254-55 309. 2255-56 310. 2256-57 311. 2257-58 312. 2258-59 313. 2259-60 314. 2260-61 315. 2261-62 316. 2262-63 317. 2263-64 318. 2264-65 319. 2265-66 320. 2266-67 321. 2267-68 322. 2268-69 323. 2269-70

“मूर्ति सौ और लियोन की दृष्टि को ले जाते हुए एम्मा सार्तों—
“देगने हो उधर। भागने समय की टिच-टिक के साथ तीर-जमान लिये
आप सेल कर रहे हैं।”

लियोन गिलखिला कर हँस पड़ता। सारा कमरा जैसे फूलों में भर
जाता था। फूल मरभरा सचलते थे विदा के समय। लियोन के मुरझाते
मुँह से निकलता—एम्मा !”

“लियोन !” एम्मा के मुँह से निकलकर अस्फुट ध्वनि कमरे में
बस जाती। आज का वियोग वक्त के मिलन का मूल परम्परा निर-
धरने को सम्मानता। बीच में दोनों थे अन्तर था। दूर रहने पर भी
सा बना रहता था, पास आने पर भी इन्ने दूर नहीं भिन्न लग सकता
था। वह अन्तर था काम का—जान्स के काम का, ज्यार जैसे मानोदों
के चक में उतरकर मो रह गया था। दोनों को दिखाना था शीम हो
बढ़ पूरा हो जायेगा। इनके साथ जब कभी भी दोनों मिलते। जान्स का
मिलन नहीं होता। जान्स के पिता से प्राप्त सम्मानका पूर्ण की इमान
जान्स का आधार नहीं है। उसकी जान के हठ जाने पर ही जान्स का
गौर होम सम्मान हैता हाजी। संभव से सब भवने-भावने में दूर,
गिर दीपन के इन साधारण दिखान मिलन में कोई भी उर्ध्व दृष्टि
नहीं रह सकता।

पर लीडने पर एम्मा ने क्या को हृदय में लगाकर मूल पर १५१।
जब तक धर्म के धर्म सत्यता पर सब मान्य एम्मा के हृदय में सत्यता
रहा रहा था। जैसे वह धर्म की दूर भिन्न सत्यता, वह ही लीडने
का कोष्ठों के बीच उन्हें हों दिख जाया कर। जान्स के लीडने में लीडने
हुनिता में सब धर्म का लीडने में, लीडने का लीडने कर सब दूर लीडने में

प्रत्यक्ष करती थी, उस समय एम्मा का ध्यान उसकी ओर आती होता था। बाधाहीन होकर बर्था फिर अपनी दुनिया में घुटना के चलने लगती थी।

तटस्थता का यह रूप अनायास ही इस बार दूर हो गया। एम्मा बर्था के खेल में हाथ बँटाने लगी। नये-नये खेलों का बर्था के तीर में प्रवेश हुआ। सबसे ऊपर प्रधान रहा तीर-कमानों का खेल। एम्मा दर्जन तीर-कमान एम्मा ने उसके लिए बनवा दिये थे। छोटे-छोटे हाथों में बर्था उन्हें सँभालती थी। चार्ल्स भी सामने होता था और एम्मा भी। पास जाकर एम्मा निराना साधना बताती थी। दूर खड़े रहकर फिर तीर छोड़ने के लिए कहती थी। बर्था तीर छोड़ती थी। आगे न बढ़कर तीर-कमान की डोरी में उलझकर रह जाता था। देखा चार्ल्स सन्तोष का माँस लेता, निशाने को देखाकर उत्सन्न हुई पलकें दूर हो जाती—फिर ग्विनग्विन्ता कर हँस पड़ता। बर्था भी मुँहा में नाचकर तीर-कमान फेंक देती थी।

(२९)

टूटी टोंगी को मीठा करने में चार्ल्स इतना अभ्यस्त नहीं हुआ था जितना कि कागज की नाव बनाने में। अन्वयार के रस्ती कागज के टुकड़े गुल मिलाता था। बाद में रंगीन और फलदार कागज लगाता था। छोटी और बड़ी, जितनी ही तरह की नावें उसने बनाईं। अपने तीर-कमानों के छोड़कर बर्था कागज की नावें भी बनाती थी। चार्ल्स की मदद चला जाता तो बर्था उसकी प्रशंसा करता था। वह अपने दो सड़क के नाव बनाना शुरू करता। पहले तो

दब लाकर नाव को उसमें छोड़ देता । नाव तेरने लगती । बधा की
 प्राँसें गिल उठती । ताली बजाकर वह अपनी प्रमत्तता प्रकट करती ।
 फिर भागती हुई जाती एम्मा के पास । प्रञ्जल परस्पर एम्मा से
 भी घर्माट लाती । बर्धा को लेकर चान्स और एम्मा, दोनों में प्रति
 द्वन्द्विता चलती थी । दब में तेरती नाव को छोड़ भागकर एम्मा भिगो
 देती । बर्धा भी इसमें योग देती थी । दोनों हाथों में पानी उछालता
 उसे बड़ा अच्छा लगता था । चान्स नाना करता रहता, एम्मा को
 भी रोक्ने का प्रयत्न करता और बर्धा को भी । गली फिर भी उद्वलता
 रहता । नाथ भीगकर गल जाती । तेरने के लिए पानी भी दर में नहीं
 बच रहता । गली हुई नाव को खूबो धरती पर फेंक चान्स दोनों में
 छुट्टी कर लेता । बर्धा को यह अच्छा नहीं लगता था । बर्धा बह दब
 को देखाती थी, कभी गली हुई नाव को, इन दोनों के बड़ा कर चान्स
 में मुँह को ।

बर्धा का हाथ पकड़कर एम्मा अपने दात स्थान लेती । मुसमुस्से
 हुए फिर उमंगे करती । 'गुनगरी तोर-बसाग बर्धा है, बर्धा है'

एम्मा की यह गुनगारी पभी बर्धा बर्धा की कानों में खँदू का
 देती थी । चान्स का खँदर फिर पभी बर्धा की बरस देता था । पभी-
 पभी यह फिर भी उमंगे थी । भागती हुई चान्स और भागकर ले
 खाती । तिलकाल फिर एम्मा । फिर चान्स ने एक भर बड़ी दौड़
 भी लगा, पभी पम्पन रों, दोनों के ही पम्पनर बह गला । एम्मा
 बर्धा... एम्मा ने जो दो पम्पनर को कोने, एम्मा बह है । पम्पनर

अनी में बह पम्पनर बर्धा... एम्मा बर्धा, दो मुँह में दो
 बर्धा देते । एम्मा बर्धा बर्धा बर्धा, बर्धा में बर्धा बर्धा देते

वर्या को लेकर जीवन का अभिसार चलने लगा । एम्मा और चार्ल्स, दोनों एक-दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी बन गये थे । अनेक रूप धारण करके यह प्रतिद्वन्द्विता सामने आती थी । वर्या किसी दिन उदास दिखती पड़ती थी । इस उदासी ने चार्ल्स और एम्मा, दोनों में से किसीमें अधिक चिन्तित कर दिया है, यह जानना मुश्किल हो जाता । चार्ल्स अपनी डाक्टररी की किताबों को खोलकर नुस्खे देगने बैठ जाता था । दवाइयें तैयार करके भी वह लाता । एम्मा दवाइयों का गिलास चार्ल्स के हाथ में छीन कर फेंक देती । कहती—डाक्टररी क्या पढ़ ली है, चले है बात-बात में दवाइयाँ लेकर । वर्या को दवाइयों की आदत में नर्क डालने दूँगी ?”

एक दिन वर्या की तबीयत ज्यादा खराब हो गई । एम्मा वर्या और उसके रोग को घेरकर बैठ गई । चार्ल्स वर्या के रोग की परीक्षा करना चाहता था, लेकिन एम्मा ने उसे पास नहीं फटाने दिया । एम्मा कमरे में थी, चार्ल्स दरवाजे पर खड़ा था । कमरे में अन्दर पाँव रखने का साहस उसे नहीं होता था । कमरे को आँदना जाने भी उसने नहीं बनना था । खोखे में अपने अल्लिन का चौपट की देक दिये बंद खड़ा था, खड़ा ही रहा ।

एम्मा को बुरा बुरा लगा । भुँकताकर वाली— वर्या खड़े होकर क्या कर रहे हो ? किसी डाक्टर को बुलाने भी क्या मैं ही जाऊँगी ?

वर्या को अच्युत होने देर नहीं लगी । एम्मा ने चार्ल्स से कहा — “अच्युत होने में वर्या का खौफ देना तो उसके अन्दर से ही निकलने लगा ।”

चार्ल्स ने कुछ नहीं कहा । रोग के बाद रोग की छाया अच्युत

चालीस के सामने भी आर्थिक समस्या थी, छःमा के सामने भी । समस्याएँ एक होते हुए भी दिशाएँ दाना की भिन्न थीं । इस भिन्नता का कुछ-कुछ आभास दोनों को ही मिल चुका था, लेकिन इतना नहीं कि विरोध हो जाय । इसका एक कारण यह भी था कि विरोधी मन्त्र्य बर्षा के भविष्य से जितना ग्राहित था, उतना वर्तमान से नहीं । वर्तमान के सामने आने पर ही विरोध मित्र उठाता था— यहाँ तक कि नरिष्य और अतीत को भी अपने साथ घसीट लाता था ।

जादों के दिन आ रहे थे । बर्षा के पास गरम कपड़े नहीं थे । एम्मा का बटुआ भी ठरस हो रहा था । कई दिन तक एम्मा भीतर ही भीतर घुमड़ती रही । किसी नीति के लिए भी वह चालीस पर निर्भर नहीं रहना चाहती थी । जब नहीं रहा गगन गव सोली—“बर्षा से रिवाज के लिए पैसा जोड़ने की तुम्हें निम्ता है और फिर उसे खरना ही नहीं है !”

“त्यों, क्या होगा ?” पालन से पूछा ।

“हुआ कुछ भी नहीं । वही गोपनी है कि रिवाज की पैनी लगने से बाद पगल कुछ भी नहीं बन । इस में क्या लिखी है ?”

चालीस रणित हो उठा । पालन—“क्यों, क्या हुआ है बर्षा को ? बर्षा क्यों नहीं ?”

“माला था था है कीन गरम बर्षा उन्हें गरम था भी नहीं, एम्मा का गरम लिखित लिख से बर्षा, “रिवाज की पैनी के गरम है बर्षा के गरम था था था ।”

कीन कीन था है गरम के गरम, बर्षा गरम लिखित लिख । पालन मुसका रहा । वह बर्षा के गरम था था था ।

मैं, एक दूसरे की ओर देखे बिना, जब तक चलते थे, साईं अलक्षित रहती थी। आसने सामने आसिं आने पर दिग्गई देती थी। एक दूसरे ने टकराकर दृष्टि त्वाई के उगारकर रख देती थी। सुदूर स्थित उज्ज्वल भविष्य भी उन्नी से जा पड़ता था।

एम्मा ने चार्ल्स की प्रार देगना बन्द कर दिया था चार्ल्स ने एम्मा की ओर। देगते हुए भी दोनों एक-दूसरे को देगने से इनकार कर देते थे। जो कहना चाहिए, उसे थं कह नहीं पाते थे, जो न कहना चाहिए, वही सबसे पहले मुँह से निकलता था। 'हाँ' उनके शिष्ट 'नहीं' हो गई थी। 'नहीं' ने 'हाँ' का रूप धारण कर लिया था। होते होते ऐसी स्थिति भी आगई, आचरण के अखाने चाकर थे निराचरण हो उठते, निराचरण होने पर मालूम होता, धय ठीक है। निर्लज्जता ही लज्जा का घण्ट बन गई थी।

इस घेपट में आचरण की जमी नहीं थी। सभी उन्ने कागे चीज मेंलाना चाहते थे—चाई दमेनिय, कोई सुतकर। एक गीता दूर हो कर बज पाते थे। पास आने पर वे दूर भागते थे, दूर रहने का फल घाना चाहते थे। दूर, छेगे भी थे, जो दूर रहकर उन्नी साधन आचरण करते थे। एक दुसरे ने एम्मा को निरी होना से निचलो देन निकल। भागे बन्दकर नहीं से ली। आचरण में दल आचरण आचरण रहे—
"आचरणे मुना है"

"मुना है" आचरण में दल।

"दल मुना" आचरण आचरण उन्ने होना आचरण का मुना है, आचरण। आचरण, आचरण आचरण आचरण आचरण है। आचरण आचरण आचरण आचरण है। आचरण आचरण आचरण आचरण है। आचरण आचरण आचरण आचरण है।

गोटे ठपे और माँगपट्टी में दिन बिनानेवाली युवतियाँ भी उन पर जैसे दृष्टी पड़ती हैं ।”

दूकान मालिक का जीवन भी अब प्रशस्त हो गया था । नाग में उपायनत डाक्टर ने जैसे उसी को बर लिया था । जो कोई भी आता, उसी के सामान उस सत्य का स्पष्ट कर रखता । उपेक्षित डाक्टरी की स्थिति दयनीय दशा है । गड है, किस प्रकार लोगों का उस पर से निरासा उठता जाता है, व्यापक हृदय में सशब्द वह व्यक्त करना । डाक्टरों का अन्धश्रुता भाव इतिहास उसने तैयार कर लिया था । का' उसने क्रम लिया । कम-कम न उसे पाला-पासा, शैशव को पार कर कित प्रारंभ यह इस अवस्था का प्राप्त हुई, पूरा चित्र खींचकर वह सामने रख देता था । बाद में फिर कम तरह से, किस-किस के समर्थ में उगम में अक्षर गायाय गयी, मुख्यतः परिवार के रूप में किन किन अवस्थाओं में यह सब । यह आठ, डाक्टरी के इतिहास में यह सब भी आ जाता था । वह उन्माद और आवण से इस इतिहास को वह दोहराता था । उनगोनर उसका स्वर तब ही चलता, दिशा विशेष के आ जाने पर वह स्तब्धता उठता । अयाग्य और बच्चे शर्मा ने डाक्टरी की जा खोज लहराया, बिना समझे ब्रूक उसके दामन पर जो हाथ डाला है वह उन्माद बाधण नर्तक होता था । वह कहता—“कन के घोड़े, जने के डाक्टर जान” डाक्टरी न दृष्ट, बसों का लेल हो गया । पुरानी से ही उन्माद कम डाक्टरी का न देगा, वे भी आजकल डाक्टर ही देना शुरू हैं ।

उन्माद का यह दृष्ट बच्चे से । आगे मात्र नई अन्माद शक्ति की एक तरह से उन्माद का दृष्ट । एक का नाम उसने नेत्रों के दृष्ट था ।

दुर्गो का रुमो, तीसरे का नागमन देख । लड़कियाँ मभा दिक्कटाग्या
मे नीचे कोई न थी । इतिहास को टाँगान दोहान वह देखता
नेपोलियन और रुमो पास में आ गये हुए हैं । अकस्मात् की हाहालत,
को एक क्षण के लिए स्थगितकर उनमें आरंभ कर भूमना — वह
देखो सब निर पत्र ही चढ़े रहने हैं, जाग्रत यहाँ से ।

नेपोलियन और रुमो अपनी भा के पास चले जाते । दाता के घरने
आचित में विवाह कर भा करने पति का तीनों नजरा में देखने जाती ।
पति ने वह नाराज थी । नागर्जी का कागस भा अकस्मात् । चौबीस
गले उगो का बगान मुनेने-मुनेने उसने कान पर धरे थे । इतिहास
के पाठ में कभी कभी गाथा बनकर भी रह आ उपस्थित होती थी । उसे
लक्ष्यकर दुर्गम-भातिक नारा—देखो भाग्यो, का वरद ने ही
अकस्मात् का रह जान का गया है । अकस्मात् ने ही काले रास्ते के
वे चला होती हैं ।

पति का के जाना ही आश्रय न चाहती था । मित्रता एक — तीस
कोई का है, पाप नीचे नीचे रखे, का यह नही कहता भी । अकस्मात्
की इस तरह कीव कागसे केत वह गहरा हो जाती । दुर्गम-भातिक
वह हुआ का कहता था, अकस्मात् का अकस्मात् ने ही । अकस्मात् के अकस्मात्
मित्री का अकस्मात् की गरीबी कभी जाने हुए की । अकस्मात् ने
अकस्मात् के इस भाव । अकस्मात् अकस्मात् जान का कहता ।

दुर्गम-भातिक अकस्मात् के अकस्मात् के अकस्मात् का कहता था । अकस्मात्
उसे अकस्मात् के अकस्मात् अकस्मात् का । अकस्मात् का अकस्मात् अकस्मात्
अकस्मात् अकस्मात् का, अकस्मात् का अकस्मात् का । अकस्मात् का
अकस्मात् के अकस्मात् के अकस्मात् अकस्मात् का । अकस्मात् का
अकस्मात् के अकस्मात् के अकस्मात् अकस्मात् का ।

दिवा । वह कह रहा था—'अच्छी तरह जानना है न उसे—एम्मा । जो
दामी की । बड़ी चष्ट है वह ।'

मुनकर नियोन का हृदय कुछ हलसा हुआ। अग्ले में जाकर गन्तोष की मौस बह लेना चाहता था। लेकिन दूषान मालिक ने उसका साथ न छोड़ा। नियोन के महीन का दूर करने के प्रयत्न वह करने लगा। अर्थात् हास्कर नियोन ने अपने का दूषान-मालिक के हाथों में सार दिया।

इसके दिन यह इरान-मालिक को बिना वन्दे गया। कुछ देर चल-
कर इरान-मालिक एक जगह ठिठक गया। योना—'हाँ' फाँट लिनीनी
की दुकान भी है ?'

जिनो ने दूषण पर चर्खा किया। कुछ लोगों ने इसीसे बचे।
इसके बाद दूषण मॉरिस ने कहा—“मेरे मित्रों की माँ के लिए एक
कदमोर्दी खीर लीजें। मेरा घर कुछ ही मिनटों में।”

दिए जाने के समय दूध-भाण्डों में मिश्रित की प्रत्येक मात्रा में
लिने। अन्तर्गत का नमूना भण्डार में मिश्रित करने के लिये
कराया।

(22)

१. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

एम्मा का अपना कुछ नशा था गया था लेकिन उन अपने-आप
की कमी नहीं थी। सभी उसे अपना चाहते थे, पैसे दान देने
गमन, जब तक उन्हें अपना चाहते थे। निरीह पर उन्हें सारी
अधिक भरोसा था। उसके पास जो एम्मा जाती थी, वह पैसे दान
जाता था। पागल एम्मा के दान दान देने पर। एम्मा दूसरे-दूसरे
मददगारों जाती थी। वह एम्मा के घर के चारों ओर फैलाता करता
था। गिनती ही था एम्मा को वह दान देने का अपना भिन्न, एम्मा
के पैसे की प्राप्ति मिलने पर वह बड़ी खुश हो जाती थी प्राप्ति करने
जाता था।

[illegible][illegible]

में ले लिया। घर आकर चार्ल्स ने बर्था की गृहस्थी सना दी। गुड्डी गुडिया को व्याह की तैयारी होने लगी। गुड्डी गुडिया में अन्य जिनानों में परकर गड़ा किया गया था। बर्था की कुछ समझ में नहीं आ रहा था। आश्चर्य में वह देख रही थी, अब आगे क्या होनेवाला है ?

उस समय, एकाएक, एम्मा ने घर में प्रवेश किया। बर्था ने अपने से दूर कर देने पर भी एम्मा उसे भूल नहीं सकती थी। अतः बर्था को दूर करना वह चाहती भी नहीं थी। दूर करना चाहती थी उसे वह चार्ल्स से। घर में आकर उसने देखा—एक आर मिट्टी का टेर पड़ा है, सूखी टहनियाँ हैं और मुरझाये हुए फूल उगे लगे हैं। अच्छे लोगों ने अलग जाने से उन्हें गढ़ दिया है। पागली गुड्डी गुडिया का व्याह रचाया जा रहा है। गुड्डी-गुडिया में अति दिमाई दिव चार्ल्स और बर्था। एम्मा का शरीर काँप उठा, आँगे लान ले आया। नीति मर उससे में निजा—‘कन्ट कर य म।’ दीन हा वर मर के साथ कि सुनाए प।—‘अपनी ही पत्नी के साथ मर

एम्मा की किं तगर टुट गई। जीवन के निम अम के तदय म लगाने उल्ले म कुछ मरा था उस भी गिराकर रह गया।

(३०)

मामलक मरगा मरगी मर हा अरम ही मी प्रगिया मर मर
मर मरगा मरगा मरगा मर मरगा मरगा मर मरगा मरगा मर
मर मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा
मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा
मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा
मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा
मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा मरगा

मौ न कहना चाहिए, वही जम्मा के मुँह में भरना इन्करा सद
वह यहाँ खड़ी न रहो । बिलीन होने हुए उन्कर आकाश का नाच न
आँखें पीछा करती न गई ।

प्राणोद-मोक्षदय स्वर्गने सम्पेदनगीत हृदय का जि-लम्मा क मार
नगे रहते थे। पटलेनागा मझान श्वर नाना रहा था। लम्मा उन
बसान कपया पागी रहती था। नोटो रो चाल्य क तामने ले जात
श्वर यह नदी केती थी। चाल्य का त्याग हाटन क कम्पना-गता न
ले लिया था। गत चान नि-गान्या का नी, डा हाथ से ब्याग
पागती। इतनी बड़ा भोग्य उन्ने पहले कभी नदा सिन्हा था। प्राण-यद
ने उनगी प्राणि कटी रह गई। लम्मा ने कहा—“येन कय रा हा।
जाओ, मोन करो।”

कितन वक्त निधर में एम्मा जरा-बारी है, या इन मित्रियों के जल
निग था। एम्मा जरा-बारी की भूल जरा-बारी भी सेवन में नहीं।
उन्ने भीतर केवल एम्मा की एक हस्त के लिए दूसर हस्तों को
भा। जिन वस्तु, जिन दूसर हस्तों के लिए दूसर हस्तों के लिए है।

[illegible]
$$\frac{d}{dt} \left(\frac{\partial L}{\partial \dot{x}} \right) = \frac{\partial L}{\partial x}$$

चाहती थी, उसके पाँव की आहट से धवराकर धूल अलग हो जाती थी।

सब कुछ भटककर एम्मा फिर सड़ी हो जाती थी। रोया पत्र अपने पाँव पर खड़ा होकर चलने लगता था। देरानेवाले हँसने पर, इशारे करते थे, कहनी-अनकहनी बातें उनके मुँह से निकलती थीं। रोये पन्ने की गति में कोई अन्तर इससे नहीं पड़ता था। जो थोड़ा सा अन्तर होता भी था, होटल के कर्मचारियों की अभिनन्दना और भिगारियों की आशाभरी आँखों उसे सँभाल लेती थी। रोये पन्ने का मार्ग और भी प्रशस्त हो उठता था।

हाथ के तग हों जाने पर प्रशस्त मार्ग तग हो चला। होटल के कर्मचारियों की अभिनन्दना गिमकने लगी। एम्मा के सामने आने पर पहलेवाले उन्माद का प्रदर्शन अब नहीं होता था। एम्मा देखती थी, उन्माद का स्थान उपेक्षा लेती जा रही है। भिगारियों की आँखों, माँ की आँख लीट जाने पर भी, उपेक्षा में नहीं भर गई थी, कृपणता का भार उनमें था। होटल की उपेक्षा को भिगारियों की कृतज्ञ आँखों में सँभाल लिया। लेकिन एम्मा इस देख का स्वागत नहीं ले सकी। उन्हें छोड़, पटुची बड़ प्रहरी की गोद में—उसने फूलों में भंगना शुरू किया। छिपे सूर्य की लाली का दोनों बाँहें पसारकर अपने हृदय में भंगने का प्रयत्न करने लगी।

एम्मा के सामने प्रेमी त्रिवेण का चित्र उसकी आँखों के सामने लगे हो गया। कलियुग के सुन्दर उसने अपने दाँतों में गोंग सिंग। कलियुग में 'दुल' का एक देव त्रिवेण की ओर बढ़ जा रहा है।

अब वह अपने घर लौटने के लिए निकल रहा है। एम्मा के सामने

गो । मुँह पर विचित्र सौन्दर्य खेल रहा था । सुग्घमाय ने एग्मा को वह देखना रहा ।

एस्मा आगे बगी। तियोन के पास जाकर बैठ गई। तियोन ने आगे धन्य कर ली। उने विश्वास नहीं होगा था कि एस्मा ही नाम बेटी है।

लियोन ने थिरे और एरुन्ने ने उनसे वाली से मरगी है।
लियो ने दो नागों ने विभक्त करते हुए एम्मा ने कहा—“दुस मुक्तो
नाराज हो गये हो लियोन !”

लियोन ने चौककर धीमे खींची । धम्मा के मुँह की ओर खींच-
 डेगाया रहा । उगले कुट्ट बढ़ते नहीं बना । धम्मा ने निः शब्द— 'हट्टे'
 नेत्र धम्मा इस गो नहीं मानूँम हुआ । '

“नहीं जाना”—मर्दाने कुछ भी पूछा न मगर उसे निरीक्षण करने
हो गया ।

[illegible][illegible][illegible]

सम्भव-असम्भव, अनेक प्रकार की कल्पनाएँ वह करने लगता। पर म अपने को बन्द कर जाग्रत स्वप्न देखने का प्रयत्न वह करता था। कभी कभी इसमें उसे सफलता भी मिल जाती थी। वह देखता था, एम्मा का कमरा प्रकाश से जगमगा उठा है। अपने हृदय में समाकर एम्मा उन ले गई है। फूलों का शृङ्गार उसने किया है। वह स्वयं भी एम्मा के शृङ्गार का जैसे एक फूल बन गया है।

फिर ऐसा एक आशङ्कित हो उठता। मधुर स्वप्न दुःस्वप्न में बदल जाता। मा ने आकर एम्मा का शृङ्गार नोच डाला है। बिगड़े फूलों को अपने पाँव में मा रौंद रही है। कमरे का प्रकाश अन्धकार बन गया है। एम्मा इस अन्धकार में ग़ोबर रह गई है। उसका कुछ भी पता नहीं चलता।

कभी-कभी वह देखता—एम्मा का कमरा पहाड़ियों में गिरा हुआ तब मार्ग बन गया है। दूर तक ऊँची पहाड़ियाँ चली गई हैं। न मार्ग का अन्त दिखाई पड़ता है, न पहाड़ियों का। अंधेरा ही-अंधेरा दिखाई पड़ता है। हाथ पकड़कर नहीं, घसीटकर एम्मा उसे लिये जा रही है। बिगड़ना न चाहकर भी वह घिसट रहा है। उसका अन्त क्षण दिखाई दे रहा है।

एकान्त वह करता उठता। दुःस्वप्न का भयभीत चित्र उसके सम्मुख रह अपनी छांव छाड़कर चला जाता। आँसू का सारा स्रोत स्वप्न देखने का फिर प्रयत्न करता। मरना न होने का वह दुःस्वप्न ही स्वप्न को ही फिर से मरने का प्रयत्न करता—एम्मा को मारने की कोशिश कर रहा है। अन्त दिनों में नहीं, कुछ दिनों में एम्मा को मारने का प्रयत्न करता है। मार्ग ही ऐसा है जिस पर चलना नहीं प

सकता—उदम-उदम पर दोहरें गायन गित पढ़ना होता है । चान्दनी
कलना करता—या ही नहीं, एम्मा भो दोहर गायन गित पढ़ो है । निर
भी दोनो चले जा रहे हैं—चले जा रहे हैं ।

आँखें खोलकर सोने का पाल्म को अन्धास हो गया था । सन्नि-
 यद करके सोने का उमे ग्राह्य भी नहीं होता था । अन्धकार में उमे गम
 मानूस होता था । इन भय को दूर करने के लिए आस्ट्रेलियन हृदय में
 यद अर्न्त आँखें यद करके देखता था । निज हृन्त ही की तरह आँखें
 खोल देता । उसे जान पड़ता था—जैसे यह किसी अन्त ग्राह्य में
 घुसा जा रहा है ।

एम्मा को अपने में तद्रथ करके देखने का भी करने प्रयत्न किया। वह सोचता था—एम्मा दिखी एक ही होकर नहीं रह सकती। शास्त्रियों को प्रतीतिदार करने के लिए ही उसने जन्म लिया है। वह सुखी है। सुखी होने हुए भी किसी की नहीं है। दुःखकर ही उसे अपनाता या गमता है।

[illegible]
$$f(x) = \frac{1}{2} \left(\frac{1}{x} + \frac{1}{x^2} \right) = \frac{1}{2} \left(x^{-1} + x^{-2} \right)$$

मिथी । गात्रात भर नागजर वर पत्र लक्ष्मी थी, लक्ष्मी लक्ष्मी वर
 दालती थी । कई दिन के अन्तर अन्तिम से व रत उर पैरुन वर
 मरी । सुनो जो, लक्ष्मी अन्तिम लक्ष्मी व उर उर लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी ।

पक्षों का विवेक न कर सका मैं था मैं कहूँ जाना लोग दिवा ।
मालूम हो कह कर भी अपने कर्मों में उर चले गयी । दार विवेक
उसे उर मगल था । उर में प्रविष्ट रहने के लाल था । वह चरनी की
मिथुन में उमरा समाना लेते ही दार कर सम्मानन न हो । कभी
कभी कह रहा भी चाहती था कि विवेक का इससे पक्ष न मिले । निमी
रह, कहीं मार्ग में ही गैरमर रह जाँ ।

[illegible]

उलटी दिशा में जा रहा है। उसी के सहारे प्रॉनोट-महादय लेन लेन का काम करने थे। उनके मैक की जुड़ों भी उसी के पास थी। तमर का देगने हुए भेद का आकार-प्रकार बहुत बढ़ा था। चाँदा फ रंगे भी उसमें समाये थे ग्रीर सोने की झज्जरें भी। पाँच के गहने भा उभर म ये और गले का हार भी। छुरे दिनों में देहातियों के गहने गहना का अपने में समाकर नये रूप से भी यही नैज उगलती थी।

सादी ने अधिक गिट्ट के अने छात्रपुत्रों को नेत्र में रखने का काम प्रोन्नत-महोदय लाहरी को दे देते। कुशी की संभालकर लाहरी मात्र के पास पहुँचती। कुशी की धुमान में अपना साग शरीर उमंग पुनः देना पड़ता था। गोत्र लेने पर पत्नी शर्मा ने नेत्र की याद लेने के लिए हाँसे वह गहरी रह जाती थी।

मैंने अपनी ही झड़ार के साथ नज़्दगी की ओर भरोसा कर लिया
 प्रीति-महोत्सव करते—“होगा के दिलों में बेचारी को सहाय होना,
 इसके सब भरोसे परले जाने। मोटे पैसा न था जो इसे अपनी बोली में
 उलामे। तब वह इतनी दुर्गि नहीं थी। दुर्गि होने का इसे ज़रूरत नहीं
 मिला। दुर्गियों ने दुर्गों को जो इसे देना दिया था। वह जो कहा कि
 सारा मेरे नाम में दुर्गों का। मरी की कीमत जानना है, इस वृत्ति
 की को दुर्ग-महोत्सव की जो मेरे दुर्गों का है।”

[illegible]

कुछ भी एम्मा की समझ में नहीं आ रहा था। लियान, बुलावा और चार्ल्स—ये तीनों ही नहीं, चारों ओर के मकान भी एक दूसरे में उलझकर अस्पष्ट हो चले थे। स्पष्ट करना चाहने पर भी किसी चीज को स्पष्ट करके वह नहीं देख पा रही थी। बन्ती में नहीं, जेम्स एक भूल-भुलैया में वह चल रही थी। प्रत्येक मोड़ पर लगता, बाहर निकलने का दरवाजा आगया है। आगे बढ़ने पर मालूम होता, दरवाजा नहीं, एक और अन्धी गली उसके सामने मुँह बागे खड़ी है।

भय से काँपकर एम्मा ने आँगि बन्द कर ली। सूर्य भी आँगों लाली को समेटकर बादलों में छिप चला था। एक मन्त्रित श्रृंग ने सम्पूर्ण बग्गी को अपने मन्त्रित आवरण में ले लिया था। एम्मा को आँगों आँगों के सामने एक चक्र-सा घमटा जान पड़ा। लियोन, चार्ल्स और बुचनर इस चक्र में एकाकार हो गये थे। धीरे-धीरे चक्र बगार हो होता हुआ विगिन हो गया। उगड़ी गल में एम्मा का मन्त्रित था भी नूननना • ग था।

[illegible]

नामक पुस्तक प्राप्त हुई थी। दूरान-मालिक की नजर पढ़ने के बाद पुस्तक उसके हाथों में न रह सकी। दूरान-मालिक के पास में पुस्तक फिर चार्ल्स के हाथों में पहुँच गई थी। एम्मा ने मिलकर वह फिर उस पुस्तक को पाना चाहता था। उसे विश्वास था, एम्मा इनकार नहीं करेगी।

एम्मा के सामने आने पर उसने कुछ कहते नहा बना। एकदम एम्मा के मुँह की ओर धा देगला गया। एम्मा अनमयी में लगी गीशियों का देख रही थी। एक गीशियाँ के लेवल पर उगरी आँखें टिक गई—बाधोंलिक एलि। नौर ने फिर उसने कहा—“इस गीशियाँ को निरात दो।”

नौर कुछ रुक गया। रोना—“दूरान-मालिक नहीं है। उसके आने पर मैं खुद भावने पर मैं इसे पढ़ना दूँगा।”

“नहीं, मिलो मे कुछ कहने की इच्छा नहीं”, एम्मा ने कहा, “आओ, यह गीशियाँ मुझे दो। किसी ने कुछ नहीं कहा होगा।”

निराद और प्रिय नामक पुस्तक उसकी आँखों के सामने थी। वह उसे पाने में कठिनाई नहीं होती। गीशियाँ उठकर उसी एम्मा को दे दी।

एम्मा का और आँखें। वह भी वह के ही था। एम्मा के नेत्रों में ऐसा भाव दृष्टि के लिये अच्छा था। एम्मा ने कहा—“कई लोग, जो कुछ मुझसे कह सकते हैं, मैं दूरान-मालिक के लिये इसे दे दूँगी।”

दूरान-मालिक ने कुछ कहा, एम्मा ने कहा—“मैं इसे दे दूँगी।” एम्मा ने कहा—“मैं इसे दे दूँगी।” एम्मा ने कहा—“मैं इसे दे दूँगी।”

जाने । मारी बली जैने उदासी में रो गई थी । सभी कुछ जैसे मग्न हो गया था । शव की नीरव यात्रा शुरू हुई । उमंगी निर्गुनिका भग्न न हो पाय, प्रत्येक पल को जैसे इस आराधना में खो लिया था । पवित्र भस्मी पर आगे बढ़ने के लिए नहीं, मानो पगधरि को ढाँके के लिए ही पद रोके थे । गङ्गा की तीर ही जेबल लज्जा ऐसी थी जिसकी लटकती इस निम्नस्थता को भद्र कर रही थी । चार्ज के जीवन की निम्नगिनी की तरह इस ताप पर भी वह उसका साथ दे रही थी ।

(39)

जाया के साथ साथ दुम्मा की मृत्यु ने एक दर्दनाक पर प्रौर माया
आशान बिना था । वह था दुष्मान-मादिरण का मौजरा । पियाय प्रौर
प्रेम की सपुन लपटा था दुम्मा की मृत्यु भीतर प्रहारा का दर्द
था । यह माया कह गया । दुम्मा की नारी, वह जेने इसी के जीवन की
मौज थी । दुम्मा की मृत्यु का सपुन मोन के दुर्मी पर बना गया था ।

[illegible][illegible][illegible]



नहीं दिला सका था कि यह उसका अपना रूप नहीं है। ऐसा करने पर भी उसे विरोध का ही सामना करना पड़ा। इसके अतिरिक्त उसका और कोई रूप हो सकता है, यह सोचना भी जैसे उनके लिए असम्भव हो उठा था।

जीवन के इस व्यग्र से भरी वस्ती को छोड़कर उसने सूने घर की शरण ली। यहाँ प्यार आशुदात्रों ने जैसे साथ छोड़ दिया था। घर के किराये आदि के बारे में उसने बात-चीत की थी। विरोध का झरा भी सामना नहीं करना पड़ा। सूने घर में बसने की जमीन तैयार करने के लिए उसे ध्यालोचना प्रणालोचना का सहारा भी नहीं लेना पड़ा। कहा गया—'नो गैंग में ग्राये दे देना। कुछ भी न दिया जाय तो भी बात रिगड़ेगी नहीं।

सूने घर में उमने डेरा जमा दिया। इस घर में अपने पहले जीवन की तुलना पर करने लगा। आनन्दक रूप की पड़ता दर सूने घर में गों गड़े। करने को हूँ हलका पार उन रीतु भी हूँ। घर में पार नितासर रा नया ही मय। यह घर पार ही हीतुम दिताई पता। आनन्द के घर में १२.००० य। १२.००० न आनन्द हलका ने भी उसे डेरा। १२.००० य। १२.००० न आनन्द हलका ने का न्याय पर १२.००० य। १२.००० न आनन्द हलका ने

शास्त्री का इतिहास तेज़र होने लगा । दूकान-मालिक बराबर साथ दे रहा था ।

(39)

डाक्टरों का इतिहास उपन्यास से भी आगे बढ़ चला। पाठकों ने उपन्यास के रूप में उन्हे लिया। डाक्टरी का आवरण नोटबुक जैसे अभिसारिका गमने का गर्द था। अभिसारिका को अपनाते कुछ दिवस भी छोटी थी, डाक्टरों को अपनाते में बसती कोई बाधा नहीं थी। निरुद्धाच प्रतीक पर में डाक्टरी ने प्रवेश किया। अभिसारिका का देवकर पर के दुजुर्ग नाक-भौं खिलोते थे। डाक्टरी को देवकर मुश होते थे। लड़का इतिहास का अप्रत्यक्ष रूप रहा है।

अभिचारिका के प्रेमियों की खलना समस्त नन्दर तीन में जाने
 गया था था था, नन्दर में जीवन की यह प्रतीति भी न जाने क्या चिह्नित
 हो गई थी, गोपनीय प्रेमियों के प्रेम के समर्थन के लिए वे सभी नहीं
 रही। प्रेमियों के प्रेम के समर्थन के लिए वे सभी नहीं
 के जीवन के लिए भी प्रेमियों के प्रेम के समर्थन के लिए वे सभी नहीं

[illegible]

किंगी उत्साही युवक ने उसे लेकर इतिहास बना डाला है। पूरा विवरण मालूम होते ही डाक्टरों का एक डेप्युटेशन दूकान-मालिक के पास भी पहुँच गया—भविष्य के अवाञ्छनीय आक्रमणों से डाक्टरी की रक्षा करने के लिए। लेकिन दूकान-मालिक टम-से-मम नहीं हुआ। उसने बात करने में ही इनकार कर दिया।

इसके बाद दूसरा तराजू गणनाया गया। व्यावसायिक प्रतिद्वन्द्विता में भाग देने के लिए एक एक करके तीन डाक्टर भेजे गये। लेकिन दूकान मालिक के लम्बे-नींदे साइनबोर्ड के सामने कोई जम न सका। चार्ल्स के बाद दूकान-मालिक ने ही जेने डाक्टरी पर अपना आधिपत्य जमा लिया था। जसकर यह अपनी दूकान पर बैठ गया था—और उसे अपने स्थान में टिकाने में सफल न हो सका !

